में अप्रिय विचार ही प्रकट करता और कहता कि स्त्री को पुरुष से कभी समानता नही की जा सकती।

वह जानता था कि अपने कटु अनुभवों के बल पर वह उस जाति को कुछ भी कह सकता था, पर उसी निम्न जाति के बिना वह कुछ दिनों तक भी न रह पाता। पुरुपों से वार्तालाप करते समय उसे एक अजीब उलझन का अनुभव होता, पर स्त्रियों के साथ रहने पर वह सहज ही घटों बातें किया करता और यदि उनके साथ वह चुप भी बैठा रहता, तो भी उसे काफी मज़ा आता। उसकी आकृति और उसके व्यवहार अथवा चरित्र में कुछ ऐसी विशेपता थी, जिससे स्त्रियाँ वरबस उसकी ओर आकर्पित हो जाती थीं। वह यह जानता था और स्वयं भी उनकी ओर किसी अज्ञात शक्ति से खिच जाता था।

अपने कई कटु अनुभवो से उसे ज्ञात हो गया था कि यद्यपि आरम्भ में इस प्रकार की घटनायें वडी सुंदर प्रतीत होती हैं, पर उनका अत अत्यन्त अप्रिय होता है। किसी भी भद्र पुरुप के लिये यह बात लागू होती थी, विशेप रूप से उन मास्को निवासियों के लिये जो दृढ़ प्रतिज्ञ नही है, जो अपने घर बसाये हुए हैं। पर जब कभी वह किसी सुन्दरी—मजेदार स्त्री-से मिलता, तो उसका सारा पूर्व ज्ञान हवा हो जाता और वह एक बार फिर जीवन का आनन्द लेने का निश्चय करता। उसे वह सब बहुत ही सहज और सुखद प्रतीत होता।

वह बगीचे में भोजन कर रहा था, कि चौडी किनारी वाला टोप पहिने हुये वह स्त्री धीरे धीरे उसकी ओर आकर पास ही एक मेज़ पर बैठ गई। उसकी भाव-भगी, चाल-ढाल, सभी से ऐसा प्रतीत होता था कि वह सभ्य थी, विवाहित थी और वह याल्टा पहली बार ही आई थी, और यह भी कि वह अकेली थी और कुछ ऊबी सी थी।

"याल्टा के एक दुश्चरित्र नगर होने के विपय में बहुत सी अफ-वाहे फैली हुई है, पर उनमें सत्य का उचित अश नही है। इन कथाओं को उन पुरुपों ने बनाया होगा, जिन्हे जीवन-पर्यन्त याल्टा आने का अवसर न मिल था," उसने सोचा "ऐसे पुरुपो को यदि पाप करने का अवसर मिले, तो वे वैसा करने से कभी न चूकेंगे।" यह वह जानता था। पर जब वह युवती उसके बगल वाली मेज़ पर, उससे एक-दो गज़ ही दूर बैठ गई, तो उसके मस्तिष्क में कुछ दूसरे ही विचार चक्कर लगाने

लगे। अपनी सहज विजयों का, पर्वतों की सुखद यात्रा
स्मरण हो आया और अचानक हा वह एक ऐसी अजनबी स
सम्बन्ध स्थापित करने का विचार करने लगा, जिसका व
न जानता था।

डीमीट्री ने छोटे कुत्ते को सकेत किया और जब कुत्ता
गया, तो उसने उसे अँगूठा दिखा दिया। कुत्ता भौंकने लग
फिर भी उसे अँगूठा दिखा रहा था।

युवती ने एक बार डीमीट्री की ओर देख कर आँखें नी

"वह काटेगा नहीं।" उसने कहा और वह लजा गई।

"क्या मैं इसे एक हड्डी दूँ?" और जब उसने
ढग से सिर हिलाया, तो उसने मज़े मे पूछा—"क्या आपको
बहुत दिन हो गये हैं?"

"लगभग पाँच दिन।"

"और मैं किसी प्रकार दूसरा सप्ताह व्यतीत कर रहा
वे कुछ समय तक चुप रहे।

"समय कितनी जल्दी बीतता है!" उसने कहा—"
सोच कर आश्चर्य होता है कि याल्टा कितना निस्सार नगर

"ऐसा कहने की तो लोगों की प्रकृति ही हो गई है
अथवा उहीड्रा ऐसे नगरों में आनन्दपूर्वक रहेंगे, पर याल्ट
कहने लगेंगे, 'कैसा निस्सार नगर है! यहाँ तो मन ही न
ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वे स्पेन मे ही आ रहे हों।"

वह मुस्कराई। फिर दोनों चुपचाप खाने लगे, जैसे
से बिलकुल अपरिचित हों, पर भोजन के पश्चात् वे साथ है
उनमें इस ढग से वार्तालाप होने लगा, जैसे उनकी
बहुत पुरानी हो। ऐसा प्रतीत होता था कि अचानक उन्
प्रसन्नता प्राप्त हो गई थी, और इससे उन्हें प्रयोजन न था
कह रहे थे, अथवा कहाँ जा रहे थे। चलते-चलते वे समुद्र
के विषय में वार्तालाप करने लगे। चन्द्र-ज्योत्स्न
ढंग से नाच रही थी। 'एक गर्म दिन के
होती है,' वे कह रहे थे।

मास्को से यहाँ आने का कारण बत

अभाग्य से बैंक में नौकरी करनी पडी थी। यह भी बताया कि किस प्रकार उसने एक 'आपेरा' मे गाने का निश्चय किया था, पर फिर यह सम्भव न हो सका, और यह भी कि क्यो उसके पास मास्को में दो घर थे । और उससे उसे पता चला कि वह पीटर्सबर्ग से आई थी, वहीं उसका जन्म हुआ था, पर विवाह स . में हुआ जहाँ वह दो मास से रह रही थी। और यह कि वह कम से कम, याल्टा में एक मास और ठहरेगी। इसके पश्चात् उसका पति उसे लेने आवेगा। वह उसे अपने पति का पेशा न बता सकी और अपनी जानकारी की कमी पर उसे स्वय आश्चर्य हुआ। गोमोव को यह भी पता चला कि उसका नाम अन्ना सेरगेयेवना था।

रात्रि में अपने कमरे में उसने उसके विषय में सोचा। दूसरे दिन वह किस प्रकार उससे मुलाकात करेगा, यह उसके चिंतन का मुख्य विषय था। उन्हे ऐसा करना ही था। सोते समय उसे ख्याल आया कि उसने अभी हाल ही में स्कूल छोडा था, और हाल ही में वह उसकी पुत्री की भाँति ही एक छात्रा थी। उसे स्मरण हो आया कि वह अत्यन्त लज्जाशील थी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि पहली बार ही वह अकेली रह रही थी और एक अजनबी से उसका इस प्रकार प्रथम वार्त्तालाप ही हुआ था। क्या वह नहीं जानती, उसने सोचा, कि जितने पुरुष उसके पीछे पडे थे, सबका ध्येय एक ही था। उसे उसकी पतली श्वेत गर्दन का ध्यान हो आया, उसकी सुन्दर भूरी आँखें भी नेत्रो के सम्मुख आ गईं। 'उसके विषय में मैं बिना दयार्द्र हुये नहीं रह सकता', उसने सोचा।

एक सप्ताह व्यतीत हो गया। बडा गर्म दिन था। कमरो में जैसे आग जलती और बाहर लू। दिन भर उसे प्यास लगती रही, बारबार वह अन्ना सेरगेयेवना से ठंडा शर्बत पीने का आग्रह करता।

संध्या समय, जब वायु स्निग्ध रहती, तो वे स्टीमर को किनारे तक आते देखते। कुछ लोग उपहार लिये हुये थे। अवश्य ही वे किसी का स्वागत करने आये थे। इन लोगो में याल्टा नगर की विशेषतायें स्पष्ट दिखाई पडती थीं अधेड युवतियाँ, भडकीले वस्त्र पहिने थीं और उनमें बहुत से फौज़ी जनरल थे।

समुद्र अशांत था। स्टीमर को आने में देर हो गई थी। किनारे

तक आने मे स्टीमर को काफी कठिनाई हुई। अन्ना सेरगेयेवना दूरबीन से स्टीमर से उतरनेवाले यात्रियों की ओर देख रही थी, जैसे वह अपने मित्रों की प्रतीक्षा कर रही हो, और जब वह गोमोव की ओर मुड़ी, तो उसके नेत्र चमक रहे थे। वह बोलती जा रही थी, और अचानक प्रश्न पूछने लगती थी, यद्यपि उसे स्मरण न रहता था कि उसने कुछ क्षण पूर्व क्या कहा था। भीड़ में उसकी दूरबीन खो गई।

जब भीड़ छंट गई, हवा कम हो गई, तो भी गोमोव और अन्ना इस प्रकार खड़े थे, जैसे वे स्टीमर से किसी के आने की प्रतीक्षा कर रहे हो। अन्ना सेरगेयेवना चुप थी। वह अपने फूलो को सूंघ रही थी, उसने गोमोव की ओर दृष्टि नही फेरी।

"सध्या के समय मौसम कुछ अच्छा हो गया है।" उसने कहा—"अब हम कहाँ जायेंगे ? कोई गाडी किराये पर की जाय ?"

उसने उत्तर नही दिया।

गोमोव उसकी ओर ध्यानपूर्वक देख रहा था। अचानक उसने उसे बाहुपाश में जकड़ लिया और उसके ओठों पर एक चुम्बन अंकित कर दिया। फूलो की नमी और सुगंध से उसके नेत्रों मे मोह छा गया था। फिर शीघ्र ही उसने चौंक कर चारों ओर दृष्टि फेरी। किसी ने उन्हे ऐसा करते देखा तो न था ?

"चलो हम तुम्हारे—" उसने धीरे से कहा और वे तेज़ी से चल पड़े।

उसका कमरा सुगन्ध से भरा था, जो उसने किसी जापानी दूकान से खरीदी थी। गोमोव ने उसकी ओर देख कर सोचा, "जीवन में कैसे आश्चर्यजनक अवसर मिलते हैं।" पूर्व की स्मृतियों के अंतर से उसे अच्छी औरतो का ध्यान आया, जो प्रेम में डूबी रहती थी, और चाहे उसके साथ उनको लीला क्षणिक ही क्यो न हो; पर वे इसके लिये सदा उसकी कृतज्ञ रहती थीं। उसने दूसरी स्त्रियो के विषय में भी सोचा—उसकी पत्नी की भाँति—जो प्रेम तो करती थी, पर उनके प्रेम में ओछापन था, उनके प्रेम में बनावटीपन था। वे कदाचित् घोषित करना चाहती थीं कि उनका व्यवहार प्रेम न होकर उससे कहीं अधिक आवश्यक वस्तु था। उन अल्प सम्यक सुन्दरियों का भी उसे ध्यान हो आया, जिनके नेत्रो मे अचानक ही जीवन के सारे सुख का पान करने की लालसा प्रज्ज्वलित हो उठती, और यद्यपि वे अपने यौवन की प्रथम बहार में न होतीं, तो भी उन लोगों मे दूसरो पर उद्दंडतापूर्ण

शासन करने की भावना का ह्रास न होता। ऐसी स्त्रियों के प्रति गोमोव शीघ्र ही उदासीन हो जाता, क्योंकि उनकी पकी हुई सुन्दरता उसके हृदय में घृणा का सचार करती।

पर यहाँ तो अनुभवहीन यौवन की लज्जाशीलता थी, स्वयं को दबाये रखने की भावना, उलझन और आश्चर्य का एक विशेप सम्मिश्रण, जैसे किसी ने अचानक द्वार पर कुडी खडखडाई हो। अन्ना सेरगेयेवना—खिलौना कुत्ते वाली युवती—ने जो कुछ हुआ था, उसे महत्व दिया। उसका विचार था कि वह अपने पतन के पथ पर अग्रसर हो रही थी। उसके मुख की भावभगी कान्तिहीन होती गई और उसके मुख के दोनों ओर उसके लम्बे बाल लटके हुये शोक प्रकट कर रहे थे। उसका चेहरा उतरा हुआ था और वह चितन में निमग्न थी—किसी प्राचीन चित्र में जिस प्रकार कोई पतित स्त्री चित्रित हो।

"यह ठीक नहीं है।" उसने कहा—"सबसे पहले तुम्हारे हृदय ही में मेरे प्रति अश्रद्धा की भावना का उदय होगा।"

मेज़ पर एक तरबूज़ रखा था। गोमोव ने उसमें से एक फाँक काटी और धीरे-धीरे उसे खाने लगा। कम से कम आध घटे तक तो वे चुपचाप बैठे रहे।

अन्ना सेरगेयेवना की दशा दयनीय थी, इस समय अनुभवहीन युवती की निष्पाप भावना उसमें विनष्ट हो गई थी। मेज पर रखी एकाकी मोमबत्ती के प्रकाश में वह अत्यन्त शोकाकुल प्रतीत हो रही थी।

"क्यों, तुम्हारे प्रति मुझे भला, क्यों अश्रद्धा होने लगी?" गोमोव ने कहा—"तुम नहीं जानती कि तुम क्या कह रही हो।"

"ईश्वर मुझे क्षमा करे!" उसने कहा। उसकी आँखें डबडबा आई थीं—"यह अत्यत भयानक है।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि तुम अपने कृत्य का औचित्य सिद्ध करना चाहती हो।"

"मैं किस प्रकार अपने को दोप-रहित सोच सकती हूँ! मैं एक पापी, दुश्चरित्रा स्त्री हूँ, मैं स्वय से घृणा करती हूँ। अपने कृत्यों का औचित्य सोचने का मेरे लिये कोई कारण नहीं है। अपने पति को मैं धोखा नहीं दे रही हूँ, बल्कि स्वय को अन्धकार में रखना चाहती हूँ। और अभी से नहीं, बहुत पहले से। सभव है कि मेरा पति एक ईमानदार और सच्चरित्र पुरुष हो, पर मेरे विचार से वह तेजहीन है। उससे

विवाह होने के समय मेरी अवस्था बीस वर्ष की थी। तब मुझमें एक अज्ञात भावना का उदय हुआ था, जो मुझे विवाह को एक वांछित वस्तु समझने को बाध्य करती थी—उसे कौतूहल ही कहना चाहिये। 'अवश्य ही', मैंने अपने मन में सोचा, 'एक दूसरे प्रकार का जीवन भी है।' मैं ज़िन्दगी का मज़ा लूटना चाहती थी—ज़िन्दगी का मज़ा! हाँ, ज़िन्दगी का मज़ा . । मेरा हृदय अशान्त हो उठा . । तुम कदाचित् मेरे भावों की तह में पैठने में असमर्थ हो, पर मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि मैं स्वयं पर नियन्त्रण न रख सकी। मेरे हृदय में विचारों का अद्भुत आदान-प्रदान हो रहा था। मुझसे रहा न गया। अपने पति से अस्वस्थता का बहाना कर मैं यहाँ आ गई. । और यहाँ मैं चौंधियाई हुई भ्रमण कर रही हूँ. एक पागल की भाँति । और मैं एक नीच, पतिता स्त्री हूँ, जिससे कोई भी घृणा कर सकता है।"

गोमोव उसकी बातों से उकता गया था, वे सीधे-सादे शब्द उसके हृदय में एक अप्रत्याशित घृणा की भावना का संचार कर रहे थे, इससे वह क्रुद्ध भी हुआ। यदि युवती की आँखें जलार्द्र न होतीं, तो वह यही समझता कि वह मज़ाक कर रही थी, अथवा इस प्रकार उसे फँसाना चाहती थी।

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है!" उसने शान्तिपूर्वक कहा—"तुम क्या चाहती हो?"

गोमोव के वक्ष में अपना सिर छिपा कर वह रोने लगी।

"मेरी बातों पर विश्वास करो," उसने कहा—"मैं एक पवित्र, सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहती हूँ। पाप के विचार मात्र से मैं सिहर उठती हूँ। मैं स्वयं नहीं जानती कि मैं क्या कह रही हूँ। जन साधारण कहते हैं, 'शैतान ने मुझे फाँस लिया,' और मैं सोचती हूँ, 'शैतान ने मुझे प्रलोभन दिया।'"

"नहीं, ऐसा न सोचो।" वह गुनगुनाया।

गोमोव ने उसकी भयभीत आँखों में देखा और उसका चुम्बन लिया। उसने धीरे-धीरे उसे समझा दिया। वह शान्त हो गई। फिर दोनों हँस रहे थे।

इसके पश्चात् जब वे घूमने निकले, तो तट पर कोई न था। नगर श्मशान की भाँति निस्तब्ध था, पर सागर अभी भी चिल्ला रहा था, चीख रहा था, लहरें तट से टकरा-टकरा कर टूट जाती थीं।

एक घोडा-गाडी किराये पर लेकर वे ओरिअंडा की ओर चले।

"अभी कमरे में," गोमोव ने कहा—"मैंने किसी वस्तु पर वान डीडेनिट्ज़ का नाम लिखा देखा था। क्या तुम्हारा पति जर्मन है ?"

"नहीं, उनका बाबा जर्मन था। वे स्वयं रूसी हैं।"

ओरिअडा में वे एक बेञ्च पर बैठ गये। पास ही गिरजाघर था। दोनों शन्तिपूर्वक सागर पर दृष्टि गडाये थे। प्रात काल के कोहरे में याल्टा नगर छिपा सा था। पहाडियों के शिखर श्वेत स्पदनहीन बादलों में छिपे थे।

इसलिये सागर गरजता था—जब न याल्टा था न ओरिअडा, और अभी भी यह गरजता है और गरजता रहेगा—उसी प्रकार स्थिर गति से। हमें यह सूचित करता है कि इसका गरजना तब भी शात न होगा, जब पृथ्वी पर हमारा अस्तित्व भी न रहेगा। ससार का कार्य चलता ही रहता है, उसे किसी प्राणी अथवा किन्हीं प्राणियो के लिये कार्य-क्रम में अंतर करना नहीं आता। प्रात.काल जिस स्त्री को उसने अत्यन्त सुंदरी समझा था, वही उसकी बगल में बैठी हुई थी। गोमोव इस समय शान्त था। सागर की अकथ सुदरता उसके चित्त पर मादक प्रभाव कर रही थी। गोमोव ने सागर को ही नहीं देखा, उसकी विचार धारा पर्वतो से भी टकराई, उसका मस्तिष्क बादलो में विचरने लगा। सागर के तल में पडे रत्नो की ओर भी उसका चिंतन दौडा। तभी उसे प्रतीत हुआ कि मानव जाति के किंचित् कार्यों को छोड कर संसार में प्रत्येक वस्तु सुंदर है।

कोई उनकी ओर आया—तट की रक्षा करने वाला एक सिपाही, और उन पर एक दृष्टि डाल कर चला गया। प्रात काल होते समय फेदोसिया से एक स्टीमर आया। सूर्य के प्रकाश की आशा से उसके लैम्प बुझा दिये गये थे।

"देखो, घास पर कितनी ओस पडी है!" अन्ना सेरगेयेवना ने निस्तब्धता भग की।

"हाँ, अब हमें घर लौटना चाहिये।"

वे नगर को लौटे।

फिर वे प्रत्येक मध्याह्न में तट पर आते और साथ ही साथ भोजन कर सागर का मज़ा लेते। अन्ना ने कहा कि उसे नींद न आई थी और उसका हृदय ज़ोरों से धडक रहा था। वह बारम्बार एक ही प्रश्न

पूछती। उसे कदाचित् यह संदेह था कि गोमोव उसे आदर की दृष्टि से न देखता था। कितनी ही बार जब गोमोव किसीको आसपास न देखता, तो वह अपनी प्रेमिका के अधरों के रस का पान करता। उनकी पूर्ण काहिली, दिवस के प्रकाश में चुम्बन, चारों ओर धनी पुरुषों का जमघट—सबने मिल जुल कर उनके जीवन में एक नवीनता का संचार किया। वह अन्ना सेरगेयेवना से अपनी प्रसन्नता का वर्णन करता, और कहता कि वह अत्यंत सुंदर थी। उसके प्रेम करने के ढंग में अधैर्य था, वह उसके पास से कभी न हटता था। पर अन्ना सोचने लगती थी और उससे यह कबूल कराना चाहती थी कि वह उसे निरादर की दृष्टि से देखता था। लगभग प्रत्येक संध्या को जरा कुछ रात्रि व्यतीत होने पर ही वे नगर का ओर जाते—ओरिअंडा, अथवा जल-प्रपात की ओर ये यात्रायें सदा सुखद होतो।

वे उसके पति के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। पर उसने एक पत्र भेज दिया कि उसकी आँखें खराब थी और इसलिये उसकी पत्नी को लौट आना चाहिये। अन्ना सेरगेयेवना को इससे चिंता हुई।

"यह अच्छा है कि मैं जा रही हूँ।" वह गोमोव से कहती—"भाग्य पर किसका वश है?"

वह एक गाड़ी में बैठ गई और गोमोव उसके साथ हो लिया। जब वह डाकगाड़ी में सवार हुई और दूसरी घण्टी बजी तो वह बोली—"एक बार मैं तुम्हें और देख लूँ। बस, एक बार और—वैसे ही जैसे तुम हो।"

वह रोई नहीं, पर वह चिंतित हो गई थी, उसकी जीभ लड़खड़ा रही थी।

"मैं बहुधा तुम्हारे विषय में सोचा करूँगी।" उसने कहा—"विदा! विदा! मेरे अपराधों को क्षमा कर देना। हम सदा के लिये बिछुड़ते हैं। हमें अलग होना है, क्योंकि हमें कभी सम्पर्क में आना ही न चाहिये था। अच्छा, अब विदा!"

गाड़ी चल पड़ी। उसकी बत्तियाँ धीरे-धीरे लुप्त हो गईं और एक या दो मिनट पश्चात् स्टेशन पर निस्तब्धता छा गई। उस मीठे क्षणिक पागलपन का इस प्रकार अन्त होना गोमोव को कम रुचिकर होता? प्लेटफार्म पर अंधकार में वह खड़ा था। उसने सोचा कि उसके जीवन का एक अध्याय और समाप्त हुआ। उसे शोक

उसके व्यवहार में सदा यह भावना रही थी कि वह अवस्था में उससे दो-गुना था। पर सारे समय अन्ना ने उसे यथार्थ पुरुष ही समझा था। इस प्रकार उसने धोखा खाया था, ऐसा गोमोव का विचार था।

स्टेशन पर शीतल वायु बह रही थी और गोमोव को ठण्ड प्रतीत हुई। प्लेटफार्म को छोड़ते समय गोमोव ने सोचा कि मास्को लौटने का समय हो गया है।

(२)

मास्को में घर पर सदा जाड़ा ही रहता। चूल्हे गर्म किये गये और प्रात काल जब दाई ने स्कूल जाने वाले बच्चो के लिये चाय बनाई, तब भी अँधेरा ही था। पाला पड़ने लगा था। जब सबसे पहले दिन बर्फ गिरता है, स्लेज में घूमने में बड़ा मज़ा आता है। लोगों को अपना युवावस्था की याद आ जाती है। उस समय घर के पास उगे वृक्ष अत्यन्त सुखद प्रतीत होते हैं। पर्वत अथवा सागर की याद भी नहीं आती है।

गोमोव मास्को का निवासी था। वह एक बर्फीले दिन मास्को लौटा। अपना समूर का कोट पहिन कर वह घूमने निकला। शनिवार की सध्या थी। गिरजाघरो के घण्टे टनटना रहे थे। हाल ही में विचरण किये हुये प्रदेशों का उसे स्मरण हो आया। धीरे-धीरे वह फिर मास्को के जीवन का अभ्यस्त हो गया, दिन में उत्सुकता-पूर्वक तीन समाचार-पत्र पढ़ता और कहता कि वह तो मास्को के समाचार-पत्र छूता तक न था।

एक रेस्तरां से दूसरे रेस्तरा मे, क्लब में, दावतो में ही वह फँसा रहता। उसे प्रसन्नता इस बात की होती कि उसके घर पर प्रसिद्ध वकील, अभिनेता आते और वह विश्वविद्यालय के क्लब में एक प्रोफेसर से ताश खेलता।

इस प्रकार एक मास बीत गया, और उसके विचार से अन्ना सेरगेयेवना को भूल जाने के लिये इतना समय यथेष्ट था। कितनी ही स्त्रियाँ उसके जीवन में आईं और चली गईं, स्वप्न में कभी उसे उनकी झलक मिल जाती। पर एक मास से अधिक व्यतीत हो गया। हेमन्त भी बीत चला और उसे प्रतीत होता कि वह अन्ना सेरगेयेवना से अभी हाल ही में बिछुड़ा है। और उसके स्मृति-पटल को ज्योति तीव्र-तर हो उठती। वह न कह सकता कि क्यों? पर जब वह बच्चो को

पाठ याद करते सुनता, अथवा कोई गाना ही उसे सुन ई पड़ता, अथवा चिमनी में बर्फीला तूफान शोर करता, तो सारी घटनायें उसके सम्मुख चित्रपट पर चलित चित्रो की भाँति आने लगती · तट पर उससे मिलना, कोहरे से भरे प्रात काल, फेदोसिया का स्टीमर और वे चुम्बन ।

अपने कमरे मे बेचैनी से चहल-कदमी करता हुआ वह यह सब सोचता, और फिर उसकी स्मृतियाँ स्वप्नों में परिवर्तित हो जाती और भूत और भविष्य के बीच की दीवार ढह उठती । रात्रि मे, अन्ना सेरेगेयेवना उसके पास स्वप्नों मे न आती थी, पर वह छाया की भाँति सदा उसके पीछे पड़ी रहती थी । अपनी आँखे मीचते ही वह सशरीर उसके सम्मुख आ जाती—पहले से अधिक सुन्दर, अधिक कोमल ..। और स्वय को भी वह उससे अधिक सुन्दर समझता जितना वह याल्टा में था । संध्या समय वह उसकी ओर मेज़ पर से झाँकती, अथवा कमरे के किसी कोने से । गोमोव को अन्ना के वस्त्रों के सरसराने का स्वर सुनाई पड़ता । राह चलती स्त्रियो के मुख पर दृष्टि गड़ा कर वह देखना चाहता कि कोई अन्ना जैसी तो नही है ।

अपनी स्मृतियो को किसी को सुनाने को वह बेचैन हो उठा । पर घर मे ऐसा करना सहज न था, और घर से बाहर—कौन था जिससे वह कहता ? घर के किसी पुरुष से भी इस विषय में वार्त्तालाप न किया जा सकता था—अपने बैंक के किसी सह-कर्मचारी से भी नही । फिर वह कहता ही क्या ? तो क्या उसने प्रेम किया था ? क्या अन्ना सेरगेयेवना और उसके सम्बन्ध में कोई ऐसी विशेषता थी जिसमे पवित्रता, रोमास, अथवा सहृदयता थी ? या किसी को उस घटना के वर्णन सुनने में कुछ मज़ा आता ? और वह चहके हुये ढंग से स्त्रियो के विषय में, प्रेम के विषय मे वार्त्तालाप करता, और कोई समझ भी न पाता कि क्या मामला था, केवल उसकी पत्नी । अपनी काली भौंहे उठा कर कहती—"डेमीट्री, अब तुम्हारे दिन छैला बनने के नहीं रहे ।"

एक रात्रि को, जब वह क्लब से अपने एक अफसर साथी के साथ लौट रहा था, तो वह बोल उठा—"जिस मज़ेदार युवती से मैं याल्टा मे मिला था, काश मैं उसके विषय में कुछ कह पाता !"

अफसर अपनी स्लेज मे बैठ कर चल पड़ा, पर अचानक वह चिल्लाया—"डीमीट्री डीमीट्रिच !"

"हाँ ।"

"तुम ठीक कहते हो। औरत बदमाश थी।"

इन शब्दों ने गोमोव के हृदय में घृणा का संचार किया। वे उसे अफसर की नीचता के द्योतक प्रतीत हुये। 'ये पुरुष कैसे निर्लज्ज हैं', उसने सोचा।

न रातें किसी काम की होती थीं, न दिन ही। विना रुके ताश खेलना, शराब पीना, पुराने विषयों पर रद्दी गप्पें लड़ाना और भी ऐसे कितने ही अर्थहीन कार्य करना—यही उसका दिन का रवैया था। इससे भाग निकलना उसके लिये सम्भव न था। यदि वह जेलखाने में कैद होता, तो भी वह स्वयं को इतना असमर्थ न समझता।

गोमोव उस रात्रि को सोया तक नहीं। घृणा से उसका शरीर जल रहा था। दूसरे दिन उसका सिर दर्द करता रहा। दूसरी रात्रि को उसे ठीक नींद न आई। वह कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चहल-क़दमी करता। अपने बच्चे से वह ऊब उठा था, बैंक में भी उसका मन न लगा। उसे बाहर जाकर किसी से बात करने की इच्छा भी न होती थी।

दिसम्बर की छुट्टियों में उसने एक यात्रा की तैयारी की। पत्नी से कह दिया कि उसे पीटर्सबर्ग एक अर्जी देने जाना था और वह स—को चला गया। क्यों ? इसका उत्तर उसके पास न था। वह अन्ना सेरगेयेवना से मिलना चाहता था, उससे वार्त्तालाप करने की उसकी इच्छा थी और यदि सम्भव हुआ, तो वह उससे एक मुलाकात का प्रबन्ध भी करना चाहता था।

स. वह प्रातःकाल पहुँचा और उसने होटल में सबसे अच्छा कमरा लिया, जहाँ सारी भूमि पर एक भूरा टाट बिछा था और मेज़ पर एक स्याहीदानी रखी थी, जिस पर धूल की एक मोटी पर्त्त जमी थी। मेज़ पर एक मस्तक-विहीन घोड़ा भी रखा था। होटल के एक नौकर से उसे ज्ञात हो गया कि वान डी डे निट्ज़ पुरानी गोनचारना सड़क पर रहता था। होटल से थोड़ी ही दूर उसका अपना घर था, और यह कि वह शान-शौकत से रहता था। उसके अपने ही घोड़े थे, उसे कौन नहीं जानता था ?

गोमोव पुरानी गोनचारना सड़क तक टहलता हुआ चला गया। उसके सम्मुख एक लम्बी भूरी चहार दिवारी थी, जिस पर काँटे लगे

हुये थे। 'ऐसी चहार दिवारी को पार करना सहज नहीं', गोमोव ने चारों ओर देखते हुये सोचा।

उसका विचार था कि छुट्टी का दिन होने से वह और उसका पति दोनों घर पर ही होंगे। इसके सिवा उसके घर पर एकाएक जा पहुँचने से वह घबरा सकती है, गोमोव ने सोचा। और यदि कहीं वह एक चिट्ठी भेजता है, तो सभव है, वह उसके पति के हाथ में पड जाय और सारा मामला चौपट हो जाय। इसलिये वह प्रतीक्षा करने लगा। किसी मौके की तलाश में वह सडक पर चहल-कदमी करने लगा। उसने एक भिखारी को द्वार तक जाने, और उस पर कुत्तों को टूटते देखा। उसने पियानो बजता सुना, यद्यपि स्वर अत्यन्त धीमा था। अवश्य ही अन्ना सेरगेयेवना बाजा बजा रही थी। अचानक द्वार खुला और सुपरिचित छोटा सफेद कुत्ता बाहर आया। गोमोव कुत्ते को पुकारना चाहता था, पर उसका हृदय ज़ोरों से धडक रहा था। उसे कुत्ते का नाम याद न आया।

वह घूमता रहा और भूरी चहार दिवारी के प्रति उसका घृणा भाव बढ़ता गया। क्षण भर के लिये उसने सोचा कि अन्ना सेरगेयेवना उसे भूल गई थी और किसी दूसरे से प्रेम लीला कर रही थी, जैसा कि किसी भी युवती के लिये स्वाभाविक होता, जिसे उस ऊँची चहार दिवारी के भीतर बन्द रहना पड़ता हो।

होटल में लौट कर वह सीधा अपने कमरे में गया। सोफे पर बैठा हुआ वह देर तक भविष्य की कार्य विधि पर मनन करता रहा। फिर खाना खा कर वह सो गया।

वह देर तक सोता रहा। 'मुझे कितनी थकान-सी प्रतीत हो रही है' उसने खिड़की से बाहर देखते हुये कहा, 'मैं बहुत देर सोया, अब आज रात्रि को मैं क्या करूँगा?'

बिस्तर पर वह मामूली कम्बल ओढ़े बैठा रहा। उसका मस्तिष्क भयकर उलझन में फँसा था।

'कुत्ते वाली स्त्री के लिये देखो, तुमने क्या-क्या सहा। क्षणिक सुख का परिणाम भी देखा। आज यहाँ तुम बैठे हो।' उसकी अन्तरात्मा उसे कोस रही थी।

दूसरे दिन उसने एक रूसी थियेटर के सम्मुख एक 'जापानी नृत्य का प्रथम दिवस' लगा देखा। सध्या को वह उसे देखने गया।

'यह नितांत सभव है कि वह पहले दिन नृत्य देखने आये,' उसने सोचा।

थियेटर भरा हुआ था, दर्शक शोर मचा रहे थे। सर्वोत्तम सीटों पर अपनी पत्नी के साथ उस प्रांत का शासनाधिपति बैठा था। उनके सम्मुख उनकी कन्या बैठी थी। थोड़ी देर बाद परदा हिला, वाद्य आरंभ हो गया था। लोग अपनी सीटों पर आकर बैठने लगे, गोमोव के नेत्र किसी को ढूँढ रहे थे।

अंत में अन्ना सेरगेयेवना आई। वह तीसरी कतार में बैठी। गोमोव ने उसकी ओर देखा और उसे प्रतीत हुआ कि ससार में उससे अधिक उसका प्रिय और कोई न था। वहाँ बैठी दूसरी स्त्रियो से वह बहुमूल्य वस्त्र न पहिने थी, फिर भी गोमोव की वह सर्वस्व थी। वह उसका दुःख थी, उसका सुख, केवल उसी पर उसकी प्रसन्नता निर्भर थी, और उसके बिना उसे जीवन शून्य प्रतीत होता था। यद्यपि और नृत्य तृतीय श्रेणी का था, वह अन्ना सेरगेयवना के प्रेम के विषय में ही सोच रहा था। सच पूछो तो वह स्वप्निल ससार मे था।

अन्ना सेरगेयेवना के साथ एक युवक आया। वह लम्बा था, पीठ कुछ झुक-सी गई थी। उसकी मूँछे छोटी थी।

प्रत्येक पग पर वह काँपता-सा प्रतीत होता था। कदाचित् यही उसका पति था जिससे वह सतुष्ट न थी। गोमोव ने उसकी ओर देखा और उसके लम्बे शरीर, उसकी छोटी मूँछों, सर पर के चकत्ते देख कर उसे विश्वास हो गया कि अन्ना का निष्कर्ष ठीक था। फिर वह पुरुष अपने कोट में विश्वविद्यालय का बैज भी इस प्रकार लगाये था, जैसे वह किसी कुली का नम्बर हो!

पहली विश्रान्ति में अन्ना का पति सिगरेट पीने बाहर चला गया। तब गोमोव ने अन्ना के पास जाकर काँपते स्वर में ज़बरदस्ती की हँसी हँसते हुये कहा—"कहो, क्या हाल-चाल है?"

उसने उसकी ओर आँखें उठा कर देखा और पीली पड गई। उसने दुबारा उसकी ओर देखा। उसे अपने नेत्रों पर विश्वास न हो रहा था। फिर उसने अपनी ओढनी और पर्स को जोर से थामा। उसे बेहोशी-सी आ रही थी। दोनों चुप थे। वह बैठी थी, गोमोव खड़ा था। वह भी भयभीत था। उसके पास बैठने का उसे साहस न हो रहा था। इसी समय फिर सारंगी और बाँसुरी बज उठी और अचानक उन्हें

प्रतीत हुआ कि सभी उनकी ओर देख रहे थे। वह उठ खड़ी हुई और तेज़ी से द्वार की ओर बढ़ी। वह उसके पीछे चला और फिर दोनों सीढ़ियाँ पार कर रहे थे। भीड़ उनके सामने से छँटी जा रही थी। वे अपने पीछे कितनों ही को छोड़ आये थे, जो सिगरेट और तम्बाकू के धुयें का आनन्द ले रहे थे।

उसी समय गोमोव को याद आया कि अन्तिम मिलन के समय उसने सोचा था कि वे फिर कभी न मिलेंगे। पर अब उनकी मुलाक़ातों का अन्त न दिखाई पड़ता था।

एक अँधेरी पतली सीढ़ी पर वह खड़ी हो गई। "तुमने मुझे कितना भयभीत कर दिया !" उसने हाँफते हुये कहा। अभी भी उसके मुख का पीलापन न गया था, और वह चकित प्रतीत हो रही थी। "ओह ! तुमने मुझे कितना भयभीत कर दिया। मेरी साँस रुक-सी गई। पर तुम आये ही क्यों ? आख़िर क्यों ?"

"अन्ना, मेरी बात समझने की चेष्टा करो !" उसने दबी ज़बान में कहा—"कुछ देखो और ।"

अन्ना ने उसकी ओर सहमी दृष्टि से देखा। उसकी आँखों में प्रार्थना थी, पर वे प्रेम से चमक उठी थीं। वह गोमोव के मुख के कण-कण की मधुरिमा का एक साथ ही आस्वादन कर लेना चाहती थी।

"मैं इतनी पीड़ित हूँ !" वह कहती गई, उसकी बात की ओर उसने ध्यान तक न दिया—"सारे समय मुझे तुम्हारा ही ध्यान रहता था। मैं तुम्हारे विषय में ही सोचा करती थी . और मैं तुम्हें भूल जाना चाहती थी, भुला देना चाहती थी। पर तुम आये क्यों ?"

उनसे कुछ सीढ़ियों के ऊपर दो स्कूली छात्र सिगरेट पीते हुये उनकी ओर देख रहे थे, पर गोमोव ने इसकी परवा न की। उसने उसे अपने बाहुपाश में भर लिया और उसके कपोलों पर चुम्बनों की वर्षा कर दी।

"तुम क्या कर रहे हो ? तुम क्या कर रहे हो ?" उसने अत्यन्त भयभीत होकर उसे अलग करते हुये कहा—"हम दोनों पागल हो गये हैं। तुम्हें शीघ्र चला जाना चाहिये । मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। तुम्हें मेरी ही शपथ जो । देखो, लोग आ रहे हैं।" तभी कोई उनके पास से निकल गया।

"तुम्हें अवश्य चला जाना चाहिये"—अन्ना सेरगेयेवना धीमे स्वर में कह रही थी—"सुनते हो, दिमित्री दिमित्रिच? मैं मास्को में तुम्हारे पास आऊँगी। मैं कभी सुखी न थी। अब मैं दुखी हूँ और कभी सुखी न हो पाऊँगी—नहीं, कभी नहीं! मुझे पहले से अधिक दुखी न बनाओ, गोमोव! मैं सौगन्ध खाती हूँ, मैं मास्को अवश्य आऊँगी। अब हमें अलग हो जाना चाहिये। प्रियतम, प्राणाधिक प्रियतम अब हमें बिछुडना चाहिये!"

उसने उसका हाथ दबाया और तेजी से थियेटर की ओर चली गई। उसकी आँखों के निहित भाव ने गोमोव को बता दिया कि वह अत्यन्त दुखी थी। गोमोव क्षण भर तक वहीं खडा रहा, फिर निस्तब्धता छा जाने पर अपना कोट लेकर थियेटर से बाहर चला गया।

(२)

अन्ना सेरगेयेवना मास्को आने लगी। दो-तीन मास में एक बार वह स...छोडती और मास्को जा पहुँचती। अपने पति से वह कह देती कि वह एक विशेषज्ञ से अपनी बीमारी के सम्बन्ध में वार्त्तालाप करने जा रही है। यह कहना भी ठीक न होगा कि उसका पति पूर्ण रूप से उसकी बातों पर विश्वास कर लेता था, फिर भी उसने कभी उसकी बातों पर आनाकानी न की।

मास्को में वह 'स्लाविन्स्की बाजार' में ठहरती और तत्काल ही गोमोव को खबर भेजती। वह उसके पास आ जाता, किसी को कानों-कान खबर न होती।

जाड़े के दिन थे। गोमोव पूर्ववत उसके पास जा रहा था। उसे रात्रि को [illegible] नहीं हुआ था—उसकी लडकी उसके साथ थी। मार्ग में ही [illegible] पड़ता था। बर्फ़ ज़ोरों से पड रही थी।

"पानी जमने के बिन्दु से तीन अंश तापक्रम से ऊँचा है" उसने कहा—"फिर भी बर्फ़ पड रही है। पर यह गर्मी केवल पृथ्वी की सतह पर है। ऊपर कुछ दूसरी ही अवस्था होगी।"

"हाँ, पिताजी! पर यह तो बताइये, आजकल बादल क्यों नहीं गरजते?" उसने इसे भी समझा दिया और इसी समय उसे अन्ना का ख्याल आया। उसे इसका गर्व था कि उनके सिवा किसी तीसरे को यह बात मालूम न थी।

उसके जीवन के दो पहलू थे : एक तो जिसे सभी जानते थे, जो उसके विषय में कुछ भी कौतूहल रखते थे। यह ज़िंदगी वैसी ही थी जैसी उसके मित्रों और जान-पहिचान वालों की थी। सत्य और असत्य का उसमें व्यावहारिक सम्मिश्रण था। पर मौका ऐसा आ पड़ा था कि गोमोव को अपना असली व्यक्तित्व छिपाये रखना पड़ता था। कहाँ वह झूठ से कोसों दूर भागता था और कहाँ उसे एक दीर्घ असत्य का निर्माण करना पड़ा, जो जनसाधारण की दृष्टि में कभी क्षम्य न होता।

संसार के सम्मुख तो गोमोव बैंक में काम करता, स्त्रियों के विषय में मज़ाक किया करता, उत्सवों में अपनी पत्नी के साथ सम्मिलित होता, पर रात्रि के अंधकार के समान उसकी ज़िन्दगी का दूसरा पहलू दूसरों की दृष्टि से छिपा था। गोमोव कभी-कभी सोचता कि उसकी गति निराली नहीं, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कुछ ऐसा ही रवैया है।

अपनी कन्या को स्कूल में छोड़ कर गोमोव 'स्लाविस्की बाज़ार' पहुँचा। नीचे वाले कमरे में ही उसने अपना समूर का कोट उतार कर रख दिया और सीढ़ियों से पहली मंजिल पर जा पहुँचा। द्वार उसने बहुत धीरे से खटखटाया।

अन्ना सेरगेयेवना अपना प्रिय भूरा वस्त्र पहिने थी। यात्रा से वह थकी हुई थी। रात भर उसने गोमोव की प्रतीक्षा की थी। उसका मुख पीला था और गोमोव को देख कर भी उसके मुख पर मुस्कराहट न आ सकी। उसके वक्ष पर अपना सिर रख कर वह सिसकने लगी। उनका चुम्बन भी दीर्घ कालीन था, जैसे उन्होंने वर्षों से एक दूसरे को देखा न हो।

"कहो, क्या हाल है?" उसने पूछा—"समाचार क्या है?"

"ठहरो। मैं अभी तुम्हें बताती हूँ। नहीं, मुझसे यह कहते नहीं बनेगा।"

वह बोल न सकी, उसके नेत्रों से अश्रु झर रहे थे।

'खैर यह थोड़ा रो ले . । मैं ठहर नहीं सकता हूँ'—उसने सोचा और वहीं बैठ गया।

फिर उसने घण्टी बजा [illegible] चाय मँगवायी। जब वह चाय पी रहा था, अन्ना [illegible] ी।

[illegible] के रवैये से सन्तोष

[illegible] ति पवित्र प्रेम पर

आवरण डाल रखना उसे रुचिकर न था। क्या उनकी जिन्दगी व्यर्थ नही हुई थी ?

"रोओ मत...रोओ मत।" उसने कहा।

गोमोव को स्पष्ट प्रतीत होता था कि उनके प्रेम का अन्त न था। अन्ना सेरगेयेवना उसके प्रति अधिक आकर्षित होती गई थी और यदि वह उससे कहता कि उनके प्रेम का किसी दिन अत न होगा, तो उसे विश्वास न होता।

गोमोव के बाल सफेद हो चले थे। उसे आश्चर्य था कि कुछ वर्षों में ही वह इतना वृद्ध और वदसूरत कैसे हो गया। अन्ना के कंधे गर्म थे और स्पर्श मात्र से सिहर उठते थे। अभी भी वे सुन्दर थे, पर उसकी ही भाँति कदाचित् पतन के मार्ग पर चले जा रहे थे! पर आखिर वह उससे इतना प्रेम क्यों करती थी? गोमोव स्त्रियों को वैसा नहीं प्रतीत होता था, जैसा वह स्वयं था, बल्कि वे उसे कल्पना-जनित आदर्श पुरुष का प्रतिरूप समझ कर उससे प्रेम करने लगती थीं, और अपनी भूल समझ जाने पर भी उससे प्रेम करती रहती थीं। लेकिन उनमें से एक भी अब तक उसके साथ सुखी न हुई थी। समय के साथ ही वह स्त्रियों से मित्रता बढाता और समय के साथ ही वे अलग हो जाते। सचमुच उसने कभी किसी से प्रेम न किया था। उसने उनको सब कुछ प्रदान किया था, पर प्रेम नही।

और अब, जब उसके बाल सफेद हो चले थे, वह प्रेम में फँस गया था—सच्चा प्रेम—जीवन में पहली ही बार।

अन्ना और वह एक दूसरे से प्रेम करते थे—घनिष्ठ मित्रों की भाँति, पति-पत्नी की भाँति। उन्हें प्रतीत होता था कि प्रारब्ध ने एक को दूसरे के लिये ही रचा था और यह समझ में न आनेवाली बात थी कि एक का पति भी था और दूसरे की पत्नी थी। वे दो, एक जाति के पक्षियों की भाँति थे, जिन्हें ससार ने दो भिन्न-भिन्न पिजडों में बन्दी बना रखा था।

वे एक-दूसरे के भूत को भुला चुके थे, उसके स्मरण से उनकी आँखें अब नत न होती थीं; वर्त्तमान के प्रति उन्हें कुछ भी क्षोभ न था, और उन्हें प्रतीत होता था कि इस परिवर्त्तन का कारण उनका पारस्परिक प्रेम था।

इससे पूर्व जब कभी उसका हृदय संसार से उचटने लगता था, तो वह भाँति-भाँति की कल्पनाओं द्वारा स्थिर होने की चेष्टा करता था, पर इस समय जीवन की त्रुटियों की ओर उसका ध्यान तक न था। इस समय तो उसका हृदय स्नेह से द्रवित हो रहा था।

"रोओ मत, प्रियतमे!" उसने कहा—"तुम काफी रो चुकी...। चलो, हम तुम मिल कर कोई उपाय सोचें।"

फिर वे इस विषय में वार्त्तालाप कर रहे थे। उन्होंने चेष्टा की ऐसा मार्ग निकालने की, जिसमें उन्हें एक दूसरे से कुछ छिपाना न पड़े; भिन्न-भिन्न नगरों में रहना न पड़े। महीनों तक वे परस्पर न मिल पाते थे, उन्हें यह परिस्थिति असह्य थी। पर वे इन बंधनों को कैसे तोड़ें, यह वे न जानते थे।

"किस प्रकार? कैसे?" उसने पूछा। दोनों हाथों से वह अपना सिर पकड़े था—"कैसे?"

वे सोच रहे थे कि कुछ ही समय में वे इस पहेली का उत्तर ढूँढ़ निकालेंगे, और फिर उनके लिये एक नूतन जीवन का श्रीगणेश होगा, पर दोनों यह जानते थे कि उनके प्रेम का कहीं अंत न था, और कंटकाकीर्ण भविष्य का तो अभी आरम्भ ही हो रहा था।

सुखद स्वप्न

लेखक—फियोडोर सोलोगब

ईस्टर के पहले वाला पवित्र सप्ताह था। घर में त्योहार मनाने की तैयारियाँ हो रही थी। हर साल इसी तरह तैयारियाँ हुआ करती थीं। इस समय की चहल-पहल में बालक और युवा सब को आनन्द प्राप्त होता था। अंडों में भाँति-भाँति के रंग चढाये जा रहे थे। चपातियों पर बादामी रंग चढाने की तैयारी की जा रही थी और ईस्टर में आनेवाले सज्जनो के लिये मलाई की बढ़िया मिठाई बनाई जा रही थी। मसालों और सेंट की सुगंध से कमरा सुगंधित हो रहा था।

फर्श पर पालिश किया गया था। घर का कूडा-कचरा साफ कर दिया गया था। खिडकियाँ चमक रही थी। काम के मारे सब नौकर थक गये थे। सिरोज की बहिनें स्नेहपूर्ण और आनन्ददायक चुम्बन लेने के सुन्दर स्वप्न देख रही थी। किसी अनहोनी दुर्घटना के विचार मात्र से वे सिहर उठती थी।

सिरोज अपने कमरे में लेटा हुआ था। उसके कमरे में किसी प्रकार की सजावट नही थी। कमरा इसलिये नही सजाया गया था कि कमरे में शुद्ध हवा आने में किसी प्रकार की रुकावट पैदा न हो जाये। कमरे में सर्वत्र सुगंध-मिश्रित वायु बह रही थी।

सिरोज की उम्र केवल पन्द्रह वर्ष की थी। वह बड़ा होनहार और हँसमुख लडका था। खानदान के सभी लोगों का लाडला था। बसन्त ऋतु के शुभागन से प्रकृति में नयी उमग, उत्साह और आनंद प्रतीत होता था। सिरोज की बहिनें ईस्टर के त्योहार के पहले इतवार के दिन आनन्द मनाना चाहती थीं। उनको मृत्यु के विचार से ही डर लगने लगता था।

इधर तो त्योहार की तैयारियाँ बडी तेज़ी के साथ, जोश और खरोश के साथ जारी थीं, उधर सिरोज की मौत भी बडी तेज़ी के साथ उसके पास दौडती हुई चली आ रही थी। वे त्योहार की तैयारी में फँस कर

इस दुर्घटना को भूल कर, अपने आपको धोखा देना चाहते थे। वे समझ रहे थे कि सिरोज की बीमारी दूर हो रही है, वह अच्छा और तन्दुरुस्त हो रहा है।

वह बहुत दिनों से बीमार था। घर के लोगों का विचार उसे कहीं बाहर ले जाने का था; परंतु उसे किस स्थान पर ले जायें, यह बात तय न होने के कारण यह विचार कार्य-रूप में परिणत नहीं किया जा सका। उसे बाहर ले जाने की बात सदा टलती रही। अचानक उसके फेफड़े खराब हो गये। वह इतना कमज़ोर हो गया कि उसका कहीं बाहर ले जाना असम्भव सा जान पड़ने लगा। सफ़र की तकलीफ गवारा करना उसके लिये खतरे से खाली नहीं था। इसके अलावा गरमी के मौसम में उसका बाहर ले जाना बेकार दिखता था, क्योंकि इस समय बीमारी का घटना तो दूर रहा, उसके बढ़ जाने की ज्यादा आशंका थी।

युवक डाक्टर ने सिरोज के खिन्नमना पिता से कहा—"अब यह एक महीने से ज्यादा का साथी नहीं जान पड़ता।"

वृद्ध डाक्टर ने गंभीर मुद्रा धारण करते हुए कहा—"ज्यादा से ज्यादा यह छः हफ्ते और चल सकता है।"

सिरोज का पिता उन्हें आदरपूर्वक दरवाज़े तक पहुँचाने गया। उसका मुँह इस बात को सुन कर लाल सुर्ख हो गया। वह बहुत घबरा गया। उसके दिमाग में यह बात जमती ही न थी कि सिरोज मर जायगा। उसको अभी भी आशा थी कि वह धीरे-धीरे अच्छा हो जायगा। उसके मन में तरह-तरह के विचार उत्पन्न होने लगे।

वह रसोई-घर के चूल्हे के पास खड़ा हो गया। उस कमरे में लटकते हुए एक आइने को देखकर उसने अपनी टाई सुधारी, जो एक ओर सरक गई थी। उसने काँपती हुई अँगुलियों से अपनी मूँछ के सफेद बालों को निकाल कर बाहर फेंक दिया।

वह उदास मन से चुपचाप अपनी स्त्री की टेबिल के पास गया, जहाँ वह तरकारी छील रही थी। अपने हाथों को सदरी के जेबों के अन्दर डाल कर वह स्त्री के पीछे खड़ा हो गया। अचानक स्त्री को एक ओर झुकी देख कर उसने उसके मुँह की ओर आशंका से देखा। उसके ओठ काँपते-से जान पड़े। उसे ऐसा जान पड़ा कि वह अपने मानसिक और शारीरिक दुःख को ज़बरदस्ती छिपाने की कोशिश कर रही है। वह यह भी समझ गया कि पुत्र की मृत्यु की चिन्ता उसे है।

उसे यह देख कर बहुत दु ख हुआ कि वह अपने बिस्तर पर तकिये के भीतर मुँह छिपा कर फूट-फूट कर रो नही रही है। इसके विपरीत वह लडकों के साथ बडे शान्त भाव से बैठी हुई थी। ऊपर से तो ऐसा मालूम होता है कि उसे किसी बात की चिन्ता नहीं है; परन्तु अन्दर वह चिन्ता की चिता में बेतरह जली जा रही है। बच्चे अपनी माँ को उसके काम में मदद करते हुये हँस रहे थे। वे लापरवाही से बातें भी करते जाते थे। उन्हें भला, भविष्य की क्या चिन्ता हो सकती थी?

स्त्री के हृदय की अन्तर्ज्वाला का अनुभव करते हुए उसे बडा दु ख हुआ। उसका गला भर आया—वह उसके पास से जल्द हट गया। पालिश किये हुए फर्श पर उसके बिना एडी के जूतों की टप्-टप् आवाज़ सुनाई पडती थी। विचार और चिन्ता में डूबा हुआ वह अपने अध्ययन-नागर के खाली बराण्डे में गया। उसने बिस्तर पर लेट कर जी भर कर रोने का विचार किया।

उसके कदम की आवाज को सुन कर स्त्री का मुँह पहले की अपेक्षा अधिक लाल हो गया। उस पर उदासी के भाव स्पष्ट झलकने लगे। परतु वह सीधी और शान्त बैठी हुई अपना काम करती रही। सब तरकारी छिल जाने पर उसने अपने कोमल सफेद हाथों को धोकर टावल से पोछा। धीरे-धीरे वह पति के अध्ययनागार की ओर चली।

(२)

ईस्टर के पहले शनिवार का दिन था। फिरोज सो रहा था। वह एक अजीब परन्तु सुखद स्वप्न देख रहा था।

स्वप्न में उसने देखा कि एक दिन बडी तेज़ गरमी पड रही थी। उसके सामने एक लम्बी तराई दिखलाई दी, जो चमकते हुए सूर्य की किरणों से सोने के रङ्ग के समान जाज्वल्यमान जान पडती थी। वह ग़रीब आदमी की झोपडी के दरवाज़े पर बैठ गया। दो खजूर के वृक्षों के चौडे पत्ते सूरज की किरणों से तपे हुये उसके पैरों पर छाया कर रहे थे। उसके सफेद कपडों पर भी सूरज की किरणें पड रही थीं। वह बहुत छोटा था। उसकी उम्र लगभग पाँच वर्ष की होगी। वह बहुत सुखी था। सफेद कपडों से ढँका हुआ उसका छोटा-सा शरीर देवदूत के समान हलका जान पडता था। जिधर देखता, उसे आनन्द ही आनन्द नज़र आता था। उसके पैर के नीचे पृथ्वी कितनी कडी और

गरम थी। बाहर हवा गरम, परन्तु ताज़ी थी। ऊपर आसमान नीला और मनोहर दिखलाई पड़ता था। इतना ऊँचा होने पर भी आसमान इतना पास नज़र आता था कि मानो वह पृथ्वी को छिपाये लेता है। पक्षी इधर-उधर तेज़ी से उड़ रहे थे। बच्चे पास की झोपड़ियों के पास खेलते हुए बड़ा शोरगुल मचा रहे थे। उसकी माँ कुएँ पर खड़ी हुई नंगे पैर ही उन स्त्रियों से आनन्दपूर्वक बातचीत कर रही थी जो चित्ताकर्षक सफेद पोशाक पहिने थीं।

बातचीत समाप्त कर वह घर की ओर लौटी। उसके कन्धे पर लम्बे सँकरे गले का एक घड़ा था। वह उसे अपने सुन्दर कोमल हाथ से सम्हाले हुई थी। उसके गुलाबी गालों पर सूर्य का प्रकाश क्रीड़ा कर रहा था। उसके ओठ मधुर मुस्कान से आधे खुले हुए, बड़े भले प्रतीत होते थे।

वह मुस्कराती हुई बालक की ओर टकटकी लगा कर देख रही थी। उसे देख-देख कर उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं। लड़के को दौड़ता हुआ देख कर वह घमंड से फूली न समाती थी। उसे हँसता और प्रसन्न मुख देख कर वह उससे मिलने के लिये उत्सुक हो रही थी। उसके हाथ में एक मिट्टी का खिलौना—पक्षी था। वह जीवित सा प्रतीत होता था।

आश्चर्यजनक छोटे कारीगर ने चिकनी मिट्टी से इस खिलौने को बनाया था। उसकी अँगुलियाँ काम करने में तेज़ और कुशल दिखाई पड़ती थीं। ऐसा जान पड़ता था कि खिलौने में प्राण आना चाहते हैं। गरमाहट पाकर छोटा सा पक्षी काँप उठा। छोटी-छोटी कुशल अँगुलियों ने जानदार खिलौना तैयार कर लिया। यह उसकी प्रबल इच्छा का सफल था।

माँ घड़ा सिर से उतारने की गरज़ से उसके पास से जल्द आगे चली गई। बिना गर्दन हिलाये या उसकी तरफ झुकाये, वह अपने पुत्र की ओर बड़े आनन्द से दृष्टिपात करती हुई आगे बढ़ी।

लड़के ने अपना बायाँ हाथ फैलाया। सूरज की किरणों से झुलसे हुए उसके पैरों को पकड़ कर वह चिल्ला उठा—

"माँ ज़रा इसे देखो तो।"

वह अपने विदेशी भाषण पर चकराया, परन्तु इस बात को वह

जल्द भूल गया। उसे अपनी अजनबी ज़बान पर आश्चर्य होने लगा। उसकी बात को माँ ने समझ लिया है, इसे देखकर भी वह कुछ देर तक चक्कर में पड गया।

उसकी माँ एक बार हँस पडी। उसने पूछा--"क्यों बेटा, यह क्या चीज़ है ?"

"लडका मिट्टी के खिलौने को ऊपर उठाता हुआ आनन्दपूर्वक बोला—"देखो माँ, इस पक्षी को मैंने बनाया है। यह पक्षी जीवित पक्षी के समान गाता है।"

उसने अपने ओठ पक्षी की पूँछ पर जमाये, जो सीटीनुमा बनी हुई थी। वहाँ उसने जोर से फूँका। पक्षी के पीछे से धीमी सीटी की सी आवाज़ आई। अपनी साँस को दबा कर उसने मिट्टी के पक्षी द्वारा भाँति-भाँति के स्वर सुना कर माँ को प्रसन्न किया।

माँ हँसती हुई बोली—"तुम बडे होशियार लडके हो ! तुमने क्या ही अनोखा पक्षी बना डाला। उसकी खबरदारी रखना। उसे मजबूती से पकडे रहना। देखना, कहीं वह फुर्र से उड न जाय।"

वह झोपडी के भीतर जाकर अपना काम करने लगी। लडका वहीं खडा-खडा अपने पक्षी की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। वह अपनी कोमल अँगुलियों से उसके पैरों को थपथपाने लगा।

उसने धीरे से पूछा—"क्या तुम उड कर भागना चाहते हो ?"

पक्षी के छोटे-छोटे पर हिल उठे।

बालक ने फिर पूछा—"क्या तुम उडकर भागना चाहते हो ?"

पक्षी का छोटा-सा दिल धीरे-धीरे धडकने लगा।

बालक ने तीसरी बार पूछा—"क्या तुम उड कर भागना चाहते हो ?"

पक्षी का छोटा शरीर सर्वत्र काँप उठा। उसने पर फैलाये, उन्हे फडफडाया।

सिर हिला कर वह इधर-उधर निहारने लगा।

बालक ने हाथ खोला। पक्षी उड गया। स्वच्छ नीलाकाश में पक्षी का आनन्दपूर्ण गाना दूर-दूर तक फैल गया।

गरम सूरज ऊपर उठ गया और ठंडी-ठंडी हवा पास आकर चलने लगी।

(३)

सिरोज ठंडे पसीने में नहाया हुआ जागा।

उसकी छाती में बड़े ज़ोर का दर्द हो रहा था। उसे साँस लेने में भी कठिनाई जान पड़ती थी, परंतु उसका वह पक्षी, जिसे उसने बनाया था, कहाँ चला गया ?

वह खिड़की के पास, पर फड़फड़ाता उड़ता और चुहचुहाता हुआ दिखाई पड़ा।

"मेरे पक्षी !"

"और मैं कौन हूँ ?"

सिरोज उठा ; परंतु अपने को सँभाल न सका। बिस्तर पर फिर से गिर पड़ा। वह बेहोशी की हालत में बड़बड़ाने लगा।

"और मैं कौन हूँ ?"

माँ, झुक कर उसे देखने लगी, परंतु सिरोज ने उसे नहीं देखा। उसने अपने कमरे की दीवारें नहीं देखीं। वे सब उसे अकेला छोड़ कर न जाने कहाँ चली गईं ?

(४)

वह एक पहाड़ की चोटी पर था।

नीचे का प्रदेश दोपहर की धूप में चमकता हुआ दिखाई दे रहा रहा था। उसके कपड़े फटे और पुराने थे। उसके थके हुए पैरों में धूल जमी हुई थी। इसके अलावा उसकी छोटी सुनहरी दाढ़ी में भी धूल लगी हुई थी।

उसके साथी नीचे वृक्षों की छाया के नीचे ही बैठे रहे। कुछ देर बैठने के बाद वे थकावट दूर करने के विचार से वहाँ सो गये।

उसके आसपास प्रकाश तेज़ हो चला। चमकता हुआ नीलाकाश अधिकाधिक शानदार प्रतीत होने लगा। पारदर्शक वायु के भीतर उड़ते हुए और अपने साथ स्वर्गीय शीतल वायु लाते हुए उसके पास बेशकीमती पोशाक पहिने दो आदमी आये और उससे बातचीत करने लगे।

"मैं कौन हूँ ?"

उन्होंने जवाब दिया—"डरो मत। तीसरे दिन तुम उठोगे।"

उसके कपड़े आग के समान लाल थे। उसका सिर अग्नि के समान

लाल गोलाकार-सा दिखलाई पड रहा था। उसके खून के भीतर भी आग ज़लती हुई जान पडने लगी। उसकी धमनियों में ज़ोर-ज़ोर से खून दौडने लगा। वह आनन्द में मग्न वडे जोर से चीख उठा।

(५)

वह जागा। उसकी चिल्लाहट सुन कर घर के सब लोग उसके बिस्तर के आसपास आ गये। वे सब डर गये। उसके मुँह से थोडा खून निकल पडा। उसका चेहरा सफेद और भयंकर हो गया। उसकी भयकर आँखों को देख कर सब लोग घबरा गये।

काली और दिखलाई न देने वाली, भयकर सफेद दाँतों को चमकाते हुए वहाँ एक शकल आती हुई जान पडी। वह अपने साथ वह शान्ति और अन्धकार लेती आई, जो कभी नष्ट नहीं होता, जो सदा विद्यमान रहता है। वह भूधराकार थी। उसने सिरोज से सब वायु बाहर निकाल ली। काले बादल के समान, अपने वस्त्रों को वजनी तहों को हिलाती हुई वह सीधी सिरोज की तरफ लपकी।

परतु वहाँ उस प्रभापूर्ण मनुष्य की बिजली की कडक के समान तेज अवाज़ सुनाई पडी —"तीसरे दिन तुम उठोगे।"

भयकर अतिथि के काले लबादे के पीछे उसे मोक्ष के सुनहरे दिन की चमकती हुई आभा की झलक दिखलाई पडी। इस दृश्य को देख-कर सिरोज़ की आँखें बहुत प्रसन्न हुईं। वह पीला चेहरा खुशी के मारे चमक उठा। वह अस्पष्ट रूप से कुछ बोला। उसने अपनी साँस भी सँभाली।

"मैं तीसरे दिन उठूँगा।" ऐसा कहते हुए वह मर गया।

(६)

तीसरे दिन उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया हुई। वह दफनाया गया।

जीवन की सरिता

लेखक—अलैकजेण्डर कुप्रीन

यह एक सराय है जिसका नाम 'सर्बिया' है। उसकी मालकिन का एक कमरा है। पीला कागज़ दीवारों पर चढ़ा हुआ, दो खिड़कियों पर गंदे मलमल के परदे, इनके बीच में एक अण्डाकार शीशा, जो दीवार से ४५ डिगरी का कोण बनाता है, जिसमें रँगी हुई भूमि और कुरसियों का टेढ़ा प्रतिबिम्बित होता है। एक पिंजड़ा है, जिसमें कैनेरी नामक पक्षी। छपी हुई लाल साटन के परदों से कमरा दो भागों में विभाजित कर दिया गया है; बाईं ओर वाला भाग छोटा है, इसमें मालकिन अपने दो बच्चों के साथ रहती है। दाहिनी ओर वाले भाग में विभिन्न प्रकार के फर्नीचर भरे पड़े हैं—टूटे फूटे, अस्त व्यस्त। प्रत्येक कोने में कूड़े का ढेर है। मकड़ियों के जालों की भी कमी नहीं है। एक चमड़े के थैले में मल्लाहों का कुतुबनुमा है और उसके साथ ही तीन पैरवाली तिपाई, एक जंजीर, कुछ पुराने सन्दूक और बक्स, बिना तारों वाला सितार, शिकारी जूते, एक सीने की मशीन, एक बाजा, एक कैमरा, लगभग पाँच लैम्प, पुस्तकों के ढेर, कपड़े, बण्डल जो विभिन्न समय पर मालकिन ने किरायेदारों के किराया न देने पर अथवा भाग जाने पर ज़ब्त कर लिये थे। उनके कारण कमरे में उस भाग में चलना कठिन है।

सर्बिया एक गया-गुज़रा होटल है। स्थायी ठहरनेवालों की यहाँ कमी है, जो हैं भी वे वेश्यायें हैं। यहाँ अधिकतर वे ही यात्री टिकते हैं, जिन्हें नीपर नदी द्वारा निकटवर्ती नगरों को जाना पड़ता है, या छोटे-मोटे किसान, यहूदी कमीशन एजेण्ट और दूरवर्ती गाँवों के निवासी, तीर्थ यात्री और गाँवों के पादरी जिन्हें नगर में किसी बात की सूचना देनी पड़ती है, अथवा जो नगर से काम हो जाने के पश्चात् लौटते हैं। नगर से कभी-कभी जोड़े भी आते हैं और वे एक रात्रि अथवा कुछ दिनों के लिये होटल में कमरा किराये पर लेकर रहते हैं।

बसन्त का समय, तीसरा पहर, तीन बजे। खुली हुई खिड़कियों के

परदे धीरे से हिलते हैं और कपडे में मिट्टी के तेल और भुनी हुई तरकारियों की महक आती है। बात यह है कि मालकिन चूल्हे पर तरकारियाँ, चर्बी और बहुत-सा मसाला मिला कर भोजन बना रही है। वह विधवा है, अवस्था छत्तीस और चालीस के बीच होगी। देखने में स्वस्थ, तेज़, और सुन्दरी है। उसके सिर पर बाल घुँघराले हैं और ढलती हुई अवस्था का परिचय देते हैं। पर उसका मुख भरा हुआ है, उसके कामुक ओठ लाल हैं। उसका नाम अन्ना फ्रोडरीखोवना है। वह आधी जर्मन है, आधी पोल। पहले उसका घर बाल्टिक प्रदेश में था, पर उसके अभिन्न मित्र उसे केवल फ्रोडरीख कहते हैं। यह नाम उसके दृढ़ स्वभाव के साथ अधिक मेल खाता है।

वह जरा कडे मिजाज़ की है; गाली देने से कभी बाज नहीं आती। कभी अपने कुलियों से लड़ती है और कभी किरायेदारों से, जो स्त्रियों के साथ रँगरेलियाँ करते है। शराब पीने में वह किसी पुरुष से कम नहीं है। नाचने का उसे बडा शौक है। क्षण भर में ही वह गाली देने लगती है और दूसरे ही क्षण वह हँस भी सकती है। उसे कायदे-कानून की कोई परवा नहीं। पासपोर्ट रहित टिकने वालों को टिकाने में उसे कोई आनाकानी नहीं और उसके ही कहने के अनुसार जो किराया अदा नहीं करते, उन्हें वह अपने ही हाथों से गली में निकाल देती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब वे नहीं रहते, तो उनकी सब वस्तुयें सडक पर डाल देती है, या अपने कमरे में रख लेती है और सराय के दरवाजे बन्द हो जाते हैं। उसकी खातिरदारी के कारण पुलिस उससे प्रसन्न है—खातिरदारी भी ऐसी वैसी नहीं, मनुष्य के अस्थायी कामुक आवेगों को सन्तुष्ट करने में वह कभी कोई बाधा नहीं करती।

उसके चार बच्चे हैं। बडे दो—अधिलका, रोमका अभी स्कूल से नहीं लौटे है और छोटे आडका और एडका, जिनकी अवस्था सात और पाँच वर्ष की है, सदा अपनी माँ को घेरे हुये दिखाई देते है। उनके गालों पर खरोंचें, कीचड और आँसुओं के दाग सदा दिखाई देते है। दोनों मेज़ की टाँगें पकड लेते है और घिघियाने लगते हैं। इनकी क्षुधा कभी शान्त नहीं, क्योंकि उनकी माँ उनके भोजन पर कभी अधिक ध्यान नहीं देती। कभी कुछ खाने को मिल गया, कभी कुछ। अपनी जीभ निकालता हुआ, भौंहे, चढ़ाकर आडका गरज कर कहता है—"तुम भी खूब हो, मुझे कुछ खाने को नहीं देती।" एडका नाक मे बोलता

है—"ज़रा मै भी कोशिश कर देखूँ ।" कहना न होगा कि ऊँची मेज़ पर खाना रखा रहता है ।

मेज़ की बगल में खिड़की के पास ही 'रिज़र्व सेना' का लेफ्टीनेण्ट इवानोविच शीफ़ेविच बैठा है । उसके सम्मुख एक रजिस्टर रखा है, जिसमें वह ठहरने वालो के पासपोर्ट दर्ज करता है । पर कल की घटना के पश्चात् उसका कार्य धीरे-धीरे हो रहा है, अक्षर हिल जाते हैं और उतने सुन्दर नही बनते । उसकी काँपती हुई अँगुलियाँ कलम से झग-इती हैं । उसके कानो में तार के खम्भों की-सी झनझनाहट हो रही है । कभी-कभी उसे ऐसा प्रतीत होता है कि उसका सिर फूल रहा है, फूल रहा । और मेज़, पुस्तक और कलमदान सब दूर पर स्थित और छोटे दिखाई देने लगते हैं । फिर पुस्तक उसकी आँखों के बिलकुल सामने आ जाती है । कलमदान भी ऐसा ही करता है । उसका सिर छोटा होने लगता है और पहले से भी छोटा हो जाता है । लेफ्टीनेण्ट शीफ़ोविच की सूरत उसकी पहले की सुन्दरता और उच्चपद की निशानी है । उसके काले बाल कड़े और मोटे हैं और उसकी गर्दन के ऊपर के बालों में एक सफेद चकत्ता है । उसकी दाढ़ी फैशन के अनुसार नुकीली छाँटी गई है । उसका चेहरा दुबला-पतला, गदा और सिकुड़ा हुआ है । उस पर, ऐसा प्रतीत होता है कि लेफ्टीनेंट की सारी कमज़ोरियां और छिपी बीमारियाँ लिखी हुई हैं ।

'सर्बिया' में उसकी स्थिति बिलकुल साफ नही है । वह अन्ना फ्रोडरीखोवना की ओर से न्यायाधीशों के सम्मुख उपस्थित होता है । वह लड़को के पाठ सुनता है, बस्ते बाँधता है, होटल का रजिस्टर रखता है, ठहरने वालों का हिसाब बनाता है, प्रातःकाल उच्च स्वर में समाचार-पत्र पढ़ता है और सध्या समय राजनीति पर बहस करता है । अधिकतर वह सराय के किसी खाली कमरे में सोता है; पर कभी-कभी ज्यादा ठहरने वालो के आ जाने से उसे बरामदे में सोफे पर पड़ा रहना पड़ता है, जिसकी गद्दी अब गद्दी नहीं रह गई है और स्प्रिंग इतनी लचकीली हो गई है कि सोने वाले की पीठ और सोफे के काठ के बीच बिलकुल जगह नहीं रह जाती । जब ऐसी सम्भावना आ जाती है, तो लेफ्टीनेंट बड़ी सावधानी से अपनी सारी सामग्री खूँटियों पर टाँग देता है—अपना लबादा, टोपी, वह कोट जिसे पहिन कर वह घूमने जाता था, जो चिथ[illegible] ... भी उसके दूसरे वस्त्रों से अधिक साफ था । पर वह नोटबु[illegible]

और रूमाल, जिस पर किसी दूसरे के नाम के अक्षर अंकित हैं, तकिये के नीचे रखता है।

विधवा लेफ्टीनेंट को सदा अपने पंजे में रखती है। 'मुझसे विवाह करलो, और मैं तुम्हारे लिये सब कुछ करने को तैयार हूँ,' वह वायदा करती है। 'पूरा सामान, सब कपडे-लत्ते और एक जोडा अच्छे बूट भी। तुम्हें यह सब मिलेगा, और छुट्टियों के दिन तुम मेरे मृत पति की चेन दार घडी लगा सकोगे।' पर लेफ्टीनेंट अभी भी इस विषय में सोच रहा है। स्वतन्त्रता उसकी दृष्टि में बहुमूल्य है और इसमें अफसरपन की मर्यादा का ह्रास नहीं हुआ है। फिर भी वह विधवा के मृत पति के कुछ अधिक घिसे हुये वस्त्रों को तो पहिन ही रहा है।

(२)

समय-समय पर मालकिन के कमरे में हंगामा मच जाता है। कभी ऐसा होता है कि लेफ्टीनेंट अपने विद्यार्थी रोमका की सहायता से किसी दूसरे की पुस्तकों को पुरानी पुस्तक खरीदने वाले के हाथ बेच देता है। कभी वह मालकिन की अनुपस्थिति से लाभ उठाकर किसी के किराये के दाम अपने पास रख लेता है। और नहीं तो वह नौकरानी से गुप्त रीति से सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा करता है। उसी दिन उसने वेश्यालय में अन्ना की शान के खिलाफ कुछ कह दिया था। बात फैल गई और इसका परिणाम उसके हक़ में बुरा हुआ। सभी कमरों के दरवाजे खुल गये और स्त्री-पुरुषों के सिर बाहर झाँक कर तमाशा देखने लगे। अन्ना फ्रीडरीखोवना इतनी ज़ोर से चिल्ला रही थी कि उसकी आवाज़ लोगों ने सड़क पर सुनी।

"चोर कहीं के, यहाँ से सीधे चले जाओ, बदमाश! मैं इतना परिश्रम कर जो कुछ कमाती हूँ, सब तुम पर व्यय कर देती हूँ और तुम उससे अपना पेट भरते हो, जो मैं अपने बच्चों के लिये एक-एक टुकडा करके जमा करती हूँ!"

"तुम अपना पेट भरते हो हमारे धन से!" स्कूली छात्र रोमका ने अपनी माँ के पीछे से मुँह बनाते हुये कहा।

"तुम अपना पेट भरते हो!" आडका और एडका ने दूर से ही चिल्ला कर कहा।

होटल के दरवान का नाम आर्सने था, वह अब तक पत्थर की मूर्त्ति बना लेफ्टीनेंट से छाती भिडाये खडा था। नौ नम्बर के कमरे के काली

मूँछों वाले बहादुर यात्री ने आधा धड़ खिड़की से बाहर निकालते हुए बिना भारी सलाह दी—"आर्सने, उसकी आँखों के बीच में एक घूँसा तान कर मारो।"

इस प्रकार लेफ्टीनेंट सीढ़ियों तक भगा दिया गया, पर सीढ़ियों के ऊपर भी एक बड़ी खिड़की खुलती थी, उससे लटक कर अन्ना फ्रीडरीखोवना ने अपना वक्तव्य जारी रखा—"तुम बदमाश हो खूनी . बेईमान . भगी।"

"भगी!" "भगी!" बच्चों को एक मज़ेदार शब्द दोहराने को मिल गया था।

"यहाँ अब कभी भोजन करने न आना! अपनी वाहियात चीज़े अपने साथ ही लेते जाओ। यह लो!"

लेफ्टीनेंट कुछ वस्तुयें ऊपर छोड़ आया था एक छड़ी, दफ्ती का कालर और नोटबुक, ये सभी अब सीढ़ियों को भड़भड़ाते उतरे। लेफ्टीनेंट अंतिम सीढ़ी पर रुक गया था, उसने सिर उठा कर मुट्ठी भाँजी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, बाईं आँख के नीचे रक्त दिखाई पड़ने लगा था।

"जरा ठहरो, ससुरी! मैं अभी पुलिस में तुम्हारी रिपोर्ट करने जाता हूँ। आह! आह यह होटल भले आदमियों को लूटने का अड्डा है।"

"क्यों अपनी चमड़ी उधड़वाना चाहते हो।" आर्सने ने तेज़ पड़ते हुये कहा। वह अपने कंधे से लेफ्टीनेंट को ढकेल रहा था।

"भाग जा सुअर! तुझे एक अफसर पर हाथ छोड़ने का क्या अधिकार है?" लेफ्टीनेंट ने कहा—"मैं सब कुछ जानता हूँ। तुम उनको भी यहाँ टिका लेती हो, जिनके पास पासपोर्ट नहीं होता। चुराई हुई चीज़ें तुम्हारे पास आती हैं। तुम वेश्या—"

इस मौके पर आर्सने ने लेफ्टीनेंट को पीछे से पकड़ कर जो झटका दिया, तो वह दोनों दरवाज़े से बाहर थे। दरवाज़ा झटके से भिड़ गया था। दोनों सड़क पर गेंद की भांति लुढ़क रहे थे और फिर एक मधुर स्वर सुन पड़ा: 'वेश्यागृह!'

एक दिन प्रातःकाल, जैसा कि पहले होता था, किसी भी फुलवारी से एक सुन्दर पुष्प लाकर शोकाकुल लेफ्टीनेंट ग्रता के सम्मुख उपस्थित हुआ। उसका मुख भकित प्रतीत होता है, उसकी आँखों के गड्ढों के

चारो ओर कुछ कालिमा-सी है, माथा पीला है, कपडो से धूल झाडी नहीं गई है, उसके बालो में पख लगे हैं। समझौता होने में समय लगता है। अन्ना फ़ीडरॉवोवना अभी अपने प्रेमी के दु:ख-प्रकाशन को पर्याप्त नहीं समझती। इसके सिवा उसके क्रोध का यह भी कारण है कि लेफ्टीनेंट तीन रात्रि उससे अलग रहा है। कहाँ रहा है, यह वह नही जानती।

"क्या! यह प्रियतमे अन्ना कौन है, ज़रा मुझे पता तो लगे," मालकिन ने उसकी बात काटते हुये कहा—"किसी राह चलते की मै 'अन्ना प्रियतमे' नही हो सकती।"

"मै केवल इतना जानना चाहता हूँ कि मै 'प्रासकोविया, अवस्था चौंतीस वर्ष,' का क्या पता लिखूँ, यहाँ तो कुछ नहीं लिखा है।"

"लिख लो गुदडी बाज़ार और वही अपना नाम भी लिखो। तुम दोनों की जोडी खूब फबेगी। और नही तो अपने लिये मामूली सराय का पता लिख लो।"

'कुतिया,' लेफ्टीनेंट मन में सोचता है, पर प्रकट में वह केवल एक ठंडी साँस लेता है—"तुम आज बहुत व्यथित प्रतीत हो रही हो, प्रियतमे अन्ना!"

"व्यथित हूँ! खैर, मैं चाहे कुछ भी होऊँ, पर मैं इतना तो कह सकती हूँ कि मैं ईमानदार हूँ और अपनी मेहनत से कमाती खाती हूँ। तुम लोग मेरे सामने क्यो आ जाते हो, बदज़ातो!" उसने बच्चों को झुडक कर कहा, और अचानक खट-खट कर कलछी आडका और एडका की खोपडियों पर उतरी। लडके मिनमिनाने लगे।

"मेरे व्यापार पर दैवी प्रकोप है और मुझ पर भी।" मालकिन ने क्रोधित होकर कहा—"जब मै अपने पति के साथ रहती थी, मुझे पता तक न था कि शोक किस बला का नाम है। पर आजकल सभी दरबान शराब पीते हैं और लौंडियाँ चोर होती हैं। ओफ! ऐ बदज़ातो! अरे प्रोसका को ही देखो यहाँ दो दिन भी न रही थी कि बारह नम्बर के कमरे वाली के मोज़े उसने गायब कर दिये। और जो है वे शराब-खानो में दूसरो के धन के बल पर जाते है और काम करने के नाम पर तिनका भी नहीं हिलाते।"

लेफ्टीनेण्ट भली-भाँति जानता था, अन्ना का सकेत किधर था, पर

तर कर दिया था। उसे कुछ आशा हो चली थी। उसी समय दरवाज़ा खुला और आर्सने ने बिना तीन पट्टी वाला टोप उतारे प्रवेश किया। वह अल्बानियन खोजा प्रतीत होता था। अन्ना फ्रीडरीखोवना के साथ उसका ऐसी स्थिति का यह कम से कम चालीसवाँ मौका था। बीच-बीच में उसे शराब पीने की सूझती है, जब कि मालकिन उसे स्वयं पीट कर सड़क पर निकाल देती और उसकी तीन पट्टी वाली (पदचिह्न) छीन लेती है।

तब आर्सने सफेद समूर का टोप पहिन कर और आँखों पर धूप का चश्मा लगा कर होटल के सामने स्थित शराबखाने में मदिरा पीकर मतवाला हो जाता है और अंत में 'मुझसे कोई मतलब नहीं' कह कर अन्ना के प्रेम की दुहाई देता है और लेफ्टीनेंट को मार डालने की कसम खाता है। जब उसका नशा उतरता, तो वह 'सर्बिया' वापस जा कर मालकिन के चरणों पर सिर रख देता। और वह फिर पुरानी नौकरी पर उसे बहाल कर देती, क्योंकि इस बीच उसने एक नौकर रखा था, वह शराब पी कर झगड़ बैठा और उसे पुलिस पकड़ ले गई।

"तुम—क्या तुम स्टीमर से आ रहे हो?" अन्ना फ्रीडरीखोवना ने पूछा।

"हाँ, मैं आधे दर्जन यात्री लाया हूँ। उन लोगों को जैकब के पंजे से निकालना सहज न था। वह उन्हें अपने होटल की ओर लिये जा रहा था, जब मैंने उनके पास जा कर कहा, 'आप लोग जहाँ चाहिये जायँ, पर चूँकि आप इस स्थान से परिचित नहीं हैं, इसलिए मैं साफ-साथ आपसे कह देना चाहता हूँ कि आप लोग कृपया इस आदमी के साथ न जावें। गत सप्ताह इसके होटल में एक यात्री भोजन में धतूरा मिला कर लूट लिया गया था।' इस प्रकार मैंने उन्हें फाँस लिया। इसके बाद मुझे जैकब मिला था। उसने कहा है, 'याद रखना आर्सने मैं तुम से कभी निपट लूँगा।' पर जब वैसा मौका आयगा, तो मैं स्व उसे समझ लूँगा।"

"ठीक है," मालकिन ने बात काटते हुये कहा—"मुझे तुम्ह जैकब की रत्ती भर भी परवा नहीं है। तुमने समझ लेने की बात दी, यही बहुत है।"

"नहीं, मैं उससे इस मामले में अब बिना समझे हरगिज़ मानूँगा। अच्छा, इन यात्रियों का कौन-सा कमरा दिया जाये?"

"मूर्ख ! तू कुछ नहीं कर सकता। उन्हें नम्बर दो कमरा दो।"

"सबको, एक ही कमरा ?"

"मूर्ख, सबको एक नहीं, तो क्या हर एक को दो दो । हाँ, सब को एक कमरा। तीन चटाइयाँ वहाँ ले जाकर डाल दो और उनसे कहो कि वे सोफे पर लेटने को धृष्टता न करें। इन यात्रियों के कपड़ों में सदा चीलर पड़े रहते हैं। जाओ !"

उसके चले जाने के बाद लेफ्टीनेंट ने दबी और मीठी ज़बान में कहा—"प्रियतमे अन्ना, मुझे आश्चर्य होता है यह देख कर कि तुम उसे टोप पहिने कमरे में आने देती हो ! एक तो तुम स्त्री हो और दूसरे मालकिन—दोनों कारणों से उसकी धृष्टता अक्षम्य है। मैं रिज़र्व सेना में एक अफसर हूँ और वह कभी मामूली सिपाही रहा है। बात ज़रा खटकती है।"

पर अन्ना फ्रीडरीखोवना एकदम बमक उठी "जिस चीज़ का तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं, उसमें तुम व्यर्थ टाँग क्यों अड़ाते हो ? अफसर हूँ ! तुम्हारे ऐसे कितने ही अफसर भटियारखानों में पड़े रहते हैं। आर्सेने कामकाजी पुरुष है। वह अपनी रोटी स्वय कमाता है . न कि तुम्हारी.. । भागो यहाँ से हरामज़ादो ! मेरे ऊपर हाथ क्यों रखते हो ?"

"हमें कुछ खाने को दो।" आडका गरज कर बोला।

"हमें कुछ खाने को दो.. ।"

इसी बीच भोजन तैयार हो गया। अन्ना फ्रीडरीखोवना ने तश्तरियाँ मेज़ पर सजायीं। लेफ्टीनेण्ट बड़े ध्यान से रजिस्टर देखने लगा। वह अपने कार्य में पूर्णत तल्लीन था।

"आओ, खाना खाने !" मालकिन ने अचानक उसे आमंत्रित किया।

"नहीं, धन्यवाद अन्ना प्रियतमे ! तुम्हीं खाओ। मुझे भूख कम लगी है।" लेफ्टीनेट ने बिना मुड़े कहा, जैसे उसे काम से बिलकुल छुट्टी न थी।

"तुम से जो कहा जाता है सो करो । यह भी अपने को कुछ समझने लगे, उँह, इधर आओ।"

"आया, अभी आया। मैं अंतिम पृष्ठ समाप्त कर रहा हूँ। . स्थान निवासिक को सार्टिफिकेट । लो, मैं आ गया, मुझे काम करने में इतना मज़ा आता है।" लेफ्टीनेंट ने उठ कर हाथ मलते हुये कहा।

लेखक—अलैकजेण्डर कुप्रीन]

"हूँ। तुम इसे काम कहते हो।" मालकिन ने भर्त्सनापूर्ण स्वर में कहा—"अच्छा, बैठो।"

"प्रियतमे अन्ना, बस एक ।"

"उसके बिना भी तुम्हारा काम चल सकता है।"

पर चूँकि शान्ति स्थापित हो गई थी, इसलिये अन्ना फ्रीडरीखोवना ने एक शीशे का गिलास आलमारी से निकाला, जिसमें उसका ससुर पानी पिया करता था। आडका तरकारी अपनी तश्तरी भर में फैला कर अपने भाई को चिढ़ा रहा था कि उसे अधिक तरकारी मिली। एडका चिढ़ कर चिल्लाने लगा—"आडका को ज्यादा मिली है। तुमने उसे—।"

खट। एडका के सिर पर कलुछी पड़ी। अन्ना फ्रीडरीखोवना इस भाँति वार्त्तालाप में तल्लीन हो गई, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

"मुझे कोई और मनगढ़न्त घटना सुनाओ। मैं दावे के साथ कहती हूँ कि तुम किसी दूसरी स्त्री के साथ रहे थे।"

"प्रियतमे अन्ना।" लेफ्टीनेंट के स्वर में उपालम्भ था। फिर उसने खाना बन्द कर अपने दोनों हाथ अपनी छाती से लगाये, एक हाथ में काँटा था, जिसमें तरकारी का एक टुकड़ा लगा हुआ था। "मैं... ओह, तुम मेरे विषय में कितना कम जानती हो। मैं अपना सिर काट डालूँगा इसके पूर्व कि कोई ऐसी घटना घटे। जब अंतिम बार मैं यहाँ से चला, तो मेरा हृदय क्षोभ और ग्लानि से भरा था। मैं सड़क पर चलता जाता और मेरी आँखों से आँसू झरते जाते। हे परमेश्वर, मैंने सोचा, उस स्त्री का अपमान मुझसे कैसे हुआ केवल जिसे मैं प्रेम करता हूँ, जिसके प्रेम में मैं पागल ।"

"तुम बातें बनाने में बड़े चतुर हो," मालकिन ने संतुष्ट हो क[illegible] टोकते हुये कहा, पर अभी उसका सन्देहपूर्ण रूप से दूर न हुआ था।

"तुम्हें मेरी बात का विश्वास नहीं है।" लेफ्टीनेंट ने एक दी[illegible] नि:श्वास छोड़ते हुये कहा—"हाँ, मैंने ऐसा कार्य ही किया है। प्रत[illegible] रात्रि को मैं तुम्हारी खिड़की के नीचे आकर ईश्वर से जो प्रार्थना क[illegible] था, उसे वही जानता है।" लेफ्टीनेंट ने अचानक गिलास खाली [illegible] दिया और रोटी का एक टुकड़ा खाया, फिर भरे मुँह और पानी च[illegible] हुई आँखों से वह कह रहा था "मैं सोचता था कि यदि इस[illegible] में आग लग जाये, अथवा तुम पर डाकू आक्रमण कर दें, तो मैं

कर सकता हूँ कि तुम्हारे लिये ..मै जान तक दे सकता हूँ। आह ! तुम्हारी सेवा के बिना मेरा जीवन व्यर्थ है । मेरे दिन गिने हुये हैं ।'

इसी बीच मालकिन ने अपना मनीवैग टटोला ।

"भाग जाओ," उसने इठलाते हुये कहा—"आडका, यह लो एक बोतल बियर का दाम, वासिली वासिलिख के यहाँ से लाना, पर उससे कह देना कि शराब बिलकुल ताज़ी रहे । जल्दी करो ।"

नाश्ता समाप्त हो गया था, सारी बियर पी ली गई थी, जब खडिया और रोशनाई से सना रोमका वहाँ आया । द्वार पर खडा हुआ इधर-उधर क्रोधित हो कर देखने लगा । फिर उसने बस्ता भूमि पर फेंक दिया और चिल्लाने लगा—

"ठीक है ! तुम लोगो ने मेरे आने के पहले ही सब कुछ खा डाला है । मुझे जोरों की भूख लगी है ।"

"मेर पास थोडा-सा बच रहा है । पर मै तुम्हें नहीं दूँगा ।" आडका ने उसे दूर से ही अपनी तश्तरी दिखाते हुये कहा ।

"देखो माँ, आडका मुझे चिढा रहा है, उसे तुम ।"

"चुप रहो !" अन्ना फ्रीडरीखोवना चिल्लाई—"दिन-रात मिनमिनाना ही तुम्हारा काम है । लो, इससे कुछ ले कर खा लो ।"

"हाँ, दो पेंस ! तुम और वैलेरियन इवालिख तो मालपुआ उडाओ और मैं स्कूल भेज दिया जाऊँ । मेरी यहाँ कुछ भी कद्र नहीं होती ।"

"भाग जाओ !" अन्ना इतनी ज़ोरों से चीखी कि रोमका एकदम भाग खडा हुआ, पर भागते समय वह अपना बस्ता उठा ले जाना न भूला । अचानक एक विचार उसके मस्तिष्क में आ गया था—क्यों न वह अपनी कुछ पुस्तकें गुदडी बाज़ार में बेच दे ? द्वार से कुछ दूर पर उसे उसकी बडी बहिन अलिछ्का मिली, उसकी बाँह में चिकोटी काट कर वह भाग गया । अलिछ्का कमरे में बडबडाती हुई घुसी—"माँ ! रोमका से कह दो, मुझे चिकोटी न काटा करे ।"

लडकी की आयु तेरह वर्ष की थी, पर अभी से उसके अंग-प्रत्यंग में यौवन झलक रहा था । उसकी सुन्दर काली आँखों में अब बचपन का आभास नहीं पाया जाता । उसके ओठ बडे, लाल और चमकीले थे । उसके ऊपरी ओठ पर दो हसीन बना देने वाले तिल भी थे । पुरुष उसे चाकलेट देते और अपने कमरों में बुला ले जाते । वहाँ वे उसका चुम्बन करते और उससे दिल्लगी की बातें करते । वह इस विषय में

अब पूर्ण युवती की-सी जानकार रखती थी, पर वह शर्माती नहीं। बस, अपनी बड़ी काली अलकों को थोड़ा-सा झुका लेती। उसकी मुस्कराहट में अनोखापन, नम्रता, फिर भी कामुकता का पुट रहता। कुछ ऐसा प्रश्न उसमें निहित रहता 'और इसके बाद क्या?' उसकी सबसे अधिक यूजीनिया से पटती। यूजीनिया बारह नम्बर के कमरे में रहती, किराया देने में कभी देर नहीं करती। दोहरे बदन की है, उसे एक लकड़ी का व्यापारी रखे हुये है, पर खाली दिनों में वह राह चलते प्रेमियों को भी आमन्त्रित करती थी। अन्ना फ्रीडरीखोवना की दृष्टि में उसका बड़ा ऊँचा स्थान था, क्योंकि उसके विषय में वह कहती "यदि यूजीनिया पूर्ण रूप से आदरणीय जीवन नहीं व्यतीत करती, तो क्या हुआ, वह स्वतन्त्र स्त्री तो है ही।"

यह देखकर कि नाश्ता समाप्त हो चुका है, अलछिका मुस्कराई और ज़रा बनती हुई बोली—"आह! तुम लोग खा-पी चुके। माँ, क्या मैं यूजीनिया निकोलेवना के यहाँ जाऊँ?"

"जहाँ चाहो, जाओ!"

"ओ हो हो?"

वह चली जाती। नाश्ते के पश्चात् कमरे में शान्ति विराज रही थी। लेफ्टीनेंट की प्रेम से सनी बातें विधवा के कानों में प्रवेश कर रही थीं और लेफ्टीनेंट उसका घुटना मेज़ के नीचे दबा रहा था। भोजन और शराब से मालकिन भी चमक उठी। उसने अपने कंधे को लेफ्टीनेंट के कंधे से सटा दिया, फिर उसे धीरे से धक्का देकर लजाकर हँसने लगी।

"हाँ वैलेरियन! तुम निर्लज्ज हो! बच्चों के सामने!"

आउका और एडका आँखें फाड़ कर, मुखों में अँगुलियाँ दिये हुये उनकी ओर देखने लगे। अचानक उनकी माँ उन पर टूट पड़ी।

"शैतानो, ज़रा बाहर घूम आओ। सदा घर में घुस कर बैठे रहना। भाग जाओ!"

"पर मैं बाहर नहीं जाना चहता," आउका गरजा।

"मैं नहीं।"

"मैं अभी तुम्हें नहीं का मज़ा चखाऊँगी। खैर, ये आधी-आधी पेनी ले जाओ, इससे मिठाई खरीद कर खाना।"

उनके जाने के बाद वह द्वार बन्द कर लेती है। फिर वह लेफ्टिनेंट की जाँघ पर बैठ जाती है और वे चुम्बन करने लगते हैं।

"प्यारो, तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो ?" लेफ्टिनेंट ने उसके कान में फुसफुसाया ।

इसी समय द्वार की कुडी खटकी । उन्हे द्वार खोलना पडा । एक आँख वाली नई लम्बी नौकरानी उनकी ओर देखती हुई भरे स्वरमें बोली "बारह नम्बर वाले चाय का समोवर, चाय और चीनी चाहते हैं ।"

अन्ना फ्रीडरीखोवना ने ये सब चीज़े उसे दे दी। सोफा पर पडा हुआ लेफ्टीनेंट अँगडाई लेकर कहने लगा—' अन्ना प्रिये, मैं ज़रा विश्राम करना चाहूँगा । क्या कोई कमरा खाली है ? यहाँ तो जब देखो तब लोग द्वार खटखटा दिया करते है ।"

केवल पाँच नम्बर वाला कमरा खाली था । वही वे गये । कमरा लम्बा, पतला और अन्धकारमय था, खिडकी भी केवल एक थी। एक बिस्तर, एक दराज़, एक गया-गुज़रा पानी रखने का टब और एक कमोड, बस कमरे में इतना ही फर्नीचर था। मालकिन और लेफ्टीनेंट फिर चुम्बन-क्रिया आरम्भ करने लगे ।

"प्रियतमे अन्ना, यदि तुम मुझपे प्रेम करती हो, तो एक पैकेट 'प्लेसिर सिगरेट' मँगाओ, दाम छ कोपेक हैं ।" लेफ्टीनेंट ने कपडे उतारते हुये तीर फेंका ।

"इसके बाद—।"

+   ×   ×

बसन्त में सध्या जल्दी समाप्त हो जाती है, रात्रि आ गई थी। खिडकी से नीपर नदी पर चलते हुये स्टीमरों की सीटियों का स्वर कभी-कभी सुन पडता था और कभी कभी आ जाती थी भूमते फूलों की मादक गन्ध । नल से टब में धीरे-धीरे पानी गिर रहा था । इसी समय द्वार की कुडी खड़की ।

"कौन है ? कौन ऐसा कुचेला मुझे तङ्ग कर रहा है, ' अन्ना फ्रीडरीखोवना बटबडाई । उसकी निद्रा भङ्ग हो गई थी। वह नगे पैर ही बिस्तर से उठ खडी हुई और जब उसने द्वार खोला, तो वह अत्यन्त क्रोधित प्रतीत हो रही थी—"क्यो, तुम क्या चाहते हो ?"

लेफ्टीनेंट शीफेविच ने अपनी शिष्टता प्रदर्शित करने के लिये कम्बल से सिर ढँक लिया ।

"एक विद्यार्थी एक कमरा चाहता है । ' आसंने द्वार के पीछे से दबी ज़बान में कहा ।

"एक विद्यार्थी ? उससे कह दो कि केवल एक कमरा खाली है, जिसका किराया दो रूबल है। वह अकेला है, या उसके साथ कोई स्त्री है ?"

"अकेला।"

"तो उससे कह दो कि पासपोर्ट और किराया पहले ही दे दे। मैं इन छात्रों से भलीभाँति परिचित हूँ।"

लेफ्टीनेण्ट ने शीघ्रतापूर्वक कपड़े पहिने। उसे ऐसा करने में दस सेकंड से अधिक समय न लगा। अन्ना फ्रीडरीखोवना ने जल्दी से बिस्तर ठीक किया। आर्सेने लौट आया था।

"उसने किराया पहले ही दे दिया है।" उसने शोकपूर्ण स्वर में कहा—"और यह रहा उसका पासपोर्ट।"

मालकिन बाहर निकल आई। उसके बाल बिखरे हुये थे और एक लट उसके मस्तक पर भी आ गई थी। तकिये की चुनन के दाग उसके अरुण गालों पर पड़े थे। उसके नेत्र अस्वाभाविक रूप से चमक रहे थे। उसके पीछे छाया की भाँति लेफ्टीनेण्ट भी उसने कमरे में चला गया।

छात्र सीढ़ी पर प्रतीक्षा कर रहा था। वह युवा नहीं कहा जा सकता था। वह इकहरे बदन का था। उसके बाल मुलायम थे, पर उसका मुख लम्बा और पीला हो चला था। इस प्रकार वह चारों ओर दृष्टि फेर रहा था, जैसे वह किसी कोहरे के भीतर से देखने की चेष्टा कर रहा हो। जब मालकिन उसके पास से गुजरी, तो उसने उसे झुक कर सलाम किया। अन्ना लज्जावश मुस्कराई और उसने अपने ब्लाऊज का ऊपरी बटन बन्द किया।

"मैं एक कमरा चाहता हूँ।" उसने धीरे से कहा। उसका साहस छूट रहा था—"मुझे यहाँ से चला जाना है। पर मुझे यदि मोमबत्ती, कलम और दावात मिल जाय तो बहुत अच्छा हो।" उसे कमरा दिखाया गया।

"बिलकुल ठीक है।" उसने कहा—"इससे अच्छे की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। बस, मेरे लिये कलम, दावात ले आओ।" उसे चाय अथवा पलंग की चादर की आवश्यकता न थी।

(३)

मालकिन के कमरे में लैम्प जल रहा था। अलिछ्का खिड़की पर बैठी हुई नदी के जल की ओर देख रही थी, जिस पर पड़ता हुआ विद्युत प्रकाश दृश्य को अत्यन्त रमणीक बना रहा था। उसके कपोल उस समय जल रहे थे और आँखें थकी हुई थीं—उनमें जल भरा था। सुदूर में उसे किसी वाद्य-यन्त्र का मधुर संगीत सुनायी पड़ रहा था।

वे चाय पी रहे थे। आड़का और एड़का अपने प्यालों में काली रोटी के टुकड़े डाल रहे थे, इस प्रकार वे दलिया का मजा लेना चाहते थे। थोड़ी देर में ही उन्होंने उससे अपने मुँह सान लिये थे। वे उसमें बुदबुदे उठाते और कभी-कभी रोटी के टुकड़े छिटक कर उनकी नाक पर पड़ते। रोमका उसी समय वहाँ आया था। उसकी एक आँख काली पड़ गई थी। वह चाय तेज़ी से चप-चप कर पी रहा था। लेफ्टीनेण्ट ने अपना वास्कट खोला और सोफे पर लेट गया।

"ईश्वर को धन्यवाद है, सारे कमरे किराये पर उठ गये।" अन्ना फ़ीडरीखोवना ने मद्धिम स्वर में कहा।

"यह मेरे स्पर्श का फल है।" लेफ्टीनेण्ट ने कहा—"जैसे ही मैं आया, सब काम ठीक हो गया।"

"हूँ, अच्छा कोई दूसरी गप्प सुनाओ।"

"अरे, तुम इसे मज़ाक समझती हो; पर सचमुच मेरे स्पर्श में बड़ा प्रभाव है। मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ। मेरी पल्टन में कप्तान मुझे अपने पास बैठाता था। ओफ! तब लोग कितने गज़ब के खिलाड़ी थे। वही कप्तान, जब वह तुर्की के युद्ध के समय जमादार ही था, एक बार बारह हजार रूबल जीता था। किस्सा यह था कि हमारी पल्टन बुखारेस्ट आई थी। अफसरों के पास रुपया बहुत था, पर व्यय करने का उनके पास कोई साधन न था—वहाँ औरतें तो थीं। तब ताश का खेल आरम्भ हुआ। अचानक उसका पाला एक चालबाज़ से पड़ गया। वह पत्तों को ऐसा पहिचाने हुये था कि . ।"

"एक क्षण ठहरो। मैं अभी आई।" मालकिन ने टोक कर कहा—"मैं जरा एक तौलिया देती आऊँ।"

वह बाहर चली गई। लेफ्टीनेण्ट दबे पैर अलिछ्का के पास आया और उस पर झुक गया। वह उस समय कितनी सुन्दर प्रतीत हो

"तुम क्या सोच रही हो, अलिछका—कदाचित् मुझे कहना चाहिये, किसके विषय में ?" उसने मधुर स्वर में कहा।

वह उससे दूर हट गई। पर उसने शीघ्रतापूर्वक गर्दन पर से उसके बाल हटाये और गर्दन का चुम्बन किया। उसकी पतली गर्म गर्दन की सुगन्ध का उसने भरपूर आस्वादन किया।

"मैं माँ से कह दूंगी।" अलिछका ने कहा, पर वह यथास्थान खड़ी थी।

द्वार खुला। अन्ना फ्रीडरीखोवना लौट आई थी। तत्काल ही लेफ्टीनेण्ट बोलने लगा, यद्यपि उससे अस्वाभाविकता प्रकट हो रही थी।

"सचमुच, अपने प्रियतम या मित्र के साथ नौका-विहार करना कितना और, अन्ना प्रियतमे, तो वह कप्तान छः हज़ार रूबल हार गया। अन्त में मैंने उसके कान में एक बात कही। उसने उससे कहा—'देखो, यदि हम इस ताश की जोड़ी को एक कील से मेज पर जड़ दें, तो इसमें तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं होगा ?' तब वह आदमी बगलें झाँकने लगा। कप्तान ने पिस्तौल निकाल कर कहा—"नीच कुत्ते! खेलता है कि मैं तेरे सिर से गोली पार कर दूँ!" फिर खेल हुआ। चालबाज़ यह न जानता था, कि उसके पीछे एक बड़ा शीशा लाकर रख दिया गया था, उसमें कप्तान उसके सारे पत्ते देख लेता था। इस प्रकार कप्तान ने न केवल अपना हारा हुआ धन ही वापस लिया, बल्कि ग्यारह हज़ार पौण्ड ऊपर से हथिया लिये। उसने कील सोने से मढ़वा ली और अब वह उसे अपनी घड़ी की चेन के साथ पहिनता है।"

(४)

इस समय छात्र पाँच नम्बर वाले कमरे में बिस्तर पर बैठा था। उसके कमोड पर एक मोमबत्ती और एक पृष्ठ सफेद कागज़ रखा था। छात्र तेजी से लिख रहा था। वह क्षण भर के लिये रुका, पर सिर हिला कर वह फिर लिखने लगा। उसने दावात में दूर तक कलम डुबो दी, फिर कलम से मोमबत्ती का बहता हुआ मोम ठीक किया और निब की नोक के मिश्रण को लौ में कर दिया। चिट चिट करता हुआ वह चारों ओर फैल गया। इससे छात्र को अपनी बाल्यावस्था का स्मरण हो आया। अपने नेत्र सकुचित कर वह मोमबत्ती की ओर देखने लगा। उसके ओठों पर एक हलकी मुस्कराहट फैल गई। फिर अचानक उसने सिर

हिलाया, जैसे अभी उसकी निद्रा भग हुई हो। इसके पश्चात् अपने नीले ब्लाऊज की बाँह पर निब पोंछ कर उसने लिखना पुन. आरम्भ किया—

"जो कुछ मै कह रहा हूँ, उसे उनसे कह दीजियेगा। वे मुझे तब भी समझेंगे इसमे मुझे संदेह है, पर कम से मुझे अपनी स्थिति तो स्पष्ट कर ही देनी है। एक बात अत्यन्त आश्चर्यजनक है। यह मै आपको पत्र लिख रहा हूँ, जब मै भली-भाँति जानता हूँ कि दस या पन्द्रह मिनटो में मै आत्महत्या कर लूँगा—और यह विचार मुझे भयभीत करने में असमर्थ है। पर जब वह भारी भरकाम शरीर वाला कर्नल मुझ पर बमकने लगा, तो मेरा साहस भग हो गया। जब उसने चिल्ला कर कहा कि मेरा हठ अर्थहीन ही नही, हानिकारक भी था, तो मैने भी उसे सब बता दिया। मै मृत्यु से नही डरता, पर उस वृहत्ताकार कर्नल से मैं भयभीत हो गया। कर्नल अपने पेशे के गुणों का महत्व जानता था। चीखना, चिल्लाना, डराना उसने खूब सीखा था। और उसने मुझ मे एक डरपोक—शीघ्र ही प्रभावित हो जाने वाला व्यक्ति देखा। तुम एक ही दृष्टि मे समझ सकते हो कि कौन कैसा है, विशेष वार्त्तालाप की भी आवश्यकता नहीं पडती।

"हाँ, मैं स्वीकार करता हूँ कि जो मैने किया, वह न केवल अनुचित था, बल्कि घृणास्पद भी था। पर मै करता ही क्या? मुझे भय है कि यदि वह घटना दोहराई जाये, तो मै फिर उसी कमज़ोरी का शिकार बनूँगा। पर मुझे शोक के साथ कहना पडता है कि इन सगदिलो का सामना मुझसे नहीं होता। जिन्हें अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास होता है, यद्यपि वे मूर्ख होते हैं, पर दुनिया से वे अपना काम निकाल लेते हैं। क्या आप जानते हैं कि मैं मोटे पुलिस के सिपाहियों, पीटर्सबर्ग के बदसूरत कुलियों, पत्र-पत्रिकाओं के टाइपिस्टों, मजिस्ट्रेटो के क्लर्को और नाक भौंह चढाये हुये स्टेशन मास्टरो से कितना सहमा रहता रहता हूँ? एक बार मुझे थाने पर अपने हस्ताक्षर की शिनाख्त करानी पडी। दारोगा मोटा-तगडा, काली मूँछों वाला बदसूरत व्यक्ति था। जब वह प्रश्न करता, तो मेरे होश-हवास उड जाते, क्योंकि मेरे सहज से सहज उत्तर को वह न समझने का ढोंग रचता और अपनी ही भोंडी बातो पर अडा रहता। उससे मैं इतना भयभीत हो उठा था कि मुझे प्रतीत हो रहा था कि मेरी बोलती बद हो रही थी।

"पर इसका दोष मैं किसके सिर मढ़ूँ ? मैं तुम्हें बताता हूँ। मेरी माता! मेरी आत्मा को कलुषित बनाने की सारी जिम्मेदारी उस पर है। यदि मैं आज कायर हूँ तो इसका कारण केवल यही है कि मेरी माँ ने मुझे कुछ और बनने का अवसर ही नहीं दिया। युवावस्था में ही वह विधवा हो गई थी और बाल्य-काल की जो क्षणिक स्मृति मेरे मस्तिष्क में है, वह यही कि हम दूसरे पुरुषों के घर जाते थे, वहाँ हम को झूठी हँसी हँसनी पड़ती, लोगों के ताने सहने पड़ते, दूसरों के इशारों पर चलना पड़ता। अपने आश्रयदाताओं के हाथों को मुझे चूमना पड़ता—उनमें दोनों ही होते, स्त्री और पुरुष। मेरी माँ कहती रहती कि मुझे अमुक वस्तु प्रिय नहीं है, अमुक वस्तु मुझे नहीं पचती, जब कि उसकी मंशा यही रहती थी कि इस प्रकार उन वस्तुओं को गृहस्वामी के बालकों की भाँति न खाने में ही हमारी भलाई थी। नौकर हम पर हँसते। मुझे वे कुबड़ा कहते थे, क्योंकि बचपन से ही मैं ज़रा झुक कर चलता हूँ। मेरी माँ को मेरे सामने ही वे रखैल या भिखारिन कहते। और उन दयालु हृदय पुरुषों को हँसाने के लिये माँ अपना फटा हुआ चमड़े का सिगरेट केस अपनी नाक के पास ले जाती और उसे मोड़ कर कहती—'ऐसी मेरे लेवाउशका की नाक है।' वे हँसते और मुझे अपने और अपनी माँ के विचार से चुप रहना पड़ता। मैं उनसे घृणा करता, क्योंकि वे मुझे पत्थर की मूर्त्ति समझते और समय-असमय वे मेरे मुँह के सामने अपने गन्दे हाथ चूमने के लिये कर देते। मैं उनको घृणा की दृष्टि से देखता था, जैसे मैं अभी भी उनसे डरता हूँ। जो सब कुछ पहले ही से जानते हैं, जैसे हृदयों में वक्तृता देने वाले, क्रूर, लाल बालों वाले प्रोफेसरों से जो सदाशयता को अपनी चेरी समझते हैं, फौज में काम करने वाले कर्नलों से, अथवा उन लेडी डाक्टरों से जो कुत्ते पाल रखती हैं, पर जिनका हृदय अत्यन्त कठोर और संगमरमर की भाँति चिकना रहता है, जब मैं उनसे वार्त्तालाप करता हूँ तो मुझे प्रतीत होता है कि मेरे मुख पर घृणात्मक मुस्कराहट है जो मुझे निजी नहीं प्रतीत होती। अपनी मिनमिनाती आवाज़ पर मुझे क्षोभ होता है, क्योंकि उसमें अपनी माँ की ध्वनि प्रतिध्वनि पाता हूँ। ये पुरुष हृदयहीन होते हैं। इनमें आत्मा का अभाव है; इनके विचार दृढ़ हैं, और इसमें ये जानते भी नहीं कि दया किस वस्तु का नाम है।

"सात से दस वर्ष की अवस्था तक मैंने दान से चलने वाले एक स्कूल में शिक्षा पाई। इसमें अध्यापिकाएँ सब उतरे हुये मट्ठे की भाँति तेजहीन थीं और भाँति-भाँति के ऐन्द्रिक रोगो से पीडित रहती थीं, और उन्होने हमारे हृदयो में दयावान अधिकारियो के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर दी। उन्होंने हमें यह भी सिखलाया कि किस प्रकार हम एक पर जासूसी कर दूसरे से कहे, कैसे कुछ विशेष व्यक्तियो से स्पर्द्धा करना सीखें और सबसे आवश्यक शिक्षा जो उन्होंने हमें दी, वह यह कि हम जहाँ तक सभव हो, चुपचाप कार्य करें। इस प्रकार हम बालको ने आरम्भ से ही चोरी आदि बुरे कार्य सीखे। इसके बाद मैं एक दूसरे स्कूल में गया, वह भी दान से ही चलता था। मै छात्रालय में रहता था, बहुधा इस्पेक्टर आकर हमारी छानबीन किया करते। हमने तोतो की भाँति रटना सीखा, तीसरे फार्म में हम सिगरेट पीना जान गये, चौथे में शराब पीना और पाँचवें में वेश्याओं के पास जा कर बुरे रोगों का भुगतना।

"फिर अचानक हमने नई पुकार सुनी। तेज तूफान का सा विचारो का एक बवंडर आया। हमारे मस्तिष्कों ने उन्हें हृदयांकित करने की चेष्टा की, पर मेरी आत्मा तो कब की मर चुकी थी। कुत्ते के कान में जिस प्रकार एक बार किलनियाँ पड जाने पर जल्दी नही हटतीं और हटने पर अपने अडे छोड जाती है, उसी प्रकार हम भी व्याधियो से ग्रसित थे।

"अकेला मै ही नही था जिसकी आत्मा इतनी पतित हो गई थी। मेरे साथियों में से अधिकांश का यही हाल था। आखिर हम ऐसे वातावरण में पले थे जिसमें हमें मजबूरन अपने से बडो का सम्मान करना पडता था। देखने में हम चुप रहते थे, पर हममें अपनेपन की भावना का सर्वथा ह्रास हो चुका था। यह इस युग की ही बलिहारी है जिसमें पवित्रता के आवरण के नीचे सारा पाप दबा पड़ा रहता है, क्योंकि मानव की आत्मा का धीमा हनन ससार के इतर अनेकानेक दु खो से कहीं कष्टदायी है।

"आश्चर्य तो इस बात का है कि जब मै अकेला हूँ, तो मुझे मृत्यु से भी भय नहीं होता। यह मैं जानता हूँ कि ऐसे साहसी विरले ही मिलेंगे। मैं खिडकियों के सहारे पहली मंजिल से पाँचवी मंजिल तक चला गया हूँ और वहाँ से मैंने नीचे से झाँका भी है। मैं समुद्र में

इतनी दूर तक तैरता चला गया हूँ कि मेरे हाथ-पैर जवाब देने लगे हैं और मुझे अपनी पीठ के बल लेटे रह कर अपनी थकान दूर करनी पड़ी है। इसके सिवा और भी कितनी ही घटनायें हैं। पर सौ बात की एक बात यह है कि दस मिनटों में ही मैं आत्म-हत्या कर लूँगा। पर मैं व्यक्तियों से डरता हूँ। जन-समूह मुझे आतंकित कर देता है। जब मैं अपने कमरे से सड़क पर शराबियों को लड़ते देखता हूँ तो मैं भय से पीला पड़ जाता हूँ। रात्रि में बिस्तर पर लेटा हुआ जब मैं एक खाली चौराहे की बात सोचता हूँ, जहाँ कज़्ज़ाकों का एक दल घोड़ों पर दहाड़ता हुआ आता है, तो भय से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं, मेरी अँगुलियाँ काँपने लगती हैं। अधिकांश पुरुषों में कोई विशेषता होती है, उससे मैं वंचित हूँ। उसकी रूप रेखा क्या है, यह भी मैं नहीं जानता। इस परिवर्त्तन के युग में अधिकांश युवकों की मेरी-सी गति है। अपने मस्तिष्कों में हम दासता से घृणा करते थे। हमारी घृणा दृढ़ भित्ति पर स्थित थी, पर नपुंसक के भयानक प्रेम की भाँति वह अर्थहीन थी।

"पर आप सब कुछ समझ जाइयेगा और मेरे साथियों को भी समझा दीजियेगा कि उन्हें मैं प्रेम और श्रद्धा की दृष्टि से देखता हूँ। कदाचित् वे आपके इस कथन का विश्वास कर लेंगे कि मेरी मृत्यु का पूर्ण कारण केवल यही नहीं है कि मैंने अपनी इच्छा के प्रतिकूल उनके हितों पर भयंकर आघात किया था। मैं जानता हूँ कि संसार में विश्वासघाती से बढ़ कर और कोई पापी नहीं होता। यह शब्द जिह्वा से उच्चरित हो कर लोगों के कानों में पड़ता है और व्यक्ति विशेष को जीते जी मार डालता है। यदि आरम्भ से ही मुझे कायरता और नीचता का मूर्खतापूर्ण पाठ न पढ़ाया गया होता, तो आज मेरी यह दशा क्यों होती? आज आत्महत्या की ओर मुझे यही भावना प्रेरित कर रही है। इन भयानक दिनों में मेरे जैसे व्यक्तियों का जीवन-यापन करना कठिन ही नहीं, असंभव है।

"हाँ, मैंने गतवर्ष बहुत कुछ देखा, सुना और पढ़ा है। मैं आपको बताता हूँ, मेरे जीवन में एक ऐसा भी क्षण आया जब ज्वालामुखी की भाँति मैं विस्फोट कर उठा। कल की फिक्र, अभिभावकों के प्रति आदर-भाव, जीवन के प्रति प्रेम और कौटुम्बिक जीवन का शान्तिप्रद सुख। मैं बालकों के विषय में जानता हूँ, जिन्हें असल में शिशु ही कहना चाहिये,

जिन्होने कत्ल होते समय अपनी आँखो पर पट्टी बँधवाना स्वीकार न किया। मैंने स्वय अपने नेत्रो से कितनो को विना 'उफ' किये अत्याचार सहते देखा है। मेरे मस्तिष्क में ऐसी भावना अचानक ही उठी। मुर्गी के अडे से शेर का बच्चा निकला! देखें, उसके सम्मुख कौन ठहर सकता है?

"मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक छठे फार्म का विद्यार्थी भी आज अपने दल की माँगो पर दृढतापूर्वक डटा रहेगा! यह नही कि उसकी हठधर्मी हो, सतत मनन के पश्चात् वह अपना मार्ग निर्धारित करेगा और योरुप के सभी पुलिस सुपरिण्टेंडेंटो के सम्मुख उसका मस्तक नीचा न होगा। यह सच है कि उस छात्र का यह कृत्य हास्यप्रद प्रतीत होगा, पर अपनी आत्मा के प्रति उसके हृदय में श्रद्धा का सूर्य उदय हुआ हुआ है, हमारी जिन भावनाओ का निश्शक दमन किया गया है, वह उनको एक क्षण के लिये भी दबा नही रहने देना चाहता।"

"नौ बजने में आठ मिनट बाकी हैं। ठीक नौ पर मेरा काम तमाम हो जायगा। एक कुत्ता बाहर भौंक रहा है—एक, दो—फिर वह जरा देर के लिये चुप हो जाता है और एक, दो, तीन। कदाचित् जब मेरा प्राणान्त हो जायगा, और मेरे लिये किसी वस्तु का कुछ भी अस्तित्व न रहेगा—नगर, चौराहे, सीटी देते हुये धूम्रपोत, प्रात काल और रात्रि, कमरे, टिक-टिक करती हुई घडियाँ, लोग, जानवर, वायु, अँधेरा और प्रकाश, समय और स्थान और कुछ नहीं है— तब इस 'कुछ नहीं' का भी ध्यान न रह जायगा! कदाचित कुत्ता आज रात को देर तक भौंकता रहेगा, पहले दो बार, फिर तीन बार . ।

"नौ बजने में पाँच मिनट बाकी बचे। एक हास्यप्रद विचार मेरे मन में उठा है। मेरा विचार है कि मनुष्य विद्युत की किरण की भाँति है और अनेक वस्तुओं से बना है। मस्तिष्क में विचार-धारा उठते ही सारा ससार तरगित हो उठता है और कदाचित् मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् उन तरगो की भाँति ही जीवित रहते हैं। सभव है, दूसरों के विचार और स्वप्न हमारे कार्यों पर प्रभाव डालते हो। कदाचित् इस अँधेरे से कमरे में जो व्यक्ति मुझसे पूर्व रह चुके है, वे निर्णय विशेष पर पहुँचने मे मेरी सहायता कर रहे हो और यह भी असभव नहीं कि कल इस कमरे में ठहरा हुआ कोई यात्री अचानक जीवन, मृत्यु और आत्महत्या के विषय में सोचने लगे, क्योंकि मैं अपने विचार यहीं छोडे जा रहा हूँ। आह, मेरा विचार है कि ससार में किसी वस्तु का

पूर्ण नाश कभी नहीं होता। उसी का नहीं जो कहा जाता है; पर उसका भी जो सोचा जाता है। हमारे सारे कृत्य और विचार छोटे सोतों की भाँति है, जिनका पृथ्वी के भीतर अस्तित्व बना रहता है। मेरा विश्वास है कि कितने ही मिल कर उग्र रूप धारण कर लेते हैं और फिर पृथ्वी को फाड कर जीवन की सरिता के रूप में प्रकाशित होते है। जीवन की सरिता कितनी महती है! अभी या कुछ देर बाद यह उस मसाले को बहा ले जायगी, जो मेरी आत्मा के लिये एक दृढ़ प्रतिबंध है। जहाँ कभी एक भभक भर थी, वहाँ महान् वीरत्व का एक आदर्श होगा। क्षण भर में ही यह मुझे एक अज्ञात लोक को ले जायगी और कदाचित् एक वर्ष में ही इस विशाल नगर को एक महान् सरिता की उत्ताल तरगें न केवल ढँक लेंगी, बल्कि इसका नाम-निशान तक मिटा देंगी।

"कदाचित् मैं जो कुछ लिख रहा हूँ, हास्यास्पद है। दो मिनट शेष हैं। मोमबत्ती जल रही है और मेरे सामने घड़ी की सुई बड़ी तेज़ी से चल रही है। कुत्ता अभी भी भौंक रहा है। यदि मेरा कुछ भी अवशेष न रहा तो क्या! पर नहीं, मेरे अंतिम क्षणों का कुछ अंश तो संसार में सदा रहेगा ही, परिणाम में वह चाहे जितना कम हो जाय।

"मिनट की सुई बारह पर पहुँच रही है। अब सभी जान जायेंगे। नहीं, ठहरो। मेरे भीतर कोई अविदित भावना है, जो मुझे उठ कर द्वार बन्द करने को बाध्य करती है। सदा के लिये बिदा। पर एक शब्द और। अवश्य ही कुत्ते का अविदित हृदय मानव हृदय से कहीं अधिक सहानुभूतिपूर्ण होगा, किसी पुरुष के अनुमान मात्र पर ही क्या वे नहीं भौंकते? सीढ़ी के नीचे मैंने जो कुत्ता देखा था, वह भी भौंक रहा है। पर एक क्षण में नई प्रबल वेग-धारायें मेरे

मस्तिष्क से निकल कर बेचारे कुत्ते के मस्तिष्क में प्रवेश करेंगी। फिर वह भयकर आर्तनाद कर उठेगा। विदा, सदा के लिये विदा!"

छात्र ने पत्र पर मुहर लगाई। किसी कारण से दावात को ढक्कन से भली-भाँति बद कर दिया—और अपनी जाकिट की जेब से पिस्तौल निकाली। उसने अपने पैर जमा लिये, आँखे मींच ली। अचानक उसने दोनों हाथों से तेज़ी से पिस्तौल उठा ली और अपने मस्तक के ठीक बीचों-बीच उसे सटा कर घोडा दबा दिया।

"यह कैसी आवाज आई?" अन्ना फ्रीडरीखोवना ने सशंकित हो कर पूछा।

"नवागतुक छात्र आत्म-हत्या कर रहा है," लेफ्टीनेंट ने लापरवाही से कहा—"ये छात्र इतने.."

पर अन्ना बिस्तर से उठ खडी हुई और तेज़ी से पाँच नम्बर वाले कमरे की ओर भागी। कमरे से बारूद की गध आ रही थी। लेफ्टीनेंट मज़े-मज़े में चलता हुआ आया। उन्होंने द्वार के एक छिद्र के भीतर से झाँका। छात्र भूमि पर पडा था।

पाँच मिनटों में ही सराय के बाहर एक भारी उत्कंठित भीड जमा हो गई थी। तंग आकर आर्सने ने उन्हें सीढ़ियों पर से भगा दिया। सराय में भारी चहल-पहल मच गई थी। एक लोहार ने कमरे का द्वार तोडा। दरबान पुलिस को बुलाने दौड़ा, नौकरानी डाक्टर को। थोड़ी देर बाद पुलिस इंस्पेक्टर आया—एक लम्बा, दुबला-पतला युवक जिसके बाल सफेद थे, भौंहों के बाल भी सफेद थे, मूछें भी सफेद थी। वह अपनी पूरी पोशाक में था। उसका चौडा पतलून उसके फौज़ी जूतों को आधा ढँके हुये था। तत्काल ही भीड को चीरता हुआ वह आगे आ खड़ा हुआ और शासन के स्वर में कहने लगा. "सब लोग पीछे हटो! भाग जाओ! मैं समझ नही पाता, आखिर तुम लोग यहाँ क्यों खडे हो? क्या तमाशा है। आप, जनाब! मै आप से एक बार और कहता

हूँ। और वह शिक्षित प्रतीत होता है क्या बात है ? मैं तुम लोगों को पुलिस का अनुशासन स्थापित करने का ढँग दिखलाऊँगा। मित्चैल-शुक, उसका नाम नोट कर लो। हाँ, अब कहाँ भागे जा रहे हो ? मैं—।"

द्वार तोड़ डाला गया। कमरे में अन्ना फ्रोडरीखोवना, पुलिस इन्सपेक्टर, लेफ्टीनेंट और चार बच्चे घुस पड़े। गवाही देने के लिये एक पुलिस का सिपाही और दो नौकर भी गये। सब से पीछे डाक्टर गया। बिस्तर के पास ही एक भूरी दरी भूमि पर पड़ी थी। छात्र भूमि पर औंधा पड़ा था। उसका बाँया हाथ छाती के नीचे दबा था, दाहिना बाहर निकला हुआ था। पिस्तौल एक ओर पड़ी हुई थी। उसके सिर के पास गाढ़े रक्त का ढेर जमा था। उसके मस्तक में था एक गोल छिद्र। मोमबत्ती अभी भी जल रही थी और कमोड पर रखी घड़ी शीघ्रतापूर्वक टिक-टिक कर रही थी।

शुष्क सरकारी शब्दावली में एक घटना का विवरण प्रस्तुत किया गया और मृत छात्र का पत्र उसके साथ नत्थी कर दिया गया ।। दो नौकरों और पुलिस के सिपाहियों ने लाश को सीढ़ी से उतारा। अन्ना फ्रोडरीखोवना, पुलिस इन्स्पेक्टर और लेफ्टीनेंट सीढ़ी के ऊपर स्थित खिड़की से देख रहे थे। एक मोड़ पर लाश का सिर एक नौकर के हाथों से छूट गया और वह सीढ़ी पर खड़खड़ाया—एक, दो, तीन।

"ठीक है, उसकी यही दशा होनी चाहिये।" मालकिन ने नौकरों से चिल्लाकर कहा—"बदमाश को अपने किये का फल मिला ! मैं तुम लोगों को इनाम दूँगी !"

"तुम्हारी रक्त-पिपासा अत्यन्त प्रचण्ड है, श्रीमती सोनमेयर," पुलिस इन्स्पेक्टर ने मूँछ के बाल उमेठते हुये कहा। तिरछी आँखों से वह उसकी ओर देख रहा था।

घर की समस्या

लेखक—मिखेल ज़ोशेको

नागरिकों, उस दिन मैंने एक गाडी-भर ईंटें सडक से जाती देखीं। विश्वास कीजिए, मै अपनी आँखो देखी बात कह रहा हूँ !

मेरा हृदय अपार आनन्द से भर गया, क्योंकि नागरिको, इसका अर्थ यह था कि हम मकान बना रहे हैं। तुम जानते ही हो कि अकारण ही कोई गाडी पर ईंटें नहीं लाद ले जायेगा। इसका तात्पर्य यह था कि कहीं छोटा सा घर बन रहा है—बनना आरम्भ हो गया है।

कदाचित् बीस वर्षों में, अथवा उससे भी कम समय मे, प्रत्येक नागरिक को रहने के लिये एक मकान मिल जायगा। और यदि जनसंख्या बहुत तेज़ी मे न बढी, तो प्रत्येक को दो भी मिल सकते हैं। और फिर तीन की भी आशा हो जायगी। प्रत्येक घर में एक स्नानागार भी होगा।

तो फिर हम शब्द के सच्चे अर्थ में 'रहने' लगेंगे ! हम एक कमरे में सोयेंगे, दूसरे में अतिथियो का आदर सत्कार करेगे और तीसरे में कुछ और ही . । और फिर कमरे हमारे लिये कम पड जायेंगे ! ऐसा स्वच्छन्द जीवन कितना आनन्दमय होगा।

पर इस बीच रहने के लिये हमारे पास स्थान की कमी है। घरों की कमी के कारण यह एक समस्या-सी बन गई है।

उदाहरण के लिये, भाइयो, मैं मास्को में रह चुका हूँ। मुझे मास्को से आये अभी थोडे से दिन हुये हैं। मुझ पर स्वय वह आफत बीत चुकी है !

घर की समस्या

लेखक—मिखेल ज़ोशेंको

नागरिको, उस दिन मैने एक गाड़ी-भर ईंटें सड़क से जाती देखी। विश्वास कीजिए, मै अपनी आँखो देखी बात कह रहा हूँ !

मेरा हृदय अपार आनन्द से भर गया, क्योंकि नागरिको, इसका अर्थ यह था कि हम मकान बना रहे है। तुम जानते ही हो कि अकारण ही कोई गाडी पर ईंटे नहीं लाद ले जायेगा। इसका तात्पर्य यह था कि कहीं छोटा सा घर बन रहा है—बनना आरम्भ हो गया है।

कदाचित् बीस वर्षों में, अथवा उससे भी कम समय मे, प्रत्येक नागरिक को रहने के लिये एक मकान मिल जायगा। और यदि जन-सख्या बहुत तेज़ी से न बढी, तो प्रत्येक को दो भी मिल सकते है। और फिर तीन की भी आशा हो जायगी। प्रत्येक घर में एक स्नानागार भी होगा।

तो फिर हम शब्द के सचे अर्थ में 'रहने' लगेंगे ! हम एक कमरे में सोयॅगे, दूसरे में अतिथियों का आदर सत्कार करेंगे और तीसरे में कुछ और ही . । और फिर कमरे हमारे लिये कम पड जायॅगे !ऐसा स्वच्छंद जीवन कितना आनन्दमय होगा।

पर इस बीच रहने के लिये हमारे पास स्थान की कमी है। घरों की कमी के कारण यह एक समस्या-सी बन गई है।

उदाहरण के लिये, भाइयो, मैं मास्को में रह चुका हूँ। मुझे मास्को से आये अभी थोड़े से दिन हुये हैं। मुझ पर स्वयं वह आफत बीत चुकी है !

लेखक—मिखेल ज़ोशॅंको]

तात्पर्य यह है कि बच्चा प्रतिदिन नहलाया जाता और इसलिये उसे कभी ज़ुकाम तक न हुआ।

पर इस प्रबन्ध में एक गड़बड़ी थी। लोग वहाँ सध्या को नहाने आते थे।

और इस समय के लिये मेरे कुटुम्ब को संकीर्ण आँगन में चला आना पड़ता था।

मैंने उन्हें समझाने की चेष्टा की! "नागरिको," मैंने कहा—"आप लोग केवल शनिवार को नहाया कीजिये, नहीं तो हमें यहाँ रहने में बड़ा कष्ट होता है। हमारी स्थिति पर ज़रा ध्यान दीजिये।"

पर कुल मिला कर वे बत्तीस थे, और एक से एक बढ़ कर शैतान। वे सौगन्ध खा कर मेरी नाक तोड़ देने की धमकी देते।

तब, मैं करता ही क्या? हम पूर्ववत् रहते रहे। कुछ समय पश्चात् मेरी पत्नी की माता देहात से आकर उसी स्नानागार में रहने लगीं। उन्होंने एक खम्भे के पीछे अपना आसन जमाया।

"मैं," उसने कहा, "बहुत दिनों से अपने नाती को खिलाने का स्वप्न देखती रही हूँ। तुम मुझे यह आनन्द पाने से नहीं रोक सकते।"

मैंने कहा "न मैं आपको रोकता ही हूँ। बुढ़िया, करो जो तुम्हें करना हो। उसे खूब खिलाओ! ईश्वर तुम्हारी सहायता करे! तुम टब में पानी भर कर उसमें अपने नाती के साथ ही डुबकी लगा सकती हो।"

पर मैंने अपनी पत्नी से कहा—"सम्भव है कि तुम्हारे दूसरे रिश्तेदार भी आने वाले हों। यदि इसकी सम्भावना हो, तो मुझे साफ़-साफ़ बता दो, इसमें तुम्हारे लिये चिन्तित होने की कोई बात नहीं है।"

उसने कहा—"कदाचित् मेरा छोटा भाई बड़े दिन की छुट्टियों में . ।"

उसके छोटे भाई की प्रतीक्षा किये बिना ही मैंने मास्को खाली कर दिया। मैं अपने परिवार को अब मनीआर्डर द्वारा धन भेजा करता हूँ।

तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार है। तीन सौ रूबल मेरे बैग से ले लो और मुझे कहीं ठहरने का स्थान दो। तीन सप्ताह से मै सडकों पर मारा-मारा फिरता रहा हूँ। मुझे भय है कि मेरा शरीर चूर-चूर हो गया है।"

तो यही हुआ। उन्होंने मुझे भीतर जाने दिया। और मै वहाँ रहने लगा।

पर नहाने का कमरा सचमुच आलीशान था। जहाँ कहीं भी आप पैर रखते, वहीं आपको पत्थर का टब मिलता और पत्थर के ही नल। पर वहाँ बैठने के लिये ज़रा भी स्थान न था। हाँ, यदि कोई टब के किनारे पर बैठना चाहता था तो टब में लुढ़क जाने का डर रहता था।

इस प्रकार तीन सौ रूबल व्यय कर मैंने कुछ टबों के ऊपर काठ के तख्ते रखवा लिया और वहीं रहने लगा।

एक मास के पश्चात् कुछ ऐसा हुआ कि मेरा विवाह हो गया।

और एक नन्हीं, कमसिन सुशीला पत्नी मेरे पल्ले पडी। उसके रहने का भी ठिकाना न था।

मेरा विचार था कि स्नानागार मे रहने के कारण वह मुझे पति रूप में स्वीकार न करेगी और मै पारिवारिक सुख से वंचित रह जाऊँगा, पर उसने इसकी परवाह न कर मुझे ठुकराया नहीं। भौंहे चढ़ा कर उसने बस इतना कहा था—"अरे, भले आदमी भी स्नागारों में रहते है, पर यदि कोई वस न चलेगा, तो हम इसे विभाजित कर लेंगे। जैसे यहाँ रसोई होगी, यहाँ शयन . ।"

मैने कहा "यह विभाजित तो किया ही नहीं जा सकता। पास-पडोस के रहने वाले कभी ऐसा न होने देंगे।"

"सब ठीक है।"

हाँ, तो हम वहाँ वैसे ही रहने लगे।

एक वर्ष के भीतर ही मैने और मेरी पत्नी ने मिल कर एक संतान प्रसव की।

हमने उसका नाम वोलोद्का रखा, और हमारे जीवन में अधिक परिवर्त्तन न हुआ। नहाने के कमरे में हम उसे नहलाते थे और इस प्रकार हमारा जीवन व्यतीत हो रहा था।

और सच पूछो तो इसका फल अच्छा ही हुआ। मेरे कहने का

तात्पर्य यह है कि बच्चा प्रतिदिन नहलाया जाता और इसलिये उसे कभी ज़ुकाम तक न हुआ।

पर इस प्रबन्ध में एक गड़बड़ी थी। लोग वहाँ संध्या को नहाने आते थे।

और इस समय के लिये मेरे कुटुम्ब को संकीर्ण आँगन मे चला आना पड़ता था।

मैंने उन्हें समझाने की चेष्टा की। "नागरिको," मैंने कहा—"आप लोग केवल शनिवार को नहाया कीजिये, नहीं तो हमें यहाँ रहने में बड़ा कष्ट होता है। हमारी स्थिति पर ज़रा ध्यान दीजिये।"

पर कुल मिला कर वे बत्तीस थे, और एक से एक बढ़ कर शैतान! वे सौगंध खा कर मेरी नाक तोड़ देने की धमकी देते।

तब, मैं करता ही क्या? हम पूर्ववत् रहते रहे। कुछ समय पश्चात् मेरी पत्नी की माता देहात से आकर उसी स्नानागार में रहने लगी। उन्होंने एक खम्भे के पीछे अपना आसन जमाया।

"मै," उसने कहा, "बहुत दिनों से अपने नाती को खिलाने का स्वप्न देखती रही हूँ। तुम मुझे यह आनन्द पाने से नहीं रोक सकते।"

मैंने कहा. "न मैं आपको रोकता ही हूँ। बुढ़िया, करो जो तुम्हें करना हो। उसे खूब खिलाओ! ईश्वर तुम्हारी सहायता करे! तुम टब मे पानी भर कर उसमें अपने नाती के साथ ही डुबकी लगा सकती हो!"

पर मैंने अपनी पत्नी से कहा—"सम्भव है कि तुम्हारे दूसरे रिश्ते-दार भी आने वाले हों। यदि इसकी सम्भावना हो, तो मुझे साफ़-साफ़ बता दो, इसमे तुम्हारे लिये चिन्तित होने की कोई बात नहीं है।"

उसने कहा—"कदाचित मेरा छोटा भाई बड़े दिन की छुट्टियों में . ।"

उसके छोटे भाई की प्रतीक्षा किये बिना ही मैंने मास्को खाली कर दिया। मैं अपने परिवार को अब मनीआर्डर द्वारा धन भेजा करता हूँ।

ईमानदार चोर

लेखक—फियोडोर डोस्टोयेवस्की

एक दिन मैं अपना कार्य आरम्भ कर रहा था जब अग्राफिना—मेरी महराजिन, धोबिन और सभी काम करने वाली नौकरानी मुझसे वार्तालाप करने लगी। इससे मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उस समय तक वह इतनी शान्त रहती थी कि इन शब्दों के सिवा कि 'आज क्या भोजन बनेगा?' उसने छः वर्षों में भी कभी कुछ न पूछा था। कम से कम मैंने उसके मुँह से कुछ और नहीं सुना था।

"मैं इसलिये आपके पास आई हूँ," अचानक उसने कहा—"कि "आप छोटा कमरा किराये पर उठा दें।"

"कौन-सा कमरा?"

"वही जो रसोई के पास है।"

"क्यों?"

"क्यों? क्योंकि लोग अपने मकान के खाली भाग को किरायेदारों को देते रहते हैं।"

"और कौन उसे किराये पर लेगा?"

"कौन उसे किराये पर लेगा? अरे, एक किरायेदार!"

"पर ऐ भली औरत, कमरा इतना छोटा है कि वहाँ एक बिस्तर लगाना भी मुश्किल हो जायगा। वहाँ रहेगा कौन?"

"वहाँ रहेगा कौन? वह स्थान सोने के लिये होगा! वह रहेगा खिड़की के पास।"

"ओह, बड़ा सज्जन और अनुभवी पुरुष है। मैं उसका भोजन पकाऊँगी और उससे केवल तीन रूबल मासिक किराया लूँगी।"

बहुत प्रयत्न करने पर कहीं मैं जान पाया कि अधेड़ पुरुष ने किसी भाँति अग्राफिना को इस बात पर राज़ी कर लिया था कि वह उसे मेरे घर में किरायेदार के रूप में रहने दे। फिर अग्राफिना ने यह भार अपने कंधों पर उठा लिया था कि यह कैसे किया जाय, नहीं तो मैं जानता हूँ, उसने मुझे चैन न लेने दिया होता। जब कभी वह किसी बात को नापसन्द करती. तो दो-तीन सप्ताहों तक वह मुँह लटकाये रहती और भोजन भी अच्छा न बनाती, मैं बहुधा कहा करता था कि ऐसी स्त्रियों के सम्मुख दलीलें कुछ नहीं करतीं। जो बात इनके दिमाग़ में चढ़ जाय, बस! पर यदि कभी कोई योजना उसके मस्तिष्क में घर कर लेती, तो उसमें रोड़ा अटकाने का अर्थ यह होता कि काफी समय के लिये उसकी आत्मा कुचल दी जाय और चूँकि मैं अपनी मानसिक शान्ति भंग न होने देना चाहता था, इसलिये मैंने उसका प्रयत्न बिना संशोधन के स्वीकार कर किया।

"पर यह तो बताओ, उसके पास पासपोर्ट है न?"

"इससे आपका क्या अभिप्राय है? हाँ, वह ऐसा-वैसा आदमी नहीं है; और फिर उसने तीन रूबल मासिक देने का वायदा किया है।"

दूसरे दिन नया किरायेदार मेरे घर में आया, पर मुझे इससे प्रसन्नता ही हुई, क्योंकि अभी तक विवाह तो मैंने किया न था, घर भाँय-भाँय करता था। मेरी जान-पहिचान भी कम लोगों से थी और इसलिये मैं यदा-कदा ही बाहर जाता था। लगभग दस वर्षों के एकान्त के बाद मैं अकेलेपन की कमी को अनुभव नहीं करता, पर दस अथवा इससे भी अधिक वर्षों तक अग्राफिना ऐसी स्त्री के साथ एक ही घर में रहना कोई प्रिय विषय न था। इसलिये ऐसी परिस्थिति में मैंने एक किरायेदार के आगमन को शुभ ही समझा।

अग्राफिना सच कह रही थी। मेरा किरायेदार एक अवकाश-प्राप्त सिपाही था, जो मैंने उसके पासपोर्ट को बिना देखे ही समझ लिया। इन लोगों को सूरत से पहिचान लेना सहज भी होता है। उसका नाम यूस्टास इवानिच था। वह सम्भ्रान्त वंश का प्रतीत होता था। हम लोगों में खूब छनने लगी और उसका एक विशेष कारण यह

भी था कि अपने जीवन की बहुत-सी मनोरञ्जक घटनाओं को वह बड़ी खूबी से सुनाता था। मेरे नीरस जीवन में ऐसा परिवर्तन वाञ्छित था। उसके व्यक्तित्व ने मुझ पर प्रभाव भी काफी किया, पर अब मैं उस घटना का वर्णन करने जा रहा हूँ, जिससे यह कहानी सम्बन्धित है।

एक दिन मैं घर पर अकेला ही था यूस्टास और अग्राफिना कार्य-वश कहीं गये थे। अचानक मुझे दूसरे कमरे से कुछ आहट आई। मैं वहाँ गया। जाकर देखता क्या हूँ कि एक अद्‌भुत सा नाटा पुरुष इस भयानक ठंड में खाली कमीज़ और जाँघिया पहिने वहाँ खड़ा था।

"तुम क्या चाहते हो?"

"इन्सपेक्टर अलेक्जेण्ड्रोव है?"

"नहीं भाई, यहाँ इस नाम का कोई नहीं रहता।"

"पर मुझको तो एक सज्जन ने बताया था कि वह यहाँ रहते हैं।" आगंतुक ने अत्यन्त सावधानी से पीछे हटते हुये कहा।

"अच्छा, अब तुम रफू-चक्कर हो!"

दूसरे दिन दोपहर के भोजन के पश्चात् जब यूस्टास इवानिच मुझे एक कोट पहिना कर उसकी सुघराई देख रहा था, कोई फिर बड़े कमरे में आया। मैंने द्वार खोला।

कल वाले सज्जन ने मेरी आँखों के सामने ही शान्तिपूर्वक मेरा जाड़े का कोट खूँटी से उतारा और अपनी बगल में दबा कर भाग खड़ा हुआ। अग्राफिना ने उसकी ओर देखा। आश्चर्य से उसका मुँह खुला रह गया। उसने भी कोट बचाने की कुछ चेष्टा न की। यूस्टास अवश्य चोर के पीछे दौड़ा। दस मिनट बाद वह हाँफता हुआ लौटा, चोर उसके हाथ न लगा था।

"तो, यूस्टास इवानिच, कुछ नहीं हाथ लगा? ख़ैरियत तो यह हुई कि वह लबादा छोड़ गया, नहीं तो इस समय बड़ा मज़ा आता। बद-माश कहीं का!"

पर इस घटना से यूस्टास इतना अप्रतिभ हो गया कि उसकी गति-विधि लक्ष्य करने में मैं चोरी की बात ही भूल गया। इस घटना को भूल सकने में वह असमर्थ था। बार बार वह अपना काम छोड़ कर बैठ जाता और सुनाने लगता कि यह घटना कैसे घटी थी—किस प्रकार दो कदम दूर पर ही टँगे कोट को चोर हमारे देखते देखते ही उतार कर भाग

गया था। फिर वह कार्यारम्भ करता और फिर । अन्त में मैंने देखा कि वह इस बात को दूसरों से भी कहने लगा। अग्राफिना को भी फटकार सुनाने से वह न चूका। फिर वह अपना काम करने लगता, जैसे कुछ हो न हो।

"उसने हमें अच्छा बेवकूफ बनाया, यूस्टास इवानिच", मैंने उसकी ओर चाय का प्याला बढ़ाते हुये कहा। मैं इतना उकता गया था कि मैंने उसे यूस्टास के मज़ाक का विषय बना लिया था।

'हाँ, हाँ महाशय! उसने हमें खूब उल्लू बनाया। और मेरे विचार में संसार में चोरी से बढ़ कर और कोई नीच कर्म नहीं है। एक प्राणपण से परिश्रम करे और दूसरा सहज ही उसके फल को हथिया ले, वर्षों की मेहनत . । कितनी खेदजनक बात है! इस विषय में कुछ कहने का मन नहीं होता। आपका इस बारे में क्या विचार है, साहब?...क्या यह स्थिति दयनीय नहीं?"

"तुम ठीक कहते हो यूस्टास इवानिच, अपनी वस्तु को स्वयं जला देना अच्छा है, पर उसका चोरी चला जाना असहनीय है।"

"हाँ, आप ठीक कहते हैं, पर सब चोर एक से नहीं होते। एक बार मेरा पाला एक ईमानदार चोर से पड़ा है।"

"ईमानदार चोर! क्या चोर भी ईमानदार हो सकता है?"

"मैं सच बोल रहा हूँ, महाशय! ईमानदार चोर, चोर नहीं होता। मेरे कथन का तात्पर्य यह है कि वह पुरुष ईमानदार प्रतीत होता था, पर उसने चोरी की थी। सचमुच शोकजनक बात थी।"

"और यह हुआ कैसे?"

"हाँ महाशय, कोई दो वर्ष पूर्व की घटना है। लगभग एक वर्ष से मैं बेकार था और किसी काम पर लगने से पूर्व ही एक पक्के शराबी से मेरा पाला पड़ गया। हमारी मुलाकात एक भोजनालय में हुई। वह ससुरा किसी समय एक अच्छी नौकरी पर था, पर शराब ने उसका जीवन नष्ट कर दिया था। ईश्वर ही जानता है, वह कैसे वस्त्र पहिने था। कभी-कभी तो मुझे संदेह होने लगता था कि उसके कोट के नीचे कमीज़ रहती थी अथवा नहीं, जो कुछ भी उसके हाथ लगता, उससे वह शराब पी जाता। पर मदिरापान कर वह लड़ता झगड़ता न था, स्वभाव से ही वह बड़ा शान्त और दयालु था—यदि कोई गरीब भी दयालु समझा जा सकता है। पर यह देखने लायक था कि वह शराब

ओर देखो एमिल ! क्या तुम अपनी दशा नहीं सुधार सकते ? अपने कपड़े की ओर देखो। तुम्हारा लबादा इतना फट गया है कि केवल जाल का काम दे सकता है, यह ठीक नहीं ! अभी समय है कि तुम कुछ सीख सको।'

"एमिल देर तक मेरी बातें ध्यानपूर्वक सुनता रहा। न उसकी आँखे ऊपर उठी और न वह कुछ बोला ही। फिर उसने एक दीर्घ नि.श्वास छोड़ी। 'तुम शोक क्यों करते हो।' मैंने पूछा—'अरे कुछ नहीं, यूस्टास इवानिच, चिंतित न हो।' उसने कहा—'आज दो कृषक स्त्रियाँ लड रही थीं, और एक ने दूसरे की तरकारी की डलिया उलट दी।'

" 'तो इससे क्या हुआ ?'

" 'और दूसरे ने पहली स्त्री की डलिया में लात मार दी।'

" 'तो, इससे क्या, एमिल इलेश ?'

" 'अरे कुछ नहीं। केवल यह घटना घटी थी, यूस्टास इवानिच !'

ओह मैंने सोचा, वेचारा एमिल शराब के नशे में था।

" 'और फिर एक सज्जन ने सडक पर एक नोट गिरा दिया। एक किसान उसे देख कर बोला यह मेरा है। पर दूसरे ने उसे देखा और कहा—नहीं, मेरा। पहले मैंने इसे देखा। और वे दोनों झगड़ने लगे। उसी समय एक पुलिस का सिपाही आया। उसने नोट उठा कर उस सभ्य पुरुष को दे दिया और दोनों किसानों को बदी बनाने की धमकी दी।'

" 'तो इससे क्या ? इस घटना की क्या विशेषता है ?'

" 'ओह कुछ नहीं ! पर भीड़ हँस पड़ी थी, यूस्टास इवानिच !'

" 'ओह, एमिल ! भीड़ के कार्य को क्या महत्व देना ! पर तुमने अपनी आत्मा को कुचल दिया है।'

" 'यह कैसे, यूस्टास इवानिच !'

' 'मैं तुमसे सौवीं बार कह रहा हूँ कुछ काम करो। क्या तुममें कुछ शर्म बाकी नहीं रह गई है ?'

" 'पर मैं करूँ क्या ? कोई मुझे नौकर ही नहीं रखेगा।'

" 'एमिल तुम्हें नौकरी से लोग केवल इसीलिये निकाल देते हैं कि शराब पीते हो।'

हो चुकी थी, इसीलिये उस दुरावस्था का चिंतन उसके प्रति मुझे दयार्द्र कर देता। पर मैं कुछ दिनों में ही वह घर छोड़ने वाला था। 'तब तुम कैसे मुझे पा सकोगे,' मैंने सोचा।

"तो महाशय, इस प्रकार हम अलग हुये। जब स्वर्गीय अलेक्ज़ेण्डर फिलिमोविच (ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे) जीवित थे, तो उन्होंने मुझसे कहा था, 'हम तुम्हारे कार्य से अत्यन्त प्रसन्न हैं। देहात से लौटने पर हम तुम्हें फिर नौकर रख लेंगे।' इसलिये मैं उनके पास गया। वह दयालु पुरुष थे, पर उसी वर्ष उनकी मृत्यु हो गई। इसलिये मैंने अपना बोरिया बसना बाँध कर उनका घर छोड़ दिया, और एक वृद्धा के किराये के घर में रहने लगा, इस प्रकार मैंने सोचा, एमिल से छुटकारा मिल जायगा। पर आप जानते हैं, क्या हुआ? जब मैं अपने एक मित्र से भेंट कर सन्ध्या समय लौटा, तो क्या देखता हूँ कि एमिल अपना भूरा कोट पहिने मेरे ट्रंक पर बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। हाँ, और वह एक धर्म-सम्बन्धी पुस्तक, जो उसने वृद्धा से माँगी थी, समय काटने के लिये पढ़ रहा था। उसने मुझे ढूँढ लिया था। मेरा चेहरा फक पड़ गया था। 'पर,' मैंने सोचा, 'इसको मैंने इससे पहले ही कहीं भेज क्यों न दिया?' मैं सीधा उसके पास गया।

" 'तुम अपना पासपोर्ट लाये हो, एमिल?'

"मैं कुरसी पर बैठ कर सोचने लगा! एक शराबी के साथ मैं पेश ही कैसे आता; और फिर इस मूर्ख को अपने साथ रखने में मेरी कौन सी भलाई थी? वह खाना तो खाता ही था, यद्यपि एक शराबी अधिक नहीं खाता। मुझे विश्वास हो गया था कि वह शराब पीने जाता था, फिर भी मैं जानता था कि मुझे शोक होगा, यदि वह मुझे छोड़ कर चला जाय। इसलिये मैंने उसकी भलाई करने का निश्चय किया। 'मुझे उसे दुर्भाग्य से बचाने का प्रयत्न करना होगा', मेरे हृदय में विचार उठा और इसलिये मैंने कहा, 'देखो एमिल, यहाँ ठहर तो सकते हो, पर तुम्हें, मैं जो कहूँ, करना होगा।'

"मैंने अपने मन में सोचा कि उसे धीरे-धीरे इस लायक बना दूँगा कि वह किसी काम में लग जाय। मैंने उसके चरित्र का विशेष अध्ययन किया और मुझे ज्ञात हुआ कि वह पतन के गर्त में बुरी तरह गिरा था। सान्त्वनापूर्ण शब्दों में मैंने उससे कहा—'ज़रा अपनी ओर

बोला था जिससे तुम लज्जित होकर अपनी कमजोरी त्याग दो, फिर तुम्हें सीढ़ियों पर रात्रि न बितानी होगी।'

" 'पर मैं कर ही क्या सकता हूँ? मैं जानता हूँ कि मैं शराबी हूँ और किसी काम लायक नहीं हूँ! आपने मुझ पर कृपा की है, इसलिये मेरा हृदय आपके प्रति श्रद्धा से भर गया है!...'

"अचानक उसके नीले ओठ हिले, उसके सफेद कपोलों पर से अश्रु-धारायें बह रही थीं। वे कितने वेग से बह रही थीं! मुझे प्रतीत हुआ कि मेरे हृदय में चाकू भोंक दिया गया था।

"'ओह, तुम्हें मेरे कथन से पीडा का अनुभव हुआ है। कौन जानता था, यह बात तुम्हें इतनी बुरी लगेगी?'

"तो महाशय, मेरी कहानी अभी समाप्त नहीं है। घटनाये इतनी निम्न कोटि की थीं कि उन्हे सुन कर आपको घृणा होगी, पर मैं तो बहुत कुछ दे देता यदि वे न घटी होतीं। मैंने एक ज़मीदार के लिये एक ब्रिजिस सिर्यी थी, उसका कपडा बहुमूल्य था, पर ज़मीदार ने कहा कि वह उसे छोटी पड़ रही थी और इसलिये उसने वह मुझे दे डाली थी। बाज़ार में उनको कीमत कम से कम पाँच रूबल चढ़ती—एक निर्धन पुरुष के लिये पाँच रूबल कम नहीं होते। उन दिनों एमिल गूढ़ चिन्ता मे निमग्न रहता था। मेरी दृष्टि उस पर थी। एक दिन उसने मदिरा नहीं छुई, फिर दूसरे-तीसरे दिन उसके गले के नीचे कुछ न उतरा। वह चुपचाप बैठा रहता। 'या तो तुम्हारे पास शराब पीने के लिये धन नहीं है,' मैंने सोचा, 'और नही तो तुमने जीवन में महान् परिवर्त्तन करने का निश्चय किया है।' परिस्थिति ऐसी ही थी जब एक बड़ा त्योहार आया।

"मुझे एक जगह जगह जाना था। लौटने पर मैंने देखा कि एमिल खिड़की के पास बैठा हुआ शराब के नशे में झूम रहा था। मुझे अत्यन्त शोक हुआ। थोडी देर बाद किसी काम से मैंने अपना ट्रंक खोला। ब्रिजिस नदारद। मैं दौडा हुआ वृद्धा मालकिन के पास गया और उस पर चोरी का दोष मढ़ने लगा, क्योंकि एक शराबी पर दोषारोपण करने मे कुछ लाभ न था। 'नहीं,' वृद्धा ने कहा, 'मैं भला तुम्हारी ब्रिजिस क्यों लेने लगी?'

" 'मैं नहीं जानता,' मैंने कहा,—'पर दूसरा कौन मेरे कमरे में आता है?'

"'नहीं, आज तो कोई नहीं आया,' उसने उत्तर दिया—'एमिल अवश्य एक बार बाहर गया था, पर फिर लौट कर वह खिड़की के पास बैठा है। उससे पूछो।'

"'एमिल, तुमने तो किसी कार्यवश ब्रिजिस नहीं ली है ? 'जमादार के लिये मैंने एक बनाई थी।'

"'नहीं यूस्टास इवानिच,' उसने उत्तर दिया—'मैंने उसे नहीं लिया।'

"कैसी अनहोनी बात थी! फिर मैंने कमरे का कोना-कोना छान डाला, पर वह कहीं न मिली। और एमिल नशे में चूर था। मैं उसके सम्मुख ट्रंक पर बैठ गया। थोड़ी देर में हमारी आँखें मिल गईं।

" 'नहीं,' उसने कहा—'तुम सोच सकते हो कि मैंने उसे लिया है, पर सच पूछो तो मैंने ऐसा नहीं किया।'

" 'फिर वह कहाँ चली गई, एमिल ?'

" 'नहीं, यूस्टास इवानिच, मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता।'

"मैं उसकी बातें सुनता रहा, पर उस पर मुझे विश्वास न हुआ। फिर मैं एक वास्कट दुरुस्त करने लगा। मेरा हृदय अपार ग्लानि से भरा था और मैं अधिक चिंता कर पछताना नहीं चाहता था। पर एमिल को मेरे क्रोध का आभास मिल गया। जिस प्रकार पक्षी आने वाले तूफान के विषय में जान जाते हैं, उसी प्रकार एमिल को अपने ऊपर पड़नेवाली आफत का पता चल गया।

" 'यूस्टास इवानिच,' वह प्रकम्पित स्वर में कहने लगा, 'आज ऐंटन प्रोकोविच, जिसका विवाह अभी हाल ही में हुआ है...।'

"वह मेरी ओर देख रहा था, उसे मेरे विचारों की थाह मिल गई थी। उठ कर वह पलग तक गया और उसके चारों ओर देखने लगा। कदाचित् वह सोच रहा था—'भला, वह चली कहाँ गई ? मैं ज्यादा देर अपना क्रोध सँभाल न सका।

" 'एमिल, तुम पलग के नीचे क्या कर रहे हो ?'

" 'मैं ब्रिजिस ढूँढ रहा था। वह इसके नीचे न गिर गई हो, यहाँ मैं ।'

" 'मूर्ख', मैंने कहा, 'पलग के नीचे वह कैसे जा सकती है।'

" 'क्यों नहीं, यूस्टास इवानिच ? मैंने सोचा कि यहाँ देख लूँ।'

" 'हूँ, सुनो।' मैंने कहा।

" 'क्या ?' एमिल ने पूछा ।

" 'क्या तुमने ब्रिजिस नही चुराई है ?' मैने कडक कर पूछा । और किसी प्रकार मैं उसकी आश्चर्यजनक कार्रवाई का कारण समझ सकता था ।

" 'नहीं, यूस्टास इवानिच ।' और सारे समय वह पलग के नीचे ही रहा । अंत में वह बाहर आया । मैंने देखा उसका चेहरा बिलकुल पीला पड गया था । वह खिडकी के पास आकर मेरे सम्मुख बैठ गया और इसी भाँति दस मिनटों तक बैठा रहा । 'नहीं', उसने अचानक उठ कर मेरी ओर आते हुए कहा—'नहीं, मैंने उसे नहीं लिया ।' उसका चेहरा फक पड गया था ।

"वह थर-थर काँप रहा था, उसकी अँगुलियाँ उसके वक्ष पर नाच रही थी, उसकी आवाज़ थर-थरा रही थी । मै भयभीत होकर खिडकी की ओर गया ।

" 'एमिल,' मैने कहा, 'यदि मैने मूर्खतावश तुम पर अकारण ही सदेह किया हो, तो तुम मुझे क्षमा कर दो । ब्रिजिस को जाने दो, ईश्वर ने हमें हाथ दिये हैं, हम कभी किसी गरीब का धन न चुरायेगे । हम अपनी रोटी आप ।'

"एमिल, चुपचाप मेरी बात सुन रहा था । फिर वह बैठ गया । सारी सध्या वह बैठा ही रहा और जब मै सो गया, तो वह वैसे ही बैठा था । दूसरे दिन प्रात.काल जब मेरी निद्रा भग हुई, तो मैने उसे कोट में लिपटा भूमि पर पडा देखा । तो महाशय, मै आपको बताता हूँ कि तब से मैने कभी उसे अच्छी दृष्टि से न देखा और उन दिनो तो उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगा था । मुझे ऐसा प्रतीत होता था, जैसे स्वयं मेरे पुत्र ने वह चोरी कर मुझे गहरी हानि पहुँचाई हो । और एमिल दो सप्ताह तक लगातार शराब पीता रहा । उसकी सूरत पर फटकार बरसने लगी । वह प्रात काल ही बाहर निकल जाता और काफी रात गये लौटता । इस बीच मैंने उसके मुख से एक शब्द भी न सुना । अत में जब उसके पास कौडी न बची, तो आप से आप ही उसकी रँगरलियो का अत हो गया, और वह खिड़की के पास बैठा रहा । मुझे भली भाँति स्मरण है, तीन दिनो तक वह बिलकुल चुप रहा । मैने उसकी ओर देखा, वह रो रहा था । उसके नेत्रो से अश्रु झरने की भाँति

"मै करता ही क्या ? वह चला गया। मुझे आशा थी कि वह संध्या को लौटेगा, पर वह नहीं लौटा। दूसरे दिन भी उसकी झलक न मिली। तीसरे दिन मुझे कुछ चिंता हुई। न मैंने भोजन किया न मै सो ही सका। फिर मैंने उसकी खोज आरभ की पर सब व्यर्थ, वह उड सा गया था। 'कदाचित् तुम,' मैने सोचा 'दूसरे लोक को चले गये हो, केवल तुम्हारा शरीर कही सडक पर पडा सड-गल रहा होगा।'

"दूसरे दिन फिर मैंने उसे ढूँढ़ने की चेष्टा की, पर मुझे कुछ भी सफलता न मिली। तब मै स्वयं को कोसने लगा—क्यो मैंने एक निर्धन असहाय पुरुष पर अकारण ही सदेह किया ? पर पाँचवें दिन (उस दिन मेरी छुट्टी थी) मेरे कमरे का द्वार चरमराया। मैने सिर उठा कर देखा, एमिल द्वार पर खडा हुआ था। उसका अग-प्रत्यंग कीचड़ में सना था। उसका शरीर नीला पड गया था, हड्डी-हड्डी दिखाई पड़ने लगी थी। स्पष्ट विदित था कि वह इतनी ठंड में सड़क पर ही सोता रहा होगा। अपना कोट उतार कर वह मेरे सम्मुख ट्रङ्क पर ही बैठ गये। मुझे उस पर बडी दया आई। मैने उसे सात्वना प्रदान करने की चेष्टा की।

" 'अच्छा, एमिल," मैने कहा—'तुम्हारे लौटने से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस बीच मैंने तुम्हारा पता लगाने की भरपूर चेष्टा की थी। तुम खा-पी चुके हो ?'

" 'हाँ, धन्यवाद, यूस्टास इवानिच।'

" 'पेट भरा है न ? कल का भोजन बचा है, भूख लगी हो तो खा लो।'

"उसके खाने के ढङ्ग से मुझे प्रतीत हुआ कि उसने तीन दिनों से कुछ न खाया था। और कदाचित् भूख ने ही इसे मेरे पास आने को बाध्य किया था, इसलिए उसके प्रति मेरे विचार कठोर हो चले। अत में मैं वोडका की बोतल ले आया।

" 'एमिल,' मैने कहा, 'आओ, हम छुट्टी की खुशी मे शराब पियें। तुम भी पिओगे ? वोडका अच्छी है।'

"उसने लालसापूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा, उसने बोतल मुँह मे लगाई, कुछ शराब उसकी बाँह पर गिर पडी। उसने किंचित् मात्र भी शराब न पी और बोतल मेज़ पर रख दी।

" 'बात क्या है, एमिल ?'

" 'नहीं, धन्यवाद, यूस्टास इवानिच, मैं अब शराब नहीं पीना चाहता।'

" 'क्या तुमने इसे छोड़ देने का निश्चय किया है, अथवा केवल आज ही पीना नहीं चाहते ?'

"वह चुप रहा। देखते-देखते उसका सिर एक ओर झुक गया।

" 'तुम अस्वस्थ तो नहीं हो एमिल ?'

" 'मेरी तबीअत ठीक नहीं है।'

" 'मैंने उसे सहारा दे कर बिस्तर पर लिटा दिया। उसका सिर जल रहा था, तीव्र ज्वर से उसके अंग-प्रत्यंग काँप रहे थे। वह कितना दुर्बल हो गया था। दिन भर मैं उसके पास ही बैठा रहा। रात्रि के समय उसकी दशा बिगड़ चली। मैंने उससे हलके भोजन का प्रस्ताव किया—यह कहते हुये, कुछ खालो नहीं तो तुम्हारी कमजोरी बढ़ती जायगी। उसने सिर हिलाया। 'नहीं'—वह बोला, 'आज मैं कुछ नहीं खाऊँगा।'

"दूसरे दिन प्रात:काल मैं डाक्टर को बुलाने गया। डाक्टर कोस्टो प्रावोव पास ही रहते थे। उनसे मेरी जान-पहिचान भी थी। डाक्टर से मैंने सारा हाल कहा। उन्होंने मुझे दवा की पुड़िया दी, पर चूँकि मुझे उससे विश्वास न था, इसलिये मैंने यूस्टास को दवा न खिलाई। इस प्रकार दिन व्यतीत हो गया।

"उसका अंत आ गया। मैं उसके पास ही बैठा था, बूढ़ी माल-किन चूल्हा जला रही थी। सब चुप थे। मुझे ऐसा शोक हो रहा था, जैसे वह मेरा पुत्र ही हो। मैं जानता था कि वह मेरी ओर देख रहा था और मुझसे कुछ कहने की भी चेष्टा कर रहा था, पर उसे साहस न होता था।

"अंत में मैंने उसकी ओर देखा। उसने झट अपनी आँखें फेर लीं। पर क्षण भर ही में मैंने उनमें अपरिमित पीड़ा की भावना लक्ष्य करली। वह बोला—'यूस्टास इवानिच।'

" 'क्या है, एमिल ?'

" 'बाज़ार में मेरा कोट कितने में बिकेगा ?'

इससे पूर्व उस दल में एक स्त्री रह चुकी थी, जो कद में लम्बी थी और जिसके स्तन तख्ते की भाँति सपाट थे। उसके जबड़े घोड़े के जबड़ों के समान थे, और उसकी नीरस, काली आँखों में एक आग-सी जला करती थी।

और प्रत्येक संध्या को यह स्त्री पीले दुपट्टे वाली स्त्री के साथ किसी कूड़े के ढेर पर बैठ जाती और हथेलियों पर अपना मुख टेक कर और अपना सिर किनारे झुका कर तेज़ और झगड़ालू स्त्री के-से स्वर में कहती—'कब्रिस्तान की दीवार के पीछे, सुन्दर हरी झाड़ियों के पास मैं पृथ्वी पर दुग्ध के समान श्वेत चादर बिछाऊँगी। फिर मेरा प्रियतम शीघ्र ही मेरी विनती सुन कर मेरे पास आयगा।'

उसकी सहेली अपने पेट पर दृष्टि गड़ाये चुप ही रहती, पर कभी-कभी अचानक वह एक कृषक की भाँति भारी और रुदन-मिश्रित स्वर में गा उठती—"आह, मेरे प्रेमी, मेरे प्रियतम, तुम्हें अब मेरे नेत्र कभी न देख सकेंगे।'

दक्षिणी प्रदेश के ये स्वर मेरे मस्तिष्क को उत्तरी रूस के बर्फीले वातावरण का स्मरण दिलाने में कभी न चूकते, जहाँ हू-हू कर बर्फीला अंधड़ चलता और आँखों की ओट में रहने वाले भेड़िये हुङ्कार भरते।

उसी समय वह स्त्री, जिसकी आँखें भेंडी थीं, बीमार पड़ गई और लोग उसे निकटवर्ती नगर में एक स्ट्रेचर पर ले गये, और ऐसा प्रतीत होता था कि वह स्ट्रेचर पर पड़ी हुई और काँपती हुई अपने कब्रिस्तान के गाने गा रही थी।

× × ×

पीले दुपट्टे वाला सिर फिर झाड़ियों के पीछे छिप गया।

प्रातःकाल नाश्ता कर लेने के पश्चात् मैंने मधु-कलश के मुख को पत्तियों से बाँधा और अपने डण्डे से कड़ी भूमि को ठपठपाता हुआ चल पड़ा।

सँकरे पथ पर मैं चला जा रहा था। दाहिनी ओर अशान्त सागर घोर गर्जन कर रहा था। द्रुतगामी वायु एक स्वस्थ स्त्री की श्वास की भाँति उष्ण और प्रिय थी। उसी समय मैंने एक तुर्की जहाज सुखुम की ओर जाते देखा, और मुझे एक बमबड़ी इञ्जीनियर का स्मरण हो आया, जो अपनी मोटी तोंद सहलाते हुये कहा करता था—"तुम चुप रहो, नहीं तो मैं तुमको जेल की हवा खिलाऊँगा।" इन सज्जन को गिरफ्ता-

रियाँ कराने में विशेष आनन्द आता था, और मुझे यह सोच कर अत्यन्त हर्ष होता है कि इस समय तक कब्र के कीड़ों ने उसकी हड्डियाँ तक न छोड़ी होंगी। काश, मेरे कुछ दूसरे साथी भी इस समय उसी दशा में होते!

चलने में मुझे ज़रा भी परिश्रम नहीं करना पड़ता था, क्योंकि तेज हवा मेरी पीठ पर लग रही थी, और मेरे हृदय को कितनी ही मधुर स्मृतियाँ आन्दोलित कर रही थीं। महासागर के गर्भ की अगणित चमकती मछलियों की भाँति यौवन की अगणित आशाएँ मेरे मन में एक सुखद प्रमाद भर रही थीं।

अचानक मार्ग एक ओर मुड़ गया, और मैं समुद्र के अधिक निकट आ गया। सँकरे पथ पर झाड़ियाँ झुकी जाती थीं, जैसे वे भी समुद्र को देखने के लिये उत्सुक हैं। और पहाड़ियों की ओर से जो तेज हवा सागर की ओर बह रही थी, उससे प्रतीत होता था कि पानी बरसने ही वाला है।

पर उसी समय झाड़ियों के पीछे से कराहने का एक धीमा स्वर सुनाई पड़ा और मैं सिहर उठा!

झाड़ी को एक ओर हटाने पर मैंने देखा कि पीले दुपट्टे वाली स्त्री मेरे सम्मुख थी। उसका सिर उसके कन्धों के नीचे झुका था और मुख भयानक ढंग से खुला था। उसके हाथ उसके फूले हुये पेट को दबाये थे, उसकी श्वास-क्रिया अत्यन्त तीव्र हो उठी थी और उसका पेट दर्द के कारण क्रमशः उठता और गिरता था। बीच-बीच में उसके गले से कराहने का स्वर निकलता था, जिससे उसके भेड़िये के से दाँत दिखाई पड़ने लगते थे।

"मामला क्या है?" कहता हुआ मैं उसके ऊपर झुका—"क्या किसी ने तुम पर आक्रमण किया था?"

उत्तर में उसने अपने नंगे पैर बालू में गड़ा दिये और अपने शक्तिहीन हाथ हिलाते हुये कहने लगी—"भाग जाओ, बदमाश! भाग जाओ!"

और तभी मेरी समझ में आ गया कि माजरा क्या है। क्योंकि इससे पूर्व मैं एक ऐसा ही मामला देख चुका था। पर क्षण भर के लिये एक लज्जा-मिश्रित भावना ने मुझे थोड़ा हट जाने के लिये बाध्य किया,

"मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है, निर्दयी, पशु !" मुझे अपने शक्तिहीन हाथों से दूर ठेलने का प्रयत्न करते हुये वह बार-बार कहती, और सारे समय मे उससे कहता रहता—"मूर्ख ! शीघ्रातिशीघ्र प्रसव करने की चेष्टा कर !" पर सच पूछो, तो उस समय मेरे नेत्रो से भी अविरल अश्रु-धारा प्रवाहित हो रही थी, क्योंकि मेरा हृदय उसकी अकथनीय पीड़ा से व्यथित था। पर मै उससे यह कहना न भूलता—"अच्छा तो ! शीघ्रातिशीघ्र प्रसव करने की चेष्टा कर !"

× × ×

और अन्त मे मेरे हाथों में एक नवजात शिशु था। मेरी आँखो मे आँसु भरे थे, पर मैने भली भाँति देखा कि उस प्राणी का मुख लाल था। अभी भी वह नारे से अपनी माँ से बंधा था, पर इस भाँति चीख़ और चिल्ला रहा था कि मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह जीवन के आरम्भ से ही ससार से अप्रसन्न रहना चाहता है। उसकी आँखें नीली और नाक बहुत चपटी थी, और वह चिल्ला रहा था 'आँ ! आँ !'

इसके साथ ही उसका शरीर इतना चिकना था कि वह मेरे हाथ से छूटने लगा, जब कि मै उसकी ओर ध्यानपूर्वक देख कर मुस्करा रहा था। उसके पश्चात् मुझे इसका ज्ञान न रहा कि अब आगे क्या करना चाहिये।

"इसे काट दो !" अन्त मे उसकी माँ ने आँखें मींचे हुये ही कहा। उसका मुख फूल आया था, और एक लाश के समान निस्तेज प्रतीत हो रहा था। "चाकू है ?" उसने दबी जबान में कहा—"इसे काट दो !"

साधारणत मेरी जेब में एक चाकू अवश्य पड़ा रहता है, पर कुछ समय पूर्व ही वह कोई चुरा ले गया था, इसलिये मैने अपने दाँतो से नारा काटा और इस पर वह मुस्कराई। फिर धीरे-धीरे उसकी ओंठो का रंग पूर्ववत् लौट आया और उसने अपनी कंचुकी में हाथ डाल कर जेब टटोली और फिर धीमे स्वर में कहा. "मेरे पास रिबन या डोरा कुछ नहीं है, जिससे यह बाँधा जाये।"

तब मैने अपने पास से एक रिबन का टुकड़ा ढूँढ निकाला और उसे यथास्थान बाँधने का उपक्रम करने लगा।

और जैसे ही मैने ऐसा किया, उसके मुख से एक तीव्र स्वर निकला और उसकी फूली हुई आँखो से गर्म आँसू बह निकले।

तब फिर मै उसकी ओर मुडा। मैंने पीठ पर लदा हुआ अपना सामान एक ओर फेंका और उसे पीठ के बल लेटा दिया और उसके घुटने उसके शरीर की ओर मोडने लगा। सारे समय वह मेरे मुख और वक्ष पर प्रहारों की वर्षा करती थी, और अन्त में लुढ़क कर पेट के बल लेट गई। फिर हाथो और पैरो के बल लेट कर वह एक भालू की भाँति झाडी के एक कोने में छिपने का प्रयत्न करने लगी।

"जानवर !" उसने हाँफते हुये कहा—"ओ, शैतान !"

वह इतना कह पायी थी कि उसके हाथों ने जवाब दे दिया और वह मुँह के बल गिर पडी, उसके ओठ अभी तक हिल रहे थे, पर मुझे कुछ सुनाई नहीं पड रहा था।

इस समय तक मैं अत्यन्त उत्कंठित हो उठा था। ऐसी दशा मे क्या करना चाहिये, इसकी मुझे थोडी-बहुत जानकारी थी। मैंने उसे फिर पीठ के बल लेटा दिया और उसके घुटने ऊपर की ओर मोडने लगा। वच होने मे अधिक समय न था।

"शान्त पडी रहो।" मैंने कहा—"और ऐसा करने से तुम शीघ्र ही अपनी यन्त्रणा से छुटकारा पा जाओगी।"

इसके पश्चात् मै समुद्र की ओर दौड गया। आस्तीन चढ़ा कर अपने हाथ धोये और दाई का काम करने की तैयारी की। मैने लौट कर देखा, उसकी अँगुलियाँ घास से खेल रही थी। वह घास के गुच्छे उखाडती और तृणों को अपने मुँह मे ठूँसने का प्रयत्न करती। उसकी लाल-लाल आँखे निकली-सी पड रही थी। बाँस की सूखी टहनी, जिस भाँति अग्नि मे कडकती है, उसी भाँति वह तड़प रही थी। इस समय तक एक नन्हाँ-सा सिर दृष्टिगोचर होने लगा था। स्त्री के पैर हिलने न पायँ, इसके लिये मुझे सारा दम लगाना पडा था। वह अपने मुँह मे तृण न ठूँसने पाय, इसकी चेष्टा भी मुझे करनी पड रही थी। इसी बीच हम एक दूसरे को दबी-जबान में कोस रहे थे। वह दर्द और लज्जा के कारण ऐसा कर रही थी, और मैं दयावश।

"ओह परमेश्वर !" उसके नीले ओठ अचानक फड़क उठे, नेत्रों मे अश्रु झरने लगे। प्रसव-पीडा का कष्ट उसका कोई भोगी ही जान सकता है।

लेखक—मैक्सिम गोर्की]

"मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है, निर्दयी, पशु !" मुझे अपने शक्तिहीन हाथों से दूर ठेलने का प्रयत्न करते हुये वह बार-बार कहती; और सारे समय मैं उससे कहता रहता—"मूर्ख ! शीघ्रातिशीघ्र प्रसव करने की चेष्टा कर !" पर सच पूछो, तो उस समय मेरे नेत्रों से भी अविरल अश्रु-धारा प्रवाहित हो रही थी, क्योंकि मेरा हृदय उसकी अकथनीय पीड़ा से व्यथित था। पर मैं उससे यह कहना न भूलता—"अच्छा तो ! शीघ्रातिशीघ्र प्रसव करने की चेष्टा कर !"

× × ×

और अन्त में मेरे हाथों में एक नवजात शिशु था। मेरी आँखों में आँसू भरे थे; पर मैंने भली भाँति देखा कि उस प्राणी का मुख लाल था। अभी भी वह नारे से अपनी माँ से बँधा था, पर इस भाँति चीख़ और चिल्ला रहा था कि मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह जीवन के आरम्भ से ही ससार से अप्रसन्न रहना चाहता है। उसकी आँखें नीली और नाक बहुत चपटी थी, और वह चिल्ला रहा था : 'आँ ! आँ !'

'इसके साथ ही उसका शरीर इतना चिकना था कि वह मेरे हाथ से छूटने लगा, जब कि मैं उसकी ओर ध्यानपूर्वक देख कर मुस्करा रहा था। उसके पश्चात् मुझे इसका ज्ञान न रहा कि अब आगे क्या करना चाहिये।

"इसे काट दो।" अन्त में उसकी माँ ने आँखें मीचे हुये ही कहा। उसका मुख फूल आया था, और एक लाश के समान निस्तेज प्रतीत हो रहा था। "चाकू है ?" उसने दबी जबान में कहा—"इसे काट दो।"

साधारणत मेरी जेब में एक चाकू अवश्य पड़ा रहता है, पर कुछ समय पूर्व ही वह कोई चुरा ले गया था, इसलिये मैंने अपने दाँतों से नारा काटा और इस पर वह मुस्कराई। फिर धीरे-धीरे उसकी आँखों का रग पूर्ववत् लौट आया और उसने अपनी कचुकी में हाथ डाल कर जेब टटोली और फिर धीमे स्वर में कहा "मेरे पास रिबन या डोरा कुछ नहीं है, जिससे यह बाँधा जाये।"

तब मैंने अपने पास से एक रिबन का टुकड़ा ढूँढ निकाला और उसे यथास्थान बाँधने का उपक्रम करने लगा।

तब वह पहले से अधिक मुस्कराने लगी—इतना अधिक कि स्थिति कुछ असहनीय-सी हो उठी।

"और अब तुम सुव्यवस्थित हो लो," मैंने कहा—"और इस बीच मैं बच्चे को नहलाये लाता हूँ।"

"हाँ, हाँ," उसने फुस-फुसाते हुये कहा—"पर उसके साथ बड़ी नम्रता से पेश आना! उसका शरीर अत्यन्त कोमल है।"

पर उस नन्हे से प्राणी को बहुत सावधानी की आवश्यकता न थी। अपनी मुट्ठियाँ बाँध कर वह इतने ज़ोरों से चिल्ला रहा था, जैसे वह सारे संसार का अकेले ही सामना करने को तैयार हो!

"अच्छा, तो!" मैंने अन्त में उससे कहा—"हाथ-पैर बहुत अधिक न फेंको, अभी तुममें दम ही क्या है।"

और जैसे ही उस पर सागर के जल के छींटे पड़े, उसका चीखना बढ़ गया और वह पहले से अधिक फुर्ती दिखाने लगा। सागर की छोटी-छोटी लहरें उसके नन्हें शरीर पर हलके-हलके थपेड़े मारती थीं और वह जोरों से चिल्लाने लगता था।

"हाँ, भाई," मैंने उसका साहस बढ़ाया—"थोड़ा और चिल्लाओ।"

फिर मैं उसे उसकी माँ के पास ले गया। वह भूमि पर अपने दाँतों से ओठ दबाये उसी भाँति पड़ी थी। प्रसव-वेदना के पश्चात् की थकान को वह मिटाना चाहती थी। पर शीघ्र ही मैंने उसके कराहने के बीच यह आवाज़ सुनी—"उसे मुझे दे दो! उसे मुझे दे दो!"

"थोड़ा ठहर जाओ।" मैंने उससे कहा।

"ओह नहीं! उसे अब मुझे दे दो।" और उसने काँपते हुये हाथों से अपनी कंचुकी के बटन खोले और अपने स्तन को मेरी सहायता से छुड़ा कर नन्हे विद्रोही शिशु के मुख में लगा दिया। वे स्तन कम से कम एक दर्जन शिशुओं का भली भाँति भरण-पोषण कर सकते थे, मुझे प्रतीत हुआ। और जहाँ तक बच्चे का सवाल था, उसे इस कृत्य का अर्थ समझने में अधिक समय न लगा और उसने रोना बन्द कर दिया।

"ओह, ईश्वर की जननी कुमारी मेरी!" उसने अपने बिखरे बालों वाला सिर नन्हे शिशु के ऊपर करते हुये एक दीर्घ निःश्वास छोड़ी। और फिर क्षण भर तक शान्त रह कर वह धीरे धीरे कुछ बड़बड़ाने लगी। फिर उसने अपने दो अत्यन्त सुन्दर नेत्र, माता के नेत्रों में सुन्दरता होती ही है, आकाश की ओर उठाये। उन नेत्रों में मैंने प्रसन्नता और

कृतज्ञता का अद्भुत सम्मिश्रण देखा। फिर उसने अपना हाथ उठा कर धीरे से अपनी और शिशु की रक्षा के निमित्त हवा में 'क्रास' (ईसाइयों का धर्म-चिन्ह) बनाया।

"माता मरियम, मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ।" वह बड़बड़ाई।

इसके पश्चात् दस मिनट तक वह चुपचाप पड़ी रही। फिर उसने दुनियादारी के स्वर में कहा—"युवक, मेरा थैला खोलो।"

और जब मैं ऐसा कर रहा था उसकी दृष्टि मुझ पर गड़ी थी, पर जब यह काम हो गया, तो वह लज्जित हो कर मुस्कराई।

"अब," उसने कहा, "कुछ समय के लिये आप चले जाइये।"

"मैं ऐसा करने के लिये तैयार हूँ, यदि आप वायदा करें कि इस बीच आप ज्यादा हिलिये-डुलियेगा नहीं।"

"नहीं, मैं अधिक न हिलूँ-डुलूँगी। अब आप जाइये।"

मैं थोड़ी दूर चला गया। मैं कुछ थक गया था, पर मेरे हृदय में पक्षियों का-सा कलरव हो रहा था,, कदाचित् ऐसा निकटवर्ती सोते के अविरल गान का साथ देने के लिये हो रहा था।

उसी समय मुझे स्त्री का पीले दुपट्टे वाला सिर झाड़ियों के ऊपर दिखाई पड़ा। उसके बाल भली भाँति सवाँरे हुये थे।

"आओ, आओ, बहिन!" मैंने कहा—"हम लोगों को शीघ्र ही यहाँ से प्रस्थान कर देना चाहिये।"

अचानक उसका मुख पीला पड़ गया, और उसने एक हाथ से झाड़ की एक टहनी गिरने से बचने के लिये पकड़ ली। फिर भी, यद्यपि उसका मुख रक्तहीन हो गया था, उसके नेत्रों के स्थान पर दो नीली झीलें दिखाई पड़ रही थीं।

"देखो, वह कैसा सो रहा है!" उसने कहा।

और उसने गलत नहीं कहा था। मुझे वह किसी भी दूसरे शिशु से भिन्न प्रतीत नहीं हो रहा था। इसके सिवा कि जिन कोमल पत्तियों पर वह वहाँ पड़ा था, वे सुदूर ओरलोव के जंगलों में नहीं पाई जातीं।

"अब आप भी थोड़ी देर लेट कर विश्राम कर लीजिये।" मैंने उसे सलाह दी।

"ओह, नहीं!" उसने सिर हिलाते हुये कहा—"मुझे अपना सामान एकत्रित कर प्रस्थान करना है।"

"आपको ओशेनशीरी जाना है?"

"हाँ, और अब तक मेरे साथी बहुत दूर निकल गये होंगे।"

"पर क्या तुम इतनी दूर चल सकोगी ?"

"माता मरियम, मेरी सहायता करेंगी।"

हाँ, वह ईश्वर की माता के साथ यात्रा करनेवाली थी। इसीलिये इस विषय में मेरा और कुछ कहना व्यर्थ था।

फिर उसने अपने नन्हे शिशु की ओर दृष्टि फेरी और धीरे-धीरे उसके वक्ष को सहलाने लगी।

मैंने आग जलाने के लिये लकडी एकत्रित की और चूल्हा बनाने के थोडे-से पत्थर।

"शीघ्र ही आपके लिये चाय तैयार हो जायगी।" मैंने कहा।

"यह आपकी बडी कृपा होगी।" उसने कृतज्ञता प्रदर्शित की "क्योंकि मेरे स्तन सूख गये है।"

"तुम्हारे साथी तुम्हें क्यो छोड कर चले गये ?" मैंने फिर पूछा।

"उन्होंने मुझे छोडा नही। मै स्वयं अपनी मर्ज़ी से पीछे रह गई। क्या मैं उनके सम्मुख संतान प्रसव कर सकती थी ?"

और फिर मेरी ओर देख कर वह झेंप गई। उसने अपने हाथों मे अपना मुख छिपा लिया।

"यह तुम्हारी पहली संतान है ?"

"जी हाँ और आप कौन हैं ?"

"एक पुरुष।"

"हाँ, एक पुरुष, निस्सन्देह एक पुरुष ! पर क्या आप विवाहित हैं ?"

"नहीं, मैं अभी तक विवाह नही कर पाया हूँ।"

"यह असत्य प्रतीत होता है।"

"क्यों ?"

वह आँखें नीचे किये हुये थोडी देर तक बैठी रही।

"क्यो, यदि ऐसी बात है तो आप स्त्रियो के विषय में इतना अधिक कैसे जान गये ?"

इस बार मैं झूठ बोला। मैंने उत्तर दिया—"इस विषय में मैंने विशेष शिक्षा पायी है। सच पूछो, तो मैं डाक्टरी का विद्यार्थी हूँ।"

"आह ! और हमारे पादरी का लडका भी विद्यार्थी था, पर वह धार्मिक शिक्षा प्राप्त कर रहा है।"

"तो आप जान गईं कि मै क्या हूँ। अब मै जाकर थोड़ा-सा पानी ले आता हूँ।"

यह सुन कर वह अपने पुत्र की ओर देखने लगी और क्षण भर तक उसकी श्वास-क्रिया को सुनती रही। फिर उसने सागर की ओर दृष्टि फेरते हुये कहा—"मै भी नहाना चाहूँगी, पर मैं नहीं जानती कि यहाँ का पानी कैसा है—मीठा है या खारा ?"

"नहीं, काफी अच्छा पानी है—कम से कम नहाने लायक तो है ही।"

"सचमुच !"

"हाँ, सचमुच। इसके सिवा आसपास के सोतों से इसका पानी गर्म भी है। सोतों का पानी तो बर्फ-सा ठंढा है।"

"आह ! हाँ, तो तुम्हारी जानकारी अधिक है।"

इसी समय एक टट्टू, जिसमे कदाचित् हड्डी और पसली ही शेष रह गई थीं, हमारे पास से गुजरा। हमारी ओर देख कर उसने नथुनों से एक फुफकार छोड़ी और तभी उसके सवार ने एक फटी-पुरानी घर की टोपी ज़रा पीछे खिसकाई और एक बार भोंडी दृष्टि से हमारी ओर देख कर उसने टट्टू को एड़ लगाई। थोड़ी देर में ही वे हमारी दृष्टि से ओझल हो गये।

फिर मै पानी की खोज मे चला। अपने हाथ पैर धोने के बाद मैने एक झरने से स्वच्छ जल केटिल मे भरा और लौटते समय झाड़ियों मे से देखा कि वह स्त्री अपने हाथों और घुटनों के बल पत्थरों पर चलती हुई कुछ ढूँढ़ रही थी।

"क्या है।" मैने पूछा, और उसी समय उसने घबराहट से किसी वस्तु को अपनी कंचुकी मे छिपाने की चेष्टा की। मै समझ गया कि वह वस्तु क्या थी।

"उसे मुझे दे दो," मैने धीरे से कहा—"मै उसे गाड़ दूँगा।"

"कैसे ? यह तो किसी स्टोव के सम्मुख ही गाड़ी जानी चाहिये।

"तो क्या इस समय हम यहाँ एक स्टोव बनायेंगे—पाँच मिनटों में ?" मैने क्रुद्ध हो कर प्रत्युत्तर दिया।

"आह, मै तो मज़ाक कर रही थी। पर सचमुच मै इसे यहाँ गड़वाना न चाहूँगी, इस भय से कि कहीं कोई जगली पशु इसे खोद कर खा न जाये फिर भी इसे कहीं पृथ्वी को समर्पित तो करना ही होगा।" यह उसने आँखे दूसरी ओर किये हुये ही कहा। उस समय उसे कोई बड़ी उलझन व्यग्र कर रही थी।

"मैं ईश्वर के नाम पर तुमसे प्रार्थना करती हूँ, कि इसे तुम अधिक से अधिक नीचे दफन करना। मेरे बच्चे पर दया करना, मै तुमसे इसकी भिक्षा माँगती हूँ।"

मैने वैसा ही किया। और जब मै लौटा, तो मैने उसे सागर की ओर से एक आधा भीगा पेटीकोट पहिने लौटते देखा। वह हाथ-मुँह धोकर वापस आ रही थी। उसका मुख चमक रहा था, और मैने उसकी ओर देखते हुये मन ही मन सोचा : 'यह कितनी बलवान है।'

फिर चाय और शहद का एक सम्मिश्रण पीते समय उसने पूछा : "तुम्हारा विद्यार्थी-जीवन समाप्त हो गया है ?"

"हाँ।"

"और ऐसा क्यों ? अत्यधिक मदिरा-पान करने से।"

"आप ठीक ही कहती है।"

"ओ हो ! तुम्हारा मुख मुझे अभी तक परिचित-सा प्रतीत हो रहा था। हाँ, मुझे स्मरण है कि मैने तुम्हें सुखुन में देखा था, जब तुम सुपरिण्टेण्डेण्ट से खाद्य-सामग्री के विषय में झगड़ रहे थे। उसी समय इस विचार ने मेरे मस्तिष्क मे प्रवेश किया था, 'अवश्य ही इस साहसी युवक ने सारा धन शराब पर व्यय कर दिया है।'

फिर उसने अपने फूले हुये ओठों से शहद की एक बूँद चाटी और फिर झाड़ी की ओट में सोते नवजात शिशु की ओर दृष्टि फेरी।

"वह जीवित कैसे रहेगा।" उसने एक दीर्घ निःश्वास के साथ कहा, और फिर मेरी ओर मुड कर बोली—"आपने मेरी सहायता की

है, इसलिये आप मेरे धन्यवाद के पात्र हैं। यद्यपि मैं यह नहीं कह सकती कि उसे आप की सहायता की आवश्यकता थी, अथवा नहीं।"

और चाय पीने के पश्चात् उसने रोटी का एक टुकड़ा खाया और उसके पश्चात् 'क्रॉस' बनाया। फिर जब मैं अपना सामान ठीक कर रहा था, वह इधर-उधर देखती हुई कभी कुछ कह उठती थी। उसके नेत्रों में पूर्ववत् ज्योति लौट आई थी। अन्त में वह उठ खड़ी हुई।

"तुम अभी जा तो नहीं रही हो?" मैंने प्रतिरोध किया।

"नहीं, मुझे अब जाना ही होगा।"

"पर—।"

"माता मरियम मेरे साथ जायेंगी! मेरा बच्चा मुझे उठा दीजिये।"

"नहीं, मैं उसे ले चलूँगा।"

और थोड़ी देर के अनुरोध-प्रतिरोध के पश्चात् उसने मेरा कहना मान लिया और हम चल पड़े।

"यदि मेरे पैरों में थोड़ी शक्ति और होती!"—उसने मेरे कन्धे पर सहारे के लिये एक हाथ रखते हुये कहा।

और रूस का नवीन नागरिक मेरे हाथों में मज़े से खुर्राटें भर रहा था, जब कि सागर की लहरें तट से टकरा उठती थीं। इस समय तक आकाश में सूर्य काफी चढ़ गया था।

हम चले जा रहे थे। वह कभी सागर की ओर देखती, कभी पहाड़ों की ओर और अन्त में अपने पुत्र का भली-भाँति निरीक्षण करती। ऐसा करने में वह अपना सारा कष्ट भूल जाती। माता का असीम प्रेम क्या नहीं कर सकता!

एक बार उसने रुक कर कहा—"ओ परमात्मा, ओ माता मरियम, यह सब कितना भला है। काश, मैं संसार के अन्त तक इसी भाँति चलती रहती! मेरी केवल एक ही अभिलाषा है कि मेरा प्रिय पुत्र अपनी माँ के स्तनों से प्रतिपालित होकर बढ़े, सुदृढ़ हो।"

और सागर अपने अविरल गान में निमग्न रहा!

चार दिन

लेखक—वी० एम० गार्शिन

मुझे स्मरण है—हम किस प्रकार जगल के बीच मे दौड़े, किस प्रकार गोलियाँ सनसनाती हुई निकल गई, किस प्रकार झाड़ियाँ टूट-टूट कर गिर पड़ीं, घनी झाड़ियों को तो हमे काटना पड़ता था। गोलियों का बाज़ार गर्म हो चला। जगल के एक कोने में कुछ लाल-सी अग्नि की ज्वालायें जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ जाती थीं। सिदोरोव पहली 'कम्पनी' का सिपाही था। अचानक वह भूमि पर गिर पड़ा, उसकी अचम्भे से भरी आँखों ने एक बार मेरी ओर देखा। उसके मुख से रक्त की धारा बह निकली। मै सब देखता रहा। उस समय मेरे मस्तिष्क से यह भी उतर गया कि वह कब हमारी पहली 'टुकड़ी' में आया था। अभी उसकी अवस्था ही क्या थी?

मुझे वह सब भलीभाँति स्मरण है कि जंगल के कोने में, झाड़ियों के बीच से, मैंने एक तुर्क को देखा। तुर्क लम्बा-तगड़ा था, मै यद्यपि दुबला-पतला था, फिर भी एकाएक उसकी ओर बढ़ा। 'धायँ' की आवाज़ हुई। कोई गर्म वस्तु मेरे कानों में एक अद्‌भुत झनझनी पैदा करती हुई निकल गई। 'उसने मुझ पर गोली चलाई है,' मैंने सोचा। पर उसी क्षण वह आतंकित हो गया। भयानक चीख के साथ वह एक घनी झाड़ी से पीठ टेक कर खड़ा हो गया। अपने होश में उसने कभी ऐसा न किया होता, पर उस समय वह किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो रहा था। बात यह थी कि झाड़ा बड़ी कँटीली थी। यदि वह चाहता तो सहज ही झाड़ी के पीछे छिप सकता था। दूसरे ही क्षण मेरे एक ही वार मे उसकी राइफल अलग पड़ी थी और मेरी तलवार उसके शरीर मे कहीं घुस गई थी। एक गुर्राहट या कराहने की सी आवाज़ हुई। तब मै आगे बढ़ा।

हमारे साथी 'हुर्रे' कहते हुये गोली चला रहे थे। मुझे स्मरण है कि मैंने स्वय, वृक्षों की आड़ से निकलने के पश्चात् कितनी गोलियाँ

चलाई थी। अचानक 'हुर्रे' शब्द का ज़ोर बढ़ गया और हम शीघ्रता-पूर्वक आगे बढ़े। मेरा स्वयं से तात्पर्य नहीं है, बल्कि मेरी कतार आगे बढ़ी, क्योंकि मैं तो वहीं रह गया जहाँ पहले था। इससे मुझे आश्चर्य हुआ। और इससे भी अधिक आश्चर्य इस बात का हुआ कि अचानक मेरे नेत्रों के सम्मुख अँधेरा छा गया, मेरे लिये तो आवाज़ें और गोलियाँ दोनों ही बन्द हो गईं। मैंने कुछ सुना नहीं, कुछ नीला-सा दिखाई पड़ा और फिर वह भी लुप्त हो गया।

मुझे कभी ऐसा अनुभव न हुआ था। मैं पेट के बल पड़ा हूँ। मुझे पृथ्वी की एक पतली-सी पटरी पर दिखाई पड़ रही है थोड़ी सी घास, एक पत्ती पर एक चींटी उतरती हुई, उसी के पास थोड़ी सी सूखी हुई पत्तियाँ—यही मेरी सारी दुनिया है। और यह सब मैं केवल एक आँख से देख रहा हूँ, दूसरी आँख किसी कड़ी चीज़ से दबी हुई है, अवश्य वह कोई डाल होगी। मैं किसी झाड़ी के सहारे पड़ा हूँ। मुझे अत्यन्त कष्ट हो रहा है, मैं चेष्टा कर हटना चाहता हूँ, पर यह मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा करने में मैं असमर्थ क्यों हूँ। मैं घास के कीड़ों की चट्-चट् सुनता हूँ, शहद की मक्खी के भिन-भिनाने का स्वर भी मुझे सुनाई पड़ रहा है। समय बीत रहा है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ। अंत में मैं चेष्टा करता हूँ, अपने शरीर के नीचे से अपना दाहिना हाथ निकालता हूँ और अपने दोनों हाथों को भूमि पर टेक, मैं खड़े होने का प्रयत्न करता हूँ।

अत्यन्त तेज़ और असह्य आघात से मेरा सारा शरीर टूटने लगता है, वक्ष:स्थल तक, सिर तक, और मैं गिर पड़ता हूँ। अंधकार, स्मृति-विहीनता।

मैं जाग रहा हूँ। बल्गेरिया के गहरे नीले आकाश में मैं चमकते तारे क्या देख रहा हूँ? क्या मैं किसी खेमे में नहीं हूँ? मैं उसके बाहर सरक कर आया ही कैसे? मैं हिलता हूँ और पैरों में मुझे असह्य पीड़ा का बोध होता है।

हाँ, मैं युद्ध में आहत हुआ हूँ। घाव सांघातिक है अथवा नहीं, मैं नहीं कह सकता। मैं अपने पैर को उस स्थान पर छूता हूँ, जहाँ वह दर्द कर रहा है। मेरे दाहिने और बायें पैर जमे हुये खून से...
ओफ! जब मैं उसे अपने हाथों से छूता हूँ, मेरी पीड़ा बढ़ जाती है,

मेरे दाँतो मे भी दर्द हो रहा है कम होता हा नही, मे बेचैन हूँ। मेरे कानो मे कुछ खुदबुदाहट हुई और मेरा सिर भारी हो गया। मुझे कुछ पता-सा लगता था कि मेरे दोनो पैरो में भयकर घाव है। इसका अर्थ ही क्या है ? वे मुझे उठा क्यो नही ले गये ? क्या यह सम्भव है कि तुर्को ने हमे हरा दिया है ? मै सोचने लगा कि मुझे क्या हो गया है। पहले तो कुछ धुँधली-सी स्मृतियाँ थी, बाद मे वे साफ हो गईं—मुझे विश्वास हो गया कि हमारी पराजय नही हुई थी।

मै गिर गया था, पर ओह, सब चिल्लाते हुये आगे बढ़े थे और मै बढ न सका था, मेरे नेत्रो के सम्मुख कुछ नीला-सा रह गया था। पहाडी की चोटी पर खुले मैदान में गिर गया था। हमारे बैटे लियन कमाण्डर ने हमे वह मैदान दिखाया था। "बहादुरी से—हमें वहाँ पहुँचना ही है!"—उसने तेज़ स्वर में कहा था। और हम वहाँ पहुँच गये थे, इसलिये हम लोग पराजित नही हुये थे । तब फिर वे लोग मुझे क्यो नही उठा ले गये ? मैदान तो चारो ओर से खुला हुआ है, सब कुछ दिखाई पडता है। पर मै यहाँ अकेला तो नही हूँ ? गोलियाँ बिना रुके चल रही थी। मैं अपना सिर फिरा कर देखूँ तो अब ऐसा करने में मुझे अधिक कठिनाई नही पड़ती, क्योकि जब मैं होश में आया था, तो पैर के बल पड़ा होने के कारण मैं घास और चीटी ही देख पाता था, उठने की चेष्टा करने में मै पीठ के बल गिर पड़ा था। इसलिये अब मै तारे देख सकता हूँ।

मै बैठने की चेष्टा करता हूँ। जब दोनो पैर टूटे हुये हो, तो ऐसा करना सहज नही। कितनी ही बार मैने उठने का प्रयत्न किया है, पर सदा मैं निराश ही हुआ हूँ। अन्त में पीड़ा से व्याकुल हो कर किसी भाँति मै बैठ जाता हूँ।

मेरे ऊपर गहरा नीला आकाश है, जिसमें एक बड़ा तारा और बहुत से तारे चमक रहे है, मेरे चारो ओर कुछ काली लम्बी-सी वस्तु है। अवश्य ये झाडियाँ होगी। मैं झाडियो में ही हूँ, वे मुझे देख न पाये होगे।

भय से रोमाचित हो उठता हूँ। फिर भी मै झाड़ियों मे कैसे पहुँचा, जब मुझे मैदान में गोली लगी ? घायल तो मै था ही, किसी भाँति खिसक-खिसक कर मैं यहाँ आ गया हूँगा, पर इसका मुझे

न न हुआ होगा, घावों की पीड़ा से मैं इतना व्यथित जो था। वल यह आश्चर्यजनक है कि मैं हिल-डुल नहीं सकता, फिर भी स समय मैं इन झाड़ियों तक कैसे आ गया? अथवा सम्भव है कि सरी गोली मुझे तब लगी, हो जब मैं इस स्थान पर पहुँच गया था।

हलकी गुलाबी रोशनी आकाश में छा गई। बड़े-बड़े तारे पीले पड़ गये। छोटे तारे अदृश्य होने लगे। चन्द्रमा निकल रहा था। ऐसे समय में घर पर होना कितना सुखद होता है!

मुझे अद्भुत स्वर सुनाई पड़ रहे हैं ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई कराह रहा हो। हाँ, यह किसी का कराहना ही है। क्या मेरे पास ही और कोई पड़ा है, जिसे लोग मेरी भाँति ही भूल गये हैं, जिसके पैर टूट-फूट गये हैं अथवा जिसके पैर में एक गोली घुस गई है? नहीं! आवाज़ अत्यन्त निकट से आ रही है—इतने निकट से कि मुझे विश्वास ही नहीं होता कि कोई दूसरा हाय राम, यह तो मैं स्वयं हूँ। कराहना बन्द नहीं होता—इतना करुणामय स्वर है, क्या मुझे सचमुच इतना अधिक कष्ट हो रहा है? अवश्य हो रहा होगा। पर मैं इस दर्द को समझने में असमर्थ हूँ। मेरा सिर चकरा रहा है, उस पर एक भारी बोझ-सा है। मैं चाहता हूँ कि लेट जाऊँ और सोऊँ, सोऊँ, सोऊँ। पर फिर मैं क्या कभी उठ सकूँगा? ख़ैर, यह सब सोने का प्रयोजन ही क्या?

उस क्षण जब मैं लेटना चाहता हूँ, एक चौड़ा, पीला चन्द्र-किरणों का समूह उस स्थान को प्रकाशमय कर देता है, जहाँ मैं पड़ा हूँ। मैं अपने से पाँच पग दूर पर ही किसी बड़ी पीली वस्तु को पड़ा देखता हूँ। उस वस्तु के कुछ स्थान चन्द्र-ज्योत्स्ना में चमक रहे हैं। वे बटन और दूसरी धातु की चीज़ें प्रतीत होती हैं। कोई मृत अथवा घायल पुरुष है।

कुछ भी हो, मैं लेटता हूँ।

नहीं, यह सम्भव नहीं है। मेरे साथियों ने अभी वह स्थान छोड़ा न होगा। वे यहीं हैं, तुर्कों को भगा कर वे यहीं जम गये थे। फिर मैं उन लोगों की आवाज़ें क्यों नहीं सुन पा रहा हूँ? अवश्य ही इसका कारण मेरी कमज़ोरी है, जिससे मुझे कुछ सुनाई नहीं पड़ता। निस्सन्देह वे यहीं होंगे।

"दौडो ! बचाओ ! "

मेरे गले से तेज़ चीखे निकलती है। उनका उत्तर नही मिलता। मेरी चीखों से उस निविड स्थान की निस्तब्धता भङ्ग हो जाती है। और सर्वत्र महान् शान्ति है। केवल चमगादड इधर से उधर भर्र-भर्र कर उड रहे है। चन्द्रमा अलग अपनी सुन्दरता पर इतरा कर मुझे चिढा रहा है। यदि वह घायल ही होता, तो मेरी चिल्लाहट से अवश्य जग पडता। पर यह तो एक लाश है। यह हमारी तरफ का है, अथवा कोई तुर्क है ? ओह, परमेश्वर ! जैसे इससे कोई मतलब सिद्ध होगा । और मेरा थकित मस्तिष्क निद्रा के वशीभूत हो जाता है।

× × ×

मै अपनी आँखें मींचे पडा हूँ, यद्यपि मेरी नींद भङ्ग हुये देर हुई। आँखें खोलने की मेरी इच्छा ही नहीं होती, क्योंकि अपनी पलकों के भीतर से ही सूर्य की ज्योति मुझे ज्ञात हो जाती है।

यदि मै अपने नेत्र खोलूँ तो इस तेज़ रोशनी मे वे चौंधिया जायँगे। हिलने-डुलने की मुझमें सामर्थ्य प्रतीत ही नहीं होती। मै कल ही तो घायल हुआ था, एक दिन और एक रात्रि व्यतीत हो गई है, एक दिन और एक रात्रि और बीतेगी और मै इस ससार से कूच कर जाऊँगा। पर इस सबसे क्या ? मुझे शान्त पड़ा रहना चाहिये। मेरा शरीर इतना थका हुआ है कि उसे विश्राम की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि किसी प्रकार मै मस्तिष्क के काय को भी रोक सकता, तो कितना अच्छा होता, पर ऐसा करना असम्भव-सा है ! विचार इधर से उधर, चारों ओर से मेरे मस्तिष्क की सीमाओं का अतिक्रमण कर रहे है। मै उन्हे रोकूँ तो कैसे रोकूँ ? फिर भी यह स्थिति स्थायी नहीं है, शीघ्र ही इसका अंत हो जायगा। समाचार-पत्रों में कुछ पंक्तियाँ निकल जायँगी और वे कहेंगे कि हमारी सेनाओं की नगण्य क्षति हुई, इतने हताहत हुये, अमुक सिपाही, एक वालंटियर मारा गया। नहीं, वे मेरा नाम भी नहीं देंगे। वे केवल इतना कहेंगे—एक की मृत्यु हुई। एक साधारण सिपाही—एक साधारण कुत्ता !

जीवन की घटनायें चल-चित्रों की भाँति मेरे सम्मुख आ जाती हैं। बहुत दिनों की बात है; इस समय तो मै यहाँ अपने पैर तोड कर पडा हूँ पर इससे वर्षों पूर्व जब मैं सुखी था . । मै सडक पर चला

—वी० एम० गार्शिन]

 था, जब कुछ व्यक्ति मेरे मार्ग में खड़े थे। वे लोग जमा थे—यह
के लिये कि एक सफ़ेद कुत्ता खून के बहने के कारण कैसे मरता
उस पर से एक ट्राम चली गई थी। वह मर रहा था, जिस प्रकार
र रहा हूँ। एक भंगी गर्दन पकड़ कर उसे ले गया। भीड़ छँट

 क्या कोई मुझे भी उठा ले जायगा? नहीं, मैं यहीं पड़ा रहूँगा
र मेरी मृत्यु हो जायगी। जीवन भी कितना मधुर है? उस दिन
स कुत्ते की मृत्यु के दिन) मैं प्रसन्न था। मैं इतरा कर चलता था;
सरे के कष्ट पर हँसना सदा सहज होता है। उस दिन की स्मृति
. पता नहीं, ऐसे भयानक विचारों से मेरा पीछा छूटता क्यों नहीं?
कुत्ते की मौत से मेरी मृत्यु का मुकाबिला ही क्या? फिर यह पीड़ा
क्यों है? मैं झुलस क्यों रहा हूँ? सूर्य की किरणें मुझ पर सीधी पड़
रही है। मैं अपनी आँखें खोलता हूँ—वही झाड़ियाँ, वही आकाश,
और वही दिन का प्रकाश। पास ही मेरा पड़ोसी पड़ा है—एक तुर्क,
एक लाश। कितना तगड़ा जवान था। मैं उसे पहिचान रहा हूँ, यह
वही है ।

मेरे सम्मुख वही तुर्क पड़ा है, जिसकी मैंने हत्या की थी। मैंने
उसे क्यों मारा?

वह यहाँ मरा पड़ा है; अधिक रक्त निकलने से ही उसकी मृत्यु
हुई है। भाग्य उसे यहाँ खींच कर लाया ही क्यों? वह कौन है?
कदाचित् मेरी भाँति उसकी भी एक वृद्धा माता है। वह सन्ध्या समय
घंटों अपने द्वार पर बैठी, उत्तर की ओर दृष्टि गड़ाये अपने पुत्र की
प्रतीक्षा करेगी। वही पुत्र उसकी बुढ़ौती का सहारा है।.... .

और मैं? मैं भी . मैं तो इस मृत तुर्क के स्थान पर होना अधिक
पसन्द करूँगा। इस समय वह कितना सुखी होगा, उसे कुछ सुनाई
नहीं पड़ता, घावों में दर्द नहीं होता, असहनीय वेदना से वह कराहता
नहीं, उसके लिये साघातिक घाव नहीं, न उसे प्यास ही लगती है,
तलवार उसके हृदय को पार कर गई है .। उसकी वर्दी में एक बड़ा,
काला छेद है, उसके चारों ओर रक्त का दाग है, यह मैंने ही किया था।

मैं ऐसा करना न चाहता था। जब मैं युद्ध-सैनिक बना तो मेरे
हृदय में किसी के प्रति द्वेष की भावना न थी। किसी प्रकार मैं सद

नहीं, मुझे हताश न होना चाहिये, अन्त तक अपनी सामर्थ्य भर प्राण बचाने की चेष्टा करनी चाहिये। यदि वे मुझे पा जाते हैं, तो मैं बचा लिया जाऊँगा। कदाचित् मेरी हड्डियों में सर्दी समा गई है और कोई विशेष बात नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि मेरी मृत्यु ही हो जाय। मैं अपने देश को जा सकूँगा, अपनी माँ को देख पाऊँगा।

ईश्वर करे उन्हें पूर्ण सत्य कदापि ज्ञात न हो! वे लोग यही समझें कि मेरी मृत्यु तात्कालिक हुई। उन्हें कितना दुख होगा, यह जान कर कि मैं दो, तीन-चार दिनों तक कलपता, कराहता रहा!

मेरा सिर चकरा रहा है, अपने पड़ोसी के पास पहुँचने में मैं बिलकुल थक गया हूँ। और अब यह महा दुर्गन्ध। वह कितना काला हो गया है। कल वह कैसा होगा, कल के बाद कैसा? और मैं यहाँ इसलिये पड़ा हूँ कि मुझमें खिसकने तक की शक्ति नहीं है। थोड़ी देर विश्राम कर मैं अपने पुराने स्थान को चला जाऊँगा, हवा भी उसी ओर से बह रही है, इसलिये मेरे पास महक नहीं आ सकेगी।

मैं थक कर बिलकुल चूर हो गया हूँ। सूर्य के ताप से मेरे हाथ पैर झुलस रहे हैं। मैं किसी छायादार स्थान तक नहीं जा सकता। यदि केवल रात्रि शीघ्र आ जाये, मेरे विचार से यह दूसरी रात्रि ही है।

मेरे विचार उलझते जा रहे हैं, मैं बेहोश होने वाला हूँ।

मैं काफी देर तक सोया था, क्योंकि जागने पर मैंने देखा कि रात्रि हो गई थी। सब कुछ पहले जैसा ही था, मेरे घावों में दर्द था। मेरा पड़ोसी पूर्ववत् शांत, स्पन्दनरहित वहीं पड़ा था।

मैं उसके विषय में सोचता ही जा रहा हूँ। क्या मैंने सचमुच उस सब को—जिसे मैं श्रद्धा की दृष्टि से देखता था—जिससे मैं प्रेम करता था केवल इसीलिये छोड़ आया था कि मुझे भूखे-प्यासे, रात्रि में शीत और दिन में गर्मी का सामना करना पड़े, और इस समय मैं यहाँ इसलिये तड़प रहा हूँ कि मेरे पास पड़ा तुर्क मरे? इस हत्या के क्या जीवन भर मैंने कुछ किया भी है?

खून, खूनी और कौन? मैं!

जब मैंने युद्ध में जाने का निश्चय किया, तो मेरी माँ और मेरी बहिन ने उसमें कोई बाधा न डाला, यद्यपि वे रो पड़ी थीं। युद्ध के विचार से चकित होकर मैंने उनके आँसुओं पर ध्यान न दिया। तब मैं

नहीं समझता था, अब समझता हूँ कि मैं उन लोगों के प्रति क्या अत्याचार कर रहा था।

क्या मुझे स्मरण रखना ही होगा—जो कुछ मैं कर चुका हूँ, उसे मैं बिगाड नहीं सकता।

मेरे विचार का मेरे मित्रों ने कैसा स्वागत किया था! "ओह, वह पागल है! वह स्वयं नहीं जानता कि ऐसा क्यों कर रहा है।"—वे लोग ऐसा कह कैसे पाये? इन शब्दों का समन्वय वे देशभक्ति, वीरता और ऐसी ही अन्य भावनाओं से क्यों नहीं कर पाये? कम से कम उनको तो मुझे भलीभाँति समझना चाहिये था। और फिर भी मैं पागल हूँ...

मैं किशीनिओ गया, उन्होंने मुझे पूरी फौजी पोशाक दी। मैं सहस्रों के साथ मार्च करता था, उनमें से बहुत मेरी भाँति स्वयंसेवक वालंटियर थे। अधिकांश सिपाही थे, फौज़ पर जाना ही चाहते थे। फिर भी वे हमारी भाँति 'मार्च' कर रहे थे, हमारी ही भाँति वे सैकड़ों मील चले और लड़े भी। हमसे अच्छा ही वे अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे थे। उन्हें इसका ध्यान न था कि यदि वे घर लौट पाते तो अवश्य लौट जाते।

तेज़, ठंडी वायु बह रही थी। झाड़ियाँ हिल रही थीं, एक अधजगी चिड़िया अपने पर फड़फड़ा रही थी। तारे धुँधले होकर आकाश से मिट गये थे। गहरे नीले आकाश में बादल आ गये थे, पृथ्वी पर कोहरा छाया हुआ था। मेरे तीसरे दिन का . मैं इसे क्या कहूँ? जीवन—हृदय की ज्वाला—उसका आरंभ हो गया था।

तीसरा ! और ऐसे कितने दिन बीतेंगे? किसी प्रकार भी, बहुत से नहीं। मैं बहुत कमज़ोर हो गया हूँ, इस लाश के पास से हटना मेरे लिये संभव नहीं है। हम शीघ्र ही एक दूसरे के बराबर हो जायँगे।

मुझे बड़ी प्यास लगी है। मैं दिन में तीन बार पिऊँगा प्रातः काल, दोपहर और संध्या को।

× × ×

सूर्योदय हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि आज बहुत गर्मी होगी। मेरे पड़ोसी—तुम कैसे लगोगे? अभी भी तुम भयंकर प्रतीत हो रहे हो।

हाँ, वह भयकर है। उसके बाल झडने लगे हैं। प्रकृति ने उसे काला शरीर दिया था, पर धूप और सर्दी के प्रचड प्रकोप से पीला पड रहा है। उसके मुख के फूल आने से उसका चमडा कान पास फट भी गया है। उस घाव मे कीडे पड गये है। उसके पैर फू आये हैं, जूते के छिद्रो से फोडे निकल पडे हैं। उसका शरीर फूल पर्वताकार हो गया है। सूर्य के ताप से सध्या तक उसका कुछ और रूप हो जायगा।

उसके पास पडा रहना सहज नही। चाहे जो हो, मुझे उसके प से हटना ही होगा। पर क्या मेरे लिये ऐसा करना सभव है? जो कु भी मै कर सकता हूँ, वह यह कि मै अपना हाथ उपर उठाऊँ, बोत खोलूँ और कुछ पानी पी लूँ, पर अपने भारी स्पदन-रहित से शरीर क हिलाना मेरे लिये सहज नही। फिर भी मुझे यहाँ से हटना ही होग चाहे मै घटे भर में एक पग ही चल पाऊँ।

सारा प्रात काल मैने हिलने मे ही व्यतीत किया। बड़ी पीडा पर उससे मुझे क्या? मुझे अब स्मरण नही, मै जानता ही नही उत्तम स्वास्थ्य क्या होता है। इस पीडा का मै अभ्यस्त हो चला हूँ किसी प्रकार एक दर्जन कदम चल कर मैं अपनी पुरानी जगह पर आ गया। पर एक सडती हुई लाश से दस बारह कदम की दूरी पर शु वायु पा सकना सम्भव नही। वायु बदल गई और ऐसी दुर्गन्ध मेर ओर आई कि मै तिलमिला उठा। मेरे खाली पेट में बडा दर्द हो रह था, ऐसा प्रतीत होता था कि अब कै हुई, तब कै हुई और वह सड़ गध बारम्बार मेरे पास आने लगी।

× × ×

बिलकुल थक कर, किकर्त्तव्य-विमूढ मै बेहोश पड़ा था। अचानक . अथवा मुझे भ्रम हो गया था? मेरी चिन्तन-शक्ति क्षीण हो चली थी मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं कुछ सुन रहा था . पर नही! हाँ, यह लोगो के बोलने की ही आवाज़ है। घोडो के चलने का भी स्वर आ रहा था। मै चिल्ला पडने वाला था, पर मैने चेष्टा करके स्वय को ऐसा करने से रोका। यदि वे तुर्क हुये? वर्तमान कष्टो में तब कितने ही ऐसे कष्ट जोड दिये जायँगे, जिनके विषय में समाचार-पत्रो मे पढ़ कर ही मै थर्रा उठता था—मैने सोचा। वे मुझे जीवित ही जला देंगे,

लेखक—वी० एम० गार्शिन]

मेरे ज़ख्मी पैरों को भून देंगे । यदि वे इससे अधिक कुछ न करें तो ही अच्छा है, पर नवीन कष्टों का जनन करने में इतने उस्ताद जो हैं . । वे पीड़ा पहुँचाने के नवीनतम साधनों का निर्माण करते रहते हैं. उनके हाथों में पड़ने से तो यही अच्छा होगा कि मैं यहीं मर जाऊँ । पर यदि वे मेरे सैन्य-दल के ही निकले ? ओह, ये झाड़ियाँ भी कितनी अभागी हैं !

झाड़ियाँ इतनी घनी है कि उनके बीच से देखना सहज नहीं । पर यह ज़रा-सी जगह खाली है, मैं उसमें से देखता हूँ । युद्ध के पूर्व जिस झरने पर हमने पानी पिया था, ये वही तो है । हाँ, वहाँ एक बड़ा पत्थर झरने के आरपार रख दिया गया है । वह पुल का काम दे रहा है । वे अवश्य उस पर से होकर जायँगे । आवाज़ें अब नहीं सुनाई पड़तीं, घोर सन्नाटा है । मैं नहीं समझ पाता कि उनकी बोलचाल की भाषा क्या है, मेरी श्रवण शक्ति भी क्षीण हो गई है। हे ईश्वर ! पर यदि कहीं वे मेरे साथी हुये ..। मैं अभी पुकारता हूँ, वे लोग झरने के पास से तो मेरी पुकार अवश्य सुन लेंगे । मेरा धैर्य इतना न्यून है कि मुझे लाश की गन्ध भी नहीं आती, यद्यपि मुझे पूर्ण विश्वास है कि उसमें कमी न हुई होगी ।

अचानक मैं उस छोटे से पुल पर कज़्ज़ाक सवारों को देखता हूँ । नीली फौजी पोशाक, लाल पट्टियाँ, भाले । लगभग आधा स्क्वाडरन है । उनका काली दाढ़ी वाला एक अफसर है, जैसे ही वे झरना पार करते हैं, वह आज्ञा देता है :—

"दुलकी ! मार्च !"

"रुको, रुको ! सहायता करो !" मैं चिल्लाता हूँ । पर मज़बूत घोड़ों की टापों की ध्वनि में मेरी चिल्लाहट ढँक जाती है, और कज़्ज़ाक घुड़-सवारों के वार्तालाप का पचम स्वर भी इसमें सहायक होता है— मेरी मरी-सी आवाज़ उनके कानों तक नहीं पहुँच पाती ।

ओह, मैं क्या करूँ ! थक कर मैं पृथ्वी पर पेट के बल गिर पड़ता हूँ और मेरे नेत्रों से अश्रु बह निकलते हैं । बोतल उलट जाने से पानी निकल रहा था । मेरा ध्यान उस ओर तब गया, जब आधा पानी बह चुका था । मेरे जीवन की बची हुई घड़ियाँ आधी हो गई थीं ।

उस भयानक घृणा के पश्चात् मेरे चित्त पर दहशत छा गई । आँखें

मास खा लिया जायगा और पोशाक और हड्डियों के सिवा कुछ न बचेगा, तब मेरी बारी आयगी। मैं स्वयं वैसा ही हो जाऊँगा। दिन बीत गया, रात्रि भी बीतने को आई, पर मेरी स्थिति अच्छी नहीं हुई। दूसरा प्रातःकाल आ रहा है। कोई अन्तर नहीं। एक और दिन बीत रहा है ..

झाड़ियाँ खड़खड़ाती हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि वे मुझसे कह रही हैं "तुम मरोगे, तुम मरोगे, तुम मरोगे।" और दूसरी ओर की झाड़ियाँ कहती हैं, "तुम अपना घर नहीं देखोगे, तुम नहीं देखोगे, तुम नहीं देखोगे।"

"तुम उन्हें वहाँ नहीं पाओगे!" मेरे निकट कोई तेज़ आवाज़ कहती है।

मैं सिहर कर होश में आ जाता हूँ। झाड़ी में से हमारे नायक कोवलीय की दयालु आँखें मेरी ओर देख रही हैं।

"यहाँ खोदो!"—वह चिल्ला कर कहता है—"यहाँ दो और हैं—एक हमारा सिपाही, दूसरा कोई तुर्क है।"

"खोदो नहीं, मुझे जिन्दा दफनाने की आवश्यकता नहीं।" मैं चिल्लाना चाहता हूँ, पर मेरे सूखे गले से एक दर्द भरी आह निकल जाती है।

"हे ईश्वर! वह जीवित है! अरे, यह तो हमारा इवानोव है। शीघ्र इधर आकर इसकी सहायता करो! डाक्टर को बुलाओ!"

कुछ ही क्षणों में उन्होंने मेरे मुख में पानी छोड़ दिया था, फिर शराब और फिर कुछ और। इसके पश्चात् मुझे निद्रा आ गई।

स्ट्रेचर ले चलने वाले मुझे ले चल रहे हैं। उनके चलने का ढंग ऐसा है कि मुझे नींद आ जाती है। कभी मैं जागता हूँ, कभी विस्मृति के थपेड़ों में पड़ जाता हूँ। मेरे घावों पर पट्टी बँधी है, उनमें पीड़ा नहीं हो रही है, मेरा सारा शरीर एक मधुर कम्पन का अनुभव करता है .

"रोको! नीचा करो! चौथी टुकड़ी अब इसको ले चलेगी, मार्च! स्ट्रेचर लो। आओ इसे उठाओ।"

बोली से मैं पहिचान लेता हूँ कि हमारा मेडिकल अफ़सर पीटर इवानोविच आज्ञा दे रहा है। वह लम्बा और सीधा पुरुष है। मुझे

नीचे मैं चित्त पडा था। हवा बदलती जा रही थी, कभी इस दिशा में बहती, कभी दूसरी दिशा में। दुर्गन्ध से मेरा सिर फटा जा रहा था। एक बार मैंने आँखे खोल कर तुर्क की लाश की ओर देखा। उसका मुख, मुख न प्रतीत होता था, त्वचा गिर गई थी। माँस के लोथड़े हड्डियो से चिपटे थे। वह अभी भी दाँत पीस रहा था, यद्यपि मैंने कई सिर के ढाँचे देखे है और उन्हें अपने हाथों में भी लिया है, पर उस दृश्य से मैं घिनघिना उठा। चमकते बटन वाले शव की ओर मुझसे न देखा गया। 'यह युद्ध है', मैंने सोचा, 'और यह उसकी छाया।'

सूर्य पूर्ववत् तमतमा रहा है। मेरे हाथ और पैर जल गये है। बचा-खुचा पानी मै पी चुका हूँ। मैंने एक घूँट पीने का ही निश्चय किया था, पर बोतल मुँह से लगाते ही गट गट कर मै सब पी गया, मै इतना प्यासा जो था। ओह, मैंने कज्ज़ाकों को तब क्यों नहीं पुकारा जब वे इतने निकट थे? यदि वे तुर्क भी होते, तो भी मेरा इतनी दुर्गति तो न हुई होती। उन्होंने मुझे घण्टे, दो घण्टे सताया होता, अब मै नहीं जानता, मुझे कितने दिनो तक भूख-प्यास से व्याकुल होकर तड़पना पडेगा। माँ, मेरी प्यारी माँ, तुम अपने पके हुये बाल उखाड़ोगी, उस दिन को कोसोगी, जब तुमने मुझे जन्म दिया था, तुम इस युद्ध के प्रति उग्र रूप धारण करोगी जिससे आज सारा ससार व्यथित है!

पर मेरी माँ और बहिन मेरे कष्ट के विषय मे कुछ जानेंगी ही कैसे? मेरे हृदय पर मानो किसी ने पत्थर रख दिया है।

फिर मेरे नेत्रों के सम्मुख उस छोटे-से कुत्ते का चित्र खिच जाता है। दरबान को उस पर कुछ भी दया न आई थी, उसने उसे एक खाई में फेंक दिया था, जहाँ लोग मैला फेंकते थे। फिर भी कुत्ता जीवित था, दिन भर उसे कराहते ही बीता। पर मैं उससे कहीं अभागा हूँ, तीन दिन तो व्यतीत हो चुके हैं, कल चौथा दिन होगा, फिर पाँचवाँ, छठाँ...। मृत्यु, तू कहाँ है? आओ, आओ! मैं व्याकुल हो उठा हूँ।

पर मौत नहीं आती। मेरी प्रार्थना स्वीकार करने से झिझकती है और मैं चिलचिलाती धूप में पड़ा हुआ हूँ। मेरे सूखे गले को सिक्त करने के लिये मुझे एक बूँद जल भी उपलब्ध नहीं। फिर मेरे निकट एक लाश पड़ी सड़ रही थी। अब तक वह काफी गल चुकी थी। उसमें सहस्रों कीड़े बिलबिला रहे थे। कितना घृणित दृश्य था। जब सारा

मास खा लिया जायगा और पोशाक और हड्डियाँ के सिवा कुछ न बचेगा, तब मेरी बारी आयगी। मै स्वयं वैसा ही हो जाऊँगा। दिन बीत गया, रात्रि भी बीतने को आई, पर मेरी स्थिति अच्छी नहीं हुई। दूसरा प्रातःकाल आ रहा है। कोई अन्तर नहीं। एक और दिन बीत रहा है ..

झाडियाँ खड़खड़ाती है और ऐसा प्रतीत होता है कि वे मुझसे कह रही है. "तुम मरोगे, तुम मरोगे, तुम मरोगे।" और दूसरी ओर की झाडियाँ कहती है, "तुम अपना घर नही देखोगे, तुम नहीं देखोगे, तुम नहीं देखोगे।"

"तुम उन्हे वहाँ नहीं पाओगे!" मेरे निकट कोई तेज़ आवाज़ कहती है।

मै सिहर कर होश मे आ जाता हूँ। झाड़ी मे से हमारे नायक कोवलीय की दयालु आँखें मेरी ओर देख रही है।

"यहाँ खोदो!"—वह चिल्ला कर कहता है—"यहाँ दो और है—एक हमारा सिपाही, दूसरा कोई तुर्क है।"

"खोदो नहीं, मुझे जिन्दा दफनाने की आवश्यकता नहीं।" मै चिल्लाना चाहता हूँ, पर मेरे सूखे गले से एक दर्द भरी आह निकल जाती है।

"हे ईश्वर! यह जीवित है! अरे, यह तो हमारा इवानोव है। शीघ्र इधर आकर इसकी सहायता करो! डाक्टर को बुलाओ!"

कुछ ही क्षणो मे उन्होने मेरे मुख में पानी छोड़ दिया था, फिर शराब और फिर कुछ और। इसके पश्चात् मुझे निद्रा आ गई।

स्ट्रेचर ले चलने वाले मुझे ले चल रहे है। उनके चलने का ढंग ऐसा है कि मुझे नींद आ जाती है। कभी मैं जागता हूँ, कभी विस्मृति के थपेड़ो मे पड़ जाता हूँ। मेरे घावो पर पट्टी बँधी है; उनमें पीड़ा नहीं हो रही है, मेरा सारा शरीर एक मधुर कम्पन का अनुभव करता है...

"रोको! नीचा करो! चार्थी टुकड़ी अब इसको ले चलेगी, मार्च! स्ट्रेचर लो। आओ इसे उठाओ।"

बोली से मे पहिचान लेता हूँ कि हमारा मेडिकल आफसर पीटर इवानोविच आज्ञा दे रहा है। वह लम्बा और सीधा पुरुष है। मुझे

उसका सिर और मुख दिखाई पड रहा है। उसकी सफेद दाढ़ी पर भी नजर पड जाती है, यद्यपि चार लम्बे तगडे जवान मुझे अपने कंधों पर उठाये है।

"पीटर इवानोविच !"—मैं दबी ज़बान में कहता हूँ।

"क्या बात है, भाई ?" पीटर इवानोविच मेरे ऊपर झुकता हुआ कहता है।

"डाक्टर ने मेरे विषय में क्या कहा है ? क्या मै शीघ्र ही मर जाऊँगा ?"

"नही, भाई, तुम मरोगे नही। तुम्हारी हड्डियाँ अभी ठीक है। तुम अत्यत भाग्यशाली हो। न तुम्हारी एक भी हड्डी टूटी है, न कोई रक्त की नली ही फटी है। पर तुम चार दिनो तक जीवित कैसे रहे ? तुमने क्या खाया ?"

"कुछ नही।"

"और पिया क्या ?"

"तुर्क की पानी की बोतल मुझे मिल गई थी। पीटर इवानोविच, अब मै वार्तालाप नही कर सकता। फिर कभी..."

"हाँ, हाँ, भाई ! सोने की कोशिश करो।"

फिर निद्रा, विस्मृति।

फील्ड अस्पताल में मेरी निद्रा भङ्ग होती है। मेरे चारो ओर डाक्टर, नर्स और दूसरे लोग खड़े है, एक को मै पहिचानता हूँ। वे पीटर्सबर्ग के एक विख्यात प्रोफेसर है। इस समय वे मेरे पैरो को ध्यानपूर्वक देख रहे है। उनके हाथ रक्त-रंजित है। वह मुझसे कहते है—

"युवक, तुम बडे भाग्यशाली हो। तुम मरोगे नही। हमें तुम्हारा एक पैर काट देना पडा है, ऐसा कोई घबराने की बात नही है, क्यो ? इस समय क्या तुम बातचीत कर सकते हो ?"

मै बोला और मैने उन लोगो को वह सब बताया, जो मैने यहा लिखा है।

मृत्यु से प्रेम प्रबल है

लेखक—डिमिट्री० एस० मेरेजकावस्की

अनन्तकाल से फ्लोरेन्स निवासी अलमेरी परिवार दो पृथक्-पृथक् व्यावसायिक संगठनों में विभाजित हो चुका था। उनमें से कुछ लोग कसाइयों के संरक्षक सेण्ट एण्टोनी की पूजा करते थे और कुछ अपनी ध्वजाओं में मेमने की मूर्त्ति का स्थापित करके गरम कपड़ों के व्यापार में व्यस्त रहते थे। अपने पूर्वजों के समान, जियोवानी और मेटियो अलमेरी दोनों भाई इन संस्थाओं से सम्बन्धित थे। जियोवानी प्राचीन बाजार में गोश्त का व्यवसाय करता था और मेटियो की भारनो में गरम कपड़ों की मिल थी। जियोवानी की गोश्त की दूकान पर खरीदार लोग खुशी से आते थे। वे लोग वहाँ न केवल इसलिये आते थे कि उन्हें वहाँ सदा ताज़ा मांस—जाँघ, कोमल बछड़े का मांस, बदक का मांस—मिलता था, परन्तु वे वहाँ इसलिये भी आते थे कि उन्हें वहाँ के दूकानदार का हँसमुख स्वभाव बहुत पसन्द था। उसकी मृदु ज़बान में आकर्षण था। किसी भी रास्ता चलने वाले, पड़ोसी अथवा ग्राहक से किस प्रकार रसीला मज़ाक करना चाहिये, यह कसाई अलमेरी के सिवाय और किसी को नहीं मालूम था। संसार का कोई भी आदमी—फ्लोरेण्टाइन रिपब्लिक की राजनैतिक गलतियाँ, टर्की के सुलतान की आकांक्षायें, फ्रांसीसी राजा के चक्र-इतनी आसानी के साथ सभी विषयों पर इतनी खूबसूरती के साथ बातचीत न कर सकता था। कसाई के मज़ाकों का बहुत कम आदमी बुरा मानते थे। जिन लोगों को उसका मजाक बुरा लगता था, उससे वह यह पुरानी कहावत कहा करता था "अच्छा पड़ोसी मज़ाक करने के कारण बदनाम नहीं किया जा सकता। मज़ाक करने में जीभ भी छुरे के समान तेज़ हो जाती है।"

उसके भाई मेटियो का स्वभाव, जो कि ऊनी कपड़ों का व्यवसायी था, निराला था। वह एक चतुर, राजनीतिज्ञ, सदा कुछ सरल और अल्पभाषी था। वह अपना कारबार अपने लापरवाह और व्यवहार कुशल

भाई जियोवानी की अपेक्षा अधिक कुशलता के साथ करता था। प्रति-वर्ष उसके दो जहाज ऊन से भर कर लिफेरनो के बन्दरगाह से कुस्तुन्तुनिया को जाया करते थे। उसकी महान महत्वकाक्षाये थीं। वह अपने व्यवसाय को सरकारी पद प्राप्त करने के लिये एक साधन समझता था। वह उच्च पदाधिकारियों से—मोटे आदमियों से—सदा मिलत-जुलता रहता था। फ्लोरेन्स में उच्च पदाधिकारी "मोटे आदमियों" के नाम से पुकारे जाते थे। वह अलमेरी परिवार को उन्नति के उच्च शिखर पर आसीन करने की आशा किया करता था। सम्भवत वह अपने नाम को अमर यश के पखो पर सदा के लिये अकित होकर उड़ते हुए देखना चाहता था। मेटियो ने अपने भाई से कई बार गोश्त बेचने के व्यवसाय को छोड देने का आग्रह किया, क्योंकि यह बडे आदमियों के लायक धन्धा न था। वह चाहता था कि उसका मूलधन ऊन के व्यवसाय मे लगाया जावे। परन्तु जियोवानी को उसकी सलाह पसन्द न थी। वह अपने भाई की योग्यता का सम्मान करता था, परन्तु गुप्त रूप से उसपे भय-भीत भी रहता था। यद्यपि वह उससे यह बात खुले रूप मे न कहता था तथापि वह सोचा करता कि जो मनुष्य मिष्टभाषी होता है, उसके हृदय में हलाहल विष रहता है।

गर्मी के मौसम में एक दिन जियोवानी अपनी दूकान से बहुत ज्यादा थका हुआ घर लौटा। उसने साविक बदस्तूर डट के ब्यालू की और खूब ठडी शराब पी। अचानक उसे मूर्च्छा आ गई। कारण, वह बहुत हृष्ट-पुष्ट और उभरी गर्दन का आदमी था। पेश्तर इसके कि वह वसीयतनामा लिख सके अथवा इसका कोई प्रबन्ध कर सके, वह इस संसार से कूच कर गया। विधवा, मोना अरसुला नम्र, दयालु और मूर्ख स्त्री थी। उसने अपने पति का समस्त व्यवसाय मेटियो के सिपुर्द कर दिया। वह चालाकी और मधुर शब्दों द्वारा इसे किस प्रकार धोखा देना चाहिए, यह बात अच्छी तरह जानता था। उसने भोली भाली-स्त्री को इस बात का विश्वास दिला दिया कि उसके मृत भाई ने अपनी असावधानी से अपना हिसाब-किताब बेसिलसिलेवार रखा था। ठीक दिवाला निकलने के समय ही उसका स्वर्गवास हो गया। जो कुछ भी बच रहा है यदि उसके बचाने की उसकी इच्छा है, तो गोश्त के व्यवसाय को बन्द कर देना नितान्त आवश्यक है। धूर्त्त लोगों का कथन था कि चतुर मेटियो ने विधवा के साथ निर्दयता-पूर्वक छल किया है। इसका उद्देश्य यही है

कि उसके भाई की सम्पत्ति उसके ऊन के व्यवसाय में लगाई जा सके बहुत दिनों की अपनी अभिलाषा इसी प्रकार उसने पूरी कर ली। इस बात में चाहे कुछ सत्यता हो अथवा न हो, परन्तु एक बात तो बिलकुल निश्चित था कि दो जहाज़ों के स्थान में अब कुस्तुन्तुनिया को सर्वोत्तम टस्कन ऊन के पाँच या छ: लदे हुए जहाज़ भेजने लगा। उसको ऊन के व्यवसाय के 'ध्वजा-वाहक' की लाभदायक और माननीय उपाधि शीघ्र ही दिये जाने का वचन दिया गया।

वह अपनी भावज को जो मासिक निर्वाह देता था, वह इतना कम था कि उससे उसको बहुत कष्ट होता था। इसका कारण यह भी था कि वह अकेली नहीं थी। उसकी एक परम प्यारी युवा पुत्री थी, जिसका नाम जिनेवरा था। उन दिनों में फ्लोरेन्स में आजकल के समान ऐसे बहुत कम आदमी थे, जो गरीब कन्याओं के साथ शादी करने के लिये तैयार थे। जहाँ दहेज न मिलता, वहाँ विवाह करने के लिये कोई भी तैयार न होता था। परन्तु इतने पर भी मोना अरसुला ने हिम्मत न हारी। वह भक्तिपूर्वक परमेश्वर के सभी भक्तों की प्रार्थना करने लगी। विशेष कर वह सेंट एन्टोनी की सदा प्रार्थना करती थी। वह इन्हें कसाइयों के इस संसार के और स्वर्ग के सच्चे सरक्षक समझती थी। उसको यह आशा थी कि ईश्वर विधवाओं और अनाथों का रक्षक है। वह उसकी बिना दहेज़ वाली पुत्री के लिये कोई अच्छा और योग्य पति अवश्य भेजेगा।

इसके अतिरिक्त इस प्रकार की आशा करने का दूसरा अधिकार भी उसे था। जिनेवरा बहुत सुन्दर लड़की थी। इस बात का विश्वास करना कठिन था कि हृष्ट-पुष्ट, भद्दा और प्रसन्न-चित्त प्राणी जियोवानी की ऐसी दुर्लभ और अनुपम सुन्दरी पुत्री होगी। जिनेवरा सदा सादे कपड़े पहिनती थी। उसकी लम्बी और नाज़ुक गर्दन के आस-पास मोतियों की एक माला पड़ी रहती। उस पर एक राजहंस का चित्र मढ़ा हुआ था। वह अपने सिर पर मलमल का छोटा सा कपड़ा धारण किए रहती, जो उसके मस्तक के मध्य तक पहुँचता था। वह इतना महीन और पारदर्शक रहता कि उसके द्वारा उसके घने सुनहरे बाल साफ दिखलाई पड़ते थे। जिनेवरा का सुन्दर मुख मेडोना के मुख के समान फिलिप्पो लिप्पी द्वारा रँगा-हुआ-सा जान पड़ता। फिलिप्पो लिप्पी निष्कलङ्क कुमारी मानी जाती थी, जो रेगिस्तान में सेंट बरनार्ड के सामने प्रकट हुई थी। जिनेवरा

अपनी पुस्तक के पन्नों को लम्बी और मोम की-सी कोमल अँगुलियों से उलटा करती थी। उसके बाल्य-सुलभ अधरों पर अनन्त सरलता के भाव प्रकट होते। उसकी ऊँची और लुभावनी भौंहे तथा मदमाती चितवन से मादकता टपकती थी। वह मठ के कमल के समान कोमल थी। वह दुर्बल दिखलाई पडती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह बहुत कम समय तक जीवित रह सकेगी। कुछ लोगों का अनुभव था कि वह अधिक समय तक जीवित रहने के लिये उत्पन्न ही नहीं की गई। जिस समय नम्र, शान्त, आँख झुकाये हुए और अपने हाथ में धर्म-ग्रन्थ लिये हुए, कसाई की लडकी गिरजाघर की ओर सड़क पर से पैदल जाती, उस समय प्रसन्न-चित्त युवक, जो किसी भोज मे अथवा शिकार में उसी ओर से निकलते, उन लोगों का हँसना और मज़ाक करना उसे देख कर बन्द हो जाता था। उन लोगों के चेहरों पर एकाएक गम्भीरता और महत्व झलकने लगता। उन लोगों की आँखें बहुत समय तक जिनेवरा का अनुसरण किया करती थीं।

चाचा मेटियो ने अपनी भतीजी के सद्‌गुणों की बहुत से लोगों के मुँह से प्रशंसा सुनी। उसने इसका विवाह फ्लोरेन्टाइन रिपब्लिक के सेक्रेटरी फ्रान्सेस्को डैल अगोलेण्टी के साथ करने की युक्ति मन ही मन सोच कर निश्चित कर ली। वह काफी बड़ी उम्र का आदमी था, परन्तु उसका सर्वत्र मान होता था। इसके अतिरिक्त तत्कालीन शहर के शासकों से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध था। फ्रान्सेस्को लेटिन का एक प्रकाण्ड पण्डित था। वह अपनी योजनायें और लेग, लिवी और सैलूस्ट के समान, बहुत क्लिष्ट भाषा मे लिखा करता था। उसका स्वभाव कुछ रूखा और द्वेषपूर्ण था। वह प्राचीन रोमन के समान सच्चा ईमानदार था। उसका चेहरा भी रिपब्लिक के समय के सभासद के चेहरे के समान था। उसे फ्लोरेण्टाइन मुलाज़िमों का लम्बा लाल लबादा, सच्चे रोमन चोगा के समान पहिनने का तरीका मालूम था। उसका प्राचीन भाषाओं के प्रति अत्यधिक प्रेम था। जिस समय ग्रीक भाषा का स्केनी में प्रचार था और कुस्तुन्तुनिया से बाइज़ेण्टाइन का विद्वान एमानुअल क्रिज़ोलोरस तत्कालीन विश्वविद्यालय मे ग्रीक व्याकरण के विषय मे भाषण देने लगा,—तब अगोलेण्टी—प्रौढ़ावस्था के प्राप्त हो जाने पर और फ्लोरेण्टाइन रिपब्लिक का सेक्रेटरी होने पर भी छोटे-छोटे बालकों के साथ स्कूल की बेंच पर बैठने में ज़रा भी न शरमाया। उसने ग्रीक

लेखक—डिमिट्री० एस० मेरेजकावस्की]

भापा पर बहुत शीघ्र आधिपत्य प्राप्त कर लिया। वह अरिस्टाटल विरचित अरगानन और प्लेटो के प्रश्नोत्तरों को मूल भापा में पढ़ सकता था। साराश में बात यह थी कि ऊन का व्यापारी महत्वाकांक्षी था। वह अपनी महत्वाकाक्षा को अपनी इस चतुर चाल द्वारा पूर्ण करना चाहता था। इससे सम्बन्ध स्थापित करने पर ही उसकी इच्छायें पूर्ण हो सकती थीं। मेटियो ने अपनी भतीजी के लिये एक अच्छी रक़म का दहेज के रूप में देने का वचन दिया, बशर्ते कि अगोलेरटी अपने नाम के साथ अलमेरी के नाम को सम्बद्ध कर दे।

अपने प्रेमी के इन सब गुणों के होते हुए भी जिनेवरा बहुत समय तक अपने चाचा के प्रस्ताव का विरोध करती रही; एक वर्ष से दूसरे वर्ष के लिये विवाह को स्थगित करती रही। जिस समय मेटियो ने तुरन्त अन्तिम निश्चय का तक़ाज़ा किया, तब उसने यह बतलाया कि उसने अपने लिये दूसरा पति चुन लिया है, जिसे वह अगोवेरटी की अपेक्षा अधिक प्यार करती है। उसने उसका नाम एण्टोनियो डे० रोन्डीनेली बतलाया। वह एक नवयुवक सङ्गतराश था, जिसकी दूकान पोरटेवेचियो की एक मामूली सँकरी गली में थी। अपनी पुत्री के इस रहस्योद्घाटन को सुन कर भोली-भाली मोने अरसुला को बहुत आश्चर्य और भय हुआ। एण्टोनियो का जिनेवरा से उसकी माँ के मकान पर कुछ महीने पूर्व परिचय हुआ था। उसने युवती के सिर को मोम में गढ़ने की अनुमति माँगी। उसकी इच्छा यह थी कि जिनेवरा की सुन्दरता की प्रतिमा बना कर वह उसका पवित्र शरीर बारबरा के स्थान में उपयोग करे। उसको शहर के छोर में अवस्थित एक धनाढ्य मठ द्वारा उसे तैयार करने की आज्ञा मिली थी। मोना अरसुला सङ्गतराश को इस प्रकार के धार्मिक विषय में किसी भी तरह इनकार न कर सकी। जब तक यह काम होता रहा, तब तक इस कारीगर को जिनेवरा के पास आना पड़ा। कारीगर अपने इस सुन्दर नमूने पर आसक्त हो गया। इसके बाद वे सार्वजनिक उत्सवों में मिलते-जुलते रहे। शरद् कालीन समारोह में भी उनकी मुलाक़ात होती रही। जिनेवरा अपनी सुन्दरता के लिये इतनी अधिक प्रसिद्ध हो चुकी थी कि प्रायः सभी उत्सवों में वह आमन्त्रित की जाती थी।

जिस समय मोना अरसुला ने डरते-डरते और नम्रतापूर्वक मेटियो को इस बात की सूचना दी कि जिनेवरा ने अपने लियें दूसरा पति

अपनी पुस्तक के पन्नो को लम्बी और मोम की-सी कोमल अँगुलियों से उलटा करती थी। उसके बाल्य-सुलभ अधरों पर अनन्त सरलता के भाव प्रकट होते। उसकी ऊँची और लुभावनी भौंहे तथा मदमाती चितवन से मादकता टपकती थी। वह मठ के कमल के समान कोमल थी। वह दुर्बल दिखलाई पड़ती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह बहुत कम समय तक जीवित रह सकेगी। कुछ लोगों का अनुभव था कि वह अधिक समय तक जीवित रहने के लिये उत्पन्न ही नहीं की गई। जिस समय नम्र, शान्त, आँख झुकाये हुए और अपने हाथ में धर्म-ग्रन्थ लिये हुए, कसाई की लडकी गिरजाघर की ओर सड़क पर से पैदल जाती, उस समय प्रसन्न-चित्त युवक, जो किसी भोज मे अथवा शिकार में उसी ओर से निकलते, उन लोगों का हँसना और मज़ाक करना उसे देख कर बन्द हो जाता था। उन लोगों के चेहरों पर एकाएक गम्भीरता और महत्व झलकने लगता। उन लोगों की आँखें बहुत समय तक जिनेवरा का अनुसरण किया करती थीं।

चाचा मेटियो ने अपनी भतीजी के सद्गुणों की बहुत से लोगों के मुँह से प्रशंसा सुनी। उसने इसका विवाह फ्लोरेन्टाइन रिपब्लिक के सेक्रेटरी फ्रान्सेस्को डैल अमोलेएटी के साथ करने की युक्ति मन ही मन सोच कर निश्चित कर ली। वह काफी बड़ी उम्र का आदमी था, परन्तु उसका सर्वत्र मान होता था। इसके अतिरिक्त तत्कालीन शहर के शासकों मे उसका घनिष्ठ सम्बन्ध था। फ्रान्सेस्को लेटिन का एक प्रकाण्ड पण्डित था। वह अपनी योजनायें और लेख, लिवी और सैलूस्ट के समान, बहुत क्लिष्ट भाषा मे लिखा करता था। उसका स्वभाव कुछ रूखा और द्वेषपूर्ण था। वह प्राचीन रोमन के समान सच्चा ईमानदार था। उसका चेहरा भी रिपब्लिक के समय के सभासद के चेहरे के समान था। उसे फ्लोरेण्टाइन मुलाज़िमों का लम्बा लाल लबादा, सच्चे रोमन चोगा के समान पहिनने का तरीका मालूम था। उसका प्राचीन भाषाओं के प्रति अत्यधिक प्रेम था। जिस समय ग्रीक भाषा का रमकेनी में प्रचार था और कुस्तुन्तुनिया से बाइज़ेण्टाइन का विद्वान एमानुयल क्रिज़ोलोरस तत्कालीन विश्वविद्यालय में ग्रीक व्याकरण के विषय में भाषण देने लगा,—तब अगोलेर्टी—प्रौढ़ावस्था के प्राप्त हो जाने पर और फ्लोरेण्टाइन रिपब्लिक का सेक्रेटरी होने पर भी छोटे-छोटे बालकों के साथ स्कूल की बेंच पर बैठने [illegible] भी न शरमाया। उसने ग्रीक

हो मेडोना, कि मै ऐसे पागल आदमी को दहेज की वह रकम दे सकूँगा, जिसे मैने तुम्हारी कन्या को देने का वचन दिया है ?

"परन्तु बात यहीं खतम नहीं होती। क्या तुम इस बात को जानती हो कि एण्टोनियो उस लोलुप दर्शनशास्त्र द्वारा प्रतिपादित भयंकर अनीश्वरवाद को मानता है, जिसका बीजारोपण स्वयं शैतान ने किया है ? वह गिरजाघर नहीं जाता। वह धार्मिक पुस्तकों और उनके सिद्धान्तों का मज़ाक उड़ाता है। उसका ईश्वर पर विश्वास नहीं है। भले आदमियों ने मुझसे कहा है कि वह संगमरमर के टुकड़ों की बनी हुई प्रतिमाओं को पूजा करता है। थोड़े दिनों से इस प्रकार के देवों और देवताओं को बहुत कुछ खपत होने लगी है। वह महात्माओं की प्रतिमाओं के स्थान में इनकी पूजा करता है। कुछ लोगों ने मुझे यह भी बतलाया है कि रात के समय वह और उसके शिष्य लाशों की चीर-फाड़ करते हैं। इन लाशों को वह अस्पताल के चौकीदारों से बहुत कीमत देकर ख़रीद लेता है। वह इसके द्वारा मानव शरीर की बनावट, धमनियाँ, पुट्ठे तथा शरीर-व्यवच्छेद विद्या का अध्ययन करना चाहता है। वह इस प्रकार इस कला में प्रवीण बनना चाहता है। परन्तु मेरे ख़याल से वह अपने मालिकों और सलाहगीरों को ख़ुश करने की गरज़ से ही वास्तव में यह काम करता है। उसका मित्र हमारे मोक्ष का परम, प्रबल शत्रु है। यह वही शैतान है, जो उसे समस्त कलुषित जादूगरी के काम सिखलाता है। उसने जादू-टोना, इन्द्रजाल, और पैशाचिक संकेतों द्वारा ही तुम्हारी निर्दोष कन्या के हृदय पर अधिकार जमाया है।"

इस प्रकार के शब्दों द्वारा चाचा मेटियो ने मोना अरसुला को भयभीत करने तथा यह विश्वास दिलाने की चेष्टा की कि वह ठीक कह रहा है। जिस समय उसने अपनी पुत्री से कहा कि यदि वह फ्रान्सेस्को [illegible]र्दी से विवाह करना अस्वीकार कर देगी, तो चाचा मेटियो [illegible]ारा देना बन्द कर देगा। इस बात को सुन कर युवती [illegible] हुआ। उसने इसे अपने भाग्य की बात समझी। [illegible] विवाह करने के लिये तैयार हो गई।

[illegible] एक ज़बर्दस्त आपत्ति आ टूटी। बहुत से [illegible] का भविष्य-वाणी पहले से ही कर दी थी। [illegible] चक्र, शनि और मंगल एक दूसरे के

पसन्द कर लिया है, जिसको वह प्रेम करती है और जिस समय उसने एण्टोनियो० डी० रोन्डीनेली का नाम प्रकट किया, उस समय उनका व्यवसायी देवर बहुत अधिक रुष्ट हुआ, तथापि उसने बहुत शान्त और गम्भीर भाव धारण करके मोना अरसुला से शान्त स्वर में कहा—"मेडोन्ना, जो कुछ भी तुमने मुझसे अभी कहा है, यदि मैंने उसे अपने कानों से न सुना होता, तो मुझे इस बात का कभी विश्वास न होता कि तुम्हारे समान धार्मिक प्रवृति वाली और बुद्धिमती स्त्री एक अनुभवशून्य बालिका की झक पर इतना ध्यान देगी। मुझे इस बात का पता नहीं है कि आजकल क्या चाल प्रचलित है; परन्तु मेरे ज़माने में जवान लडकियाँ वर के चुनाव के सम्बन्ध में एक शब्द भी बोलने का साहस न करती थीं। सभी बातों में वे अपने पिता अथवा सरक्षक की आज्ञा का पालन करती थीं। ज़रा इस मामले में गौर से विचार करो—यह एण्टोनियो कौन है, जिसे मेरी भतीजी ने अपना पति चुन कर गौरवान्वित किया है? क्या तुम इस बात को नहीं जानतीं कि सङ्गतराश, कवि, अभिनेता, और गली-गली गाने वाले ऐसे आदमी होते हैं, जिन्हें कोई काम-धाम नहीं होता और जो लोग कोई भी इज़्ज़तदार और लाभदायक व्यवसाय नहीं कर सकते, वे लोग बिलकुल तुच्छ हृदय के और अविश्वासी पुरुष हुआ करते हैं। इस विस्तृत संसार में उनके समान नीच प्राणी और कहीं नहीं मिल सकते। वे शराबी, दुराचारी, अलाल, नास्तिक और अपने तथा दूसरों के धन को उडाने वाले होते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि एण्टोनियो के सम्बन्ध में तुम सब कुछ सुन चुकी होगी। उसको सारा फ्लोरेन्स जानता है। मैं केवल तुम्हें उसकी विशेषतायें बतलाता हूँ—उसके कारख़ाने में रस्सी से बँधी हुई एक गोल टोकरी मयालों पर टँगी हुई है। रस्सी का एक छोर टोकरी में बँधा हुआ रहता है और दूसरा छोर दीवार पर लगे हुये एक कीले से बँधा है। इसी टोकरी में एण्टो-नियो, जो कुछ भी कमाता है वह सब बिना गिने हुए डाल देता है। जिस किसी मनुष्य की इच्छा हो, चाहे वह उसका शागिर्द हो अथवा परिचित पुरुष हो, वह वहाँ जाकर टोकरी के मालिक की इजाज़त माँगे बिना भी टोकरी को नीचे उतार कर अपनी इच्छानुसार वहाँ से ताँबे अथवा सोने के कितने भी सिक्के निकाल सकता है। क्या तुम समझती

हो मेडोना, कि मैं ऐसे पागल आदमी को दहेज़ की वह रकम दे सकूँगा, जिसे मैंने तुम्हारी कन्या को देने का वचन दिया है?

"परन्तु बात यहीं खतम नहीं होती। क्या तुम इस बात को जानती हो कि एण्टोनियो उस लोलुप दर्शनशास्त्र द्वारा प्रतिपादित भयंकर अनीश्वरवाद को मानता है, जिसका बीजारोपण स्वयं शैतान ने किया है? वह गिरजाघर नहीं जाता। वह धार्मिक पुस्तकों और उनके सिद्धान्तों का मज़ाक उड़ाता है। उसका ईश्वर पर विश्वास नहीं है। भले आदमियों ने मुझसे कहा है कि वह संगमरमर के टुकड़ों की बनी हुई प्रतिमाओं की पूजा करता है। थोड़े दिनों से इस प्रकार के देवी और देवताओं की बहुत कुछ खपत होने लगी है। वह महात्माओं की प्रतिमाओं के स्थान में इनकी पूजा करता है। कुछ लोगों ने मुझे यह भी बतलाया है कि रात के समय वह और उसके शिष्य लाशों की चीर-फाड़ करते हैं। इन लाशों को वह अस्पताल के चौकीदारों से बहुत कीमत देकर खरीद लेता है। वह इसके द्वारा मानव शरीर की बनावट, धमनियाँ, पुट्ठे तथा शरीर-व्यवच्छेद विद्या का अध्ययन करना चाहता है। वह इस प्रकार इस कला में प्रवीण बनना चाहता है। परन्तु मेरे ख़याल से वह अपने मातहतों और सलाहगीरों को खुश करने की गरज़ से ही वास्तव में यह काम करता है। उसका मित्र हमारे मोक्ष का परम, प्रबल शत्रु है। यह वही शैतान है, जो उसे समस्त कलुषित जादूगरी के काम सिखलाता है। उसने जादू-टोना, इन्द्रजाल, और पैशाचिक संकेतों द्वारा ही तुम्हारी निर्दोष कन्या के हृदय पर अधिकार जमाया है।"

इस प्रकार के शब्दों द्वारा चाचा मेटियो ने मोना पारसुला को भयभीत करने तथा यह विश्वास दिलाने की चेष्टा की कि वह ठीक कह रहा है। जिस समय उसने अपनी पुत्री से कहा कि यदि वह फ्रान्सेस्को डेल एगोलेण्टी से विवाह करना अस्वीकार कर देगी, तो चाचा मेटियो उन्हें मासिक गुजारा देना बन्द कर देगा। इस बात को सुन कर युवती के हृदय में बहुत दुःख हुआ। उसने इसे अपने भाग्य की बात समझी। वह अपने चाचा की आज्ञानुसार विवाह करने के लिये तैयार हो गई।

उस वर्ष फ्लोरेन्स पर एक जबर्दस्त आपत्ति आ टूटी। बहुत से ज्योतिषियों ने इस आपत्ति का भविष्य वाणी पहले से ही कर दी थी। इसका कारण यह था कि वृश्चिक, शनि और मंगल एक दूसरे के

अत्यन्त निकट आ गये थे। बहुत से व्यापारी जो पूर्व से आये थे, वे लोग अपने कीमती कम्बलो के गट्ठरो मे प्लेग के कीडे ले आये थे। सडको पर से एक भारी जुलूस निकाला गया। लोग दु खपूर्ण गाने गा रहे थे और साथ ही साथ महात्माओ की प्रतिमाये भी लिये जा रहे थे। शहर की सीमा के अन्दर कूडा करकट न डालने के सम्बन्ध में कानून बना दिये गये थे। चमडे के कारखानो और कस्साबखानो को नहरो में गन्दगी न फैलाने की आज्ञा दी गई थी। बीमारो को जन-समुदाय से पृथक रखने की भी व्यवस्था कर दी गई थी। जिन लोगो की मृत्यु दिन के समय हुई हो, उनकी लाशो को सूर्यास्त के बाद तक रखने का और जिन लोगो की मृत्यु रात के समय हुई हो, उनकी लाशें सूर्योदय तक रखने की सख्त मुमानियत कर दी गई थी। जिन मरे हुए व्यक्तियो के रिश्तेदारो का यह कथन था कि उनकी मृत्यु प्लेग से नही वरन् और दूसरी बीमारी के कारण हुई थी, उनकी यह बात कदापि मान्य न थी। जो लोग इस आज्ञा का उल्लघन करेंगे, उन्हे जुरमाना, सज़ा और मौत तक की सज़ा दी जाने की घोषणा की जा चुकी थी।

दिन और रात के सभी समय शहर की गश्त लगाने के लिये खास इन्सपेक्टरो की नियुक्ति की गई थी। उन लोगो को किसी भी समय किसी भी मकान के दरवाज़ो को खटखटा कर उसके रहने वाले से यह दरियाफ्त करने का अधिकार प्राप्त था कि मकान के अन्दर कोई बीमार अथवा मरा हुआ आदमी तो नहीं है। यदि उन लोगो को आवश्यकता प्रतीत होती, तो वे मकान के अन्दर घुसकर उसकी खाना-तलाशी भी ले सकते थे। अक्सर मशालो के धुएँ उड़ाती गाड़ियाँ शहर के अन्दर घूमती हुई दिखलाई पडती थी। गाडियो के अन्दर काले कपड़े और नकाब पहिने हुए कुछ आदमी बैठे रहते थे। उनके हाथ में काँटेदार लकडियाँ रहती थी, जिनके द्वारा वे उन लाशो को गाड़ियो पर उठाकर डाल देते थे। जिनकी मृत्यु प्लेग की बीमारी से होती थी—वे उन लाशो को दूर से फेंकते थे जिससे उनका उनसे किसी भी प्रकार का सम्पर्क न होने पाये।

शहर में ऐसी भी अफवाह फैली हुई थी कि ये आदमी, जिनको लोग "काले शैतान" कह कर पुकारते थे, ऐसे लोगो के भी शरीर को उठा कर गाडी के अन्दर डाल देते थे, जिनकी मृत्यु भी नहीं हुई थी।

दिया। इतना करने के बाद बिना एक भी शब्द कहे, वह वह
चला गया। सब लोग आपस में काना-फूसी करने लगे। वे लोग उ
ओर इशारा करके एण्टोनियो डो० रोएडीनेली का नाम लेने लगे।
मनुष्य को जिनेवरा प्रेम करती थी और इसी के लिये उसकी
हुई थी।

गोधूलि वेला समाप्त हो गई। अन्त्येष्टि सस्कार का भी अन्त
गया। सब लोग अपने-अपने घर चले गये। मोना अरसुला की इ
रात भर कफन के पास रहने की थी, परन्तु मेटियो ने इसका वि
किया। इसका कारण यह था कि वह दुःख से इतनी अधिक व्यथि
था कि लोगों को उसके जीवन का भय था। केवल डोमिनिकन फ्रा० मे
यानो कब्र के पास रह गया। मृतात्मा के निकट बैठकर वह प्रार्थ
पढ़ने लगा।

कुछ घंटे बीत गये। महन्त की आवाज़ और कभी-कभी जियोटो
मीनार की घड़ी के बजने की आवाज रात्रि की निस्तब्धता में प्रतिध्वनि
हो उठती थी। आधी रात के बाद फ्रा० मेरियानो को प्यास मालूम हुई
उसने एक शराब की कुप्पी निकाली और अपना सिर नीचे झुका क
बड़े आनन्द के साथ उसके कुछ घूँट पी लिये। इसी समय अचान
उसको कराहने की आवाज़ सुनाई पड़ी। वह बड़े ध्यान से सुन
लगा। कराहने की आवाज़ दोबारा सुनाई पड़ी। इस समय उस
ऐसा जान पड़ा कि मृत लड़की के चेहरे का हलका कपड़ा हिल रहा है
उसका शरीर भय से व्याकुल हो उठा, परन्तु वह इन मामलों
बिलकुल अनभिज्ञ न था। वह इस बात को भली-भाँति जानता थ
कि अनुभवी पुरुष भी रात के समय मुर्दों के साथ कई तरह की बात
का ख्याल करते हैं। उसने इस सम्बन्ध में ज़रा भी ध्यान देना मुनासि
न समझा। उसने ईसाई धर्म का चिन्ह 'क्रास' बनाया, इसके बाद वह
उच्च स्वर में फिर से प्रार्थना पढ़ने लगा।

अचानक महन्त की आवाज़ बन्द हो गयी। वह बिलकुल घबर
गया। उसकी खुली हुई आँखें मृत लड़की के मुँह पर गड़ गईं। अब
कराहने की केवल दीर्घ निःश्वास ही नहीं आ रही थी, बल्कि इस समय
उसके अधरों से सिसकने का शब्द भी सुनाई पड़ रहा था। फ्रा० मेरि-
यानो को ज़रा भी शक न रह गया। इस समय उसने मृत लड़की के
वक्षस्थल को नीचे-ऊपर धड़कता हुआ देखा। ऐसा जान पड़ता था कि

वह धीरे-धीरे साँस ले रही है। उसके मुँह के ऊपर का कपड़ा भी हिलने लगा। वह खड़ा हो गया। उसके शरीर के सब अंग थरथर काँपने लगे। वह दरवाज़े की ओर भागा। वह छलाँग मार कर कब्र के उस पार कूद कर कब्रिस्तान के बाहर निकल आया। बाहर ताज़ी हवा पाकर वह विचार करने लगा कि शायद यह उसकी कल्पना मात्र थी। वह मन ही मन कुछ गुनगुनाने लगा। इसके बाद वह फिर लौट कर दरवाज़े के पास आया। वह फिर कब्र की ओर देखने लगा। उसके अधरों से एक भय का चीत्कार निकल पड़ा। मृत बालिका अपने कफन के ऊपर आँखें खोले हुए बैठी हुई थी। फ्रा० मेरियानो कब्रिस्तान के बाहर भागा। उसने पीछे लौट कर देखा भी नहीं। इसके बाद वह,बेप्टिस-टारिया सान जियाबानी होता हुआ बाया रिकासोली पहुँच गया। ईंटों से जुड़ी हुई पक्की सड़क पर बर्फ जमा हुआ था। रात्रि की निस्तब्धता में केवल उसके लकड़ी के जूतों का शब्द सुनायी पड़ रहा था।

जिनेवरा एलमेरी नींद से अथवा मृत्यु तुल्य मूर्च्छा से जाग पड़ी। वह बड़ी चिन्तातुरा होकर अपने कफन को देखने लगी। जिस समय उसको अपने ज़िन्दा गड़ा दिये जाने का ख्याल आया, उस समय वह बहुत भयभीत हुई। भगीरथ प्रयत्न करने के उपरान्त वह कठिनाई से कफन के बाहर आई। कफन के कपड़े से अपने शरीर को लपेट कर वह दरवाज़े के बाहर निकली। अब तक महन्त, दरवाज़ा खुला हुआ छोड़ कर भाग गया था।

वह कब्रिस्तान पर आई। इसके बाद वह गिरजाघर के सामने वाले मैदान में पहुँची। चन्द्रमा का प्रकाश, बादलों के झीने पर्त के ऊपर द्रुत गति से दौड़ता हुआ दिखलाई पड़ रहा था। वायु के थपेड़ों से बादल इधर-उधर तितर-बितर हो रहे थे। इस ज्योत्स्ना में जियोटो की संगमर्मर की मीनार स्पष्ट खड़ी हुई दिखलाई दे रही थी। जिनेवरा के विचार अस्त-व्यस्त थे। उसका सिर घूम रहा था। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह और मीनार दोनों शीघ्र ही आकाश की ओर उड़ जायेंगे। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह ज़िन्दा है अथवा मर चुकी है। वह जो कुछ भी देख रही है, वह सत्य है अथवा स्वप्न है, वह इस बात का निश्चय न कर सकती थी।

उसे अपने जाने का भी पता न था। वह कई निर्जन सड़कों को पार करती हुई चली गई। उसे एक परिचित मकान दिखलाई पड़ा।

वह वहाँ रुक गई। पास पहुँच कर उसने दरवाज़ा खटखटाया। उसके चाचा मेटियो का मकान था।

रात्रि अधिक व्यतीत हो जाने पर भी ऊन का व्यापारी अभी ज रहा था। वह कुस्तन्तुनिया से अपने दो जहाज़ों के लौटने की ख़ पाने के लिये एक हलकारे का इन्तज़ार कर रहा था। ऐसी ग अफवाहें फैली हुई थी कि लिवोरनो तट के निकट तूफान के कारण ब से जहाज डूब गये थे। हलकारे का रास्ता देखते-देखते उसे भूख माल होने लगी। उसने अपनी लाल बालों और सफेद दाँतों वाली सुन्द दासी ननशिया को एक ख़स्सी मुर्गा भूँजने के लिये आज्ञा दी। चा मेटियो बहुत समय से अविवाहित था। इस रात के समय वह रसो घर की आग के पास बैठा हुआ था, क्योंकि दूसरे कमरों में ठंडक थी लाल मुँह वाली ननशियो अपनी बाँहे चढा कर मुर्गे को भूँज रही थी आनन्दमयी ज्वालायें, आलमारी की दराज़ों पर अच्छी तरह से सा किये हुये बरतनों और तश्तरियों पर प्रतिबिम्बित हो रही थीं।

"ननशिया, क्या तुझे कुछ सुनाई पड़ता है?" मेटियो ने ध्यान पूर्वक सुनकर पूछा।

"यह हवा है। मैं न जाऊँगी। आपने मुझे वहाँ अभी तक ती बार भेजा है।"

"वह हवा नहीं है। कोई आदमी खटखटा रहा है। वह हलकार है। जाओ, फौरन जा कर दरवाज़ा खोलो।"

हृष्ट-पुष्ट ननशिया ढालू लकड़ी के ज़ीने से धीरे-धीरे उतरने लगी। चाचा मेटियो ऊपर ज़ीने पर खड़ा हुआ उसके रास्ते में प्रकाश पहुँचाने के लिये लालटेन दिखलाने लगा।

"कौन है?" दासी ने पूछा।

"मैं—मैं—जिनेवरा एलमेरी हूँ।" दरवाज़े के बाहर एक धीमे स्वर ने उत्तर दिया।

"जीसू! जीसू! यहाँ शैतान आया है!" ननशिया ने धीरे-धीरे कहा। उसके पैर काँपने लगे। अपने को गिरने से बचाने के लिये उसने ज़ीने का जंगला ज़ोर से पकड़ लिया। मेटियो पीला पड़ गया और उसके हाथ से लालटेन गिरते-गिरते बची।

"ननशिया, ननशिया, दरवाज़ा जल्द खोलो।" जिनेवरा ने दीन-

भाव से कहा —"मुझे आग ताप लेने दो। बड़ी ठंड लग रही है। चाचा से कह दो कि मैं आई हूँ—"

हृष्ट-पुष्ट होते हुए भी दासी ज़ीने के ऊपर तेज़ी से चढ़ गई। वह इतनी तेज़ी से भागी कि ज़ीने की लकड़ियाँ उसके पैरों के नीचे चरमरा गईं।

"आपका हलकारा आ गया है! मैंने आप से कहा था कि भले ईसाई के समान आप मेहरबानी करके सो जायँ। ओह! ओह! फिर दरवाज़े खटखटा रही है! क्या आप सुन रहे हैं? बेचारी की आत्मा कराह रही है—कितनी दुखभरी आवाज़ से वह कराह रही है। हे परमेश्वर, हमारी रक्षा कर और हम पापियों पर दया कर! सेण्टलारेन्स, हमारे लिये प्रार्थना करो!"

"सुनो ननशिया," मेटियो ने अस्थिर भाव से कहा—"मैं नीचे जाकर देखता हूँ कि मामला क्या है। कौन जानता है शायद—"

"आप वहाँ जाकर क्या करेंगे?" ननशिया ने अपने हाथ मलते हुये कहा—"ज़रा उसका विचार करो! वह कितना क्रूर आदमी है। आप समझते हैं कि मैं आप को जाने दूँगी? क्या आप दूसरे संसार को जाना चाहते हैं? क्या यही विचार है न? आप के वहाँ जाने से कोई लाभ नहीं है। यहीं ठहरिये। ईश्वर को धन्यवाद दीजिये कि हमारा कोई अनर्थ नहीं हुआ।"

आलमारी की दराज़ से पवित्र जल की कुप्पी निकाल कर ननशिया ने उसे मकान के दरवाज़ों, सीढ़ियों, रसोईघर और मेटियो पर छिड़क दिया। उसने भी अपनी दासी से अधिक बहस करना मुनासिब न समझा। वह उसकी बात मान गया। उसने समझा कि भूतों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये, यह उसकी अपेक्षा वही अधिक जानती है। ननशिया ने ज़ोर से एक शपथ का उच्चारण किया—"भाग्यशाली आत्मा ईश्वर के साथ जाओ—मृतक मृतक के पास जाओ। ईश्वर तुझे धर्मात्माओं की सेवा में शान्ति प्रदान करे!"

जिस समय जिनेवरा ने सुना कि वे लोग उसे मरी हुई समझ रहे हैं, तब वह समझ गई कि इनसे किसी बात की आशा करना दुराशा मात्र है। वह उस चौखट पर से उठी, जहाँ वह थक कर गिर पड़ी थी और आश्रय की तलाश में आगे बढ़ी।

बड़ी कठिनाई से ठंड से जकड़े हुए अपने पैरों को सरकाते हुए

वह पास की एक गली पर पहुँची। यहाँ उसका पति फ्रान्सेस्को डेल एगोलेएटी रहता था।

फ्लोरेण्टाइन का सेक्रेटरी इस समय लेटिन भाषा मे, मिलान निवासी अपने एक मित्र मूशियो डेल उबेरटी के लिये एक विस्तृत दार्शनिक सन्देश लिख रहा था। यह मित्र भी प्राचीन सिद्धान्तों का प्रेमी था। यह एक आध्यात्मिक विवेचन था जिसका शीर्षक था "मेरी प्रेयसी स्त्री जिनेवरा एलमेरी की मृत्यु के सम्बन्ध मे आत्मा के अमरत्व पर विचार।" फ्रान्सेस्को ने अरिस्टाटल के सिद्धान्त की प्लेटो के सिद्धान्तों से तुलना की थी। उसने थामस एक्विनस के मत का खंडन किया था जिसका कथन था कि अरिस्टाटल के दार्शनिक सिद्धान्त कैथोलिक चर्च के सिद्धान्तों से स्वर्ग, नरक और अघ शोधन स्थान के सम्बन्ध में मिलते-जुलते हैं।

फ्रान्सेस्को ने अनेक विश्वसनीय और गम्भीर उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध किया था कि यह अरिस्टाटल का सिद्धान्त कदापि नहीं माना जा सकता, जो केवल नास्तिक और अनीश्वरवादी है। परन्तु प्लेटो ईश्वरवाद के सिद्धान्त का प्रबल पोषक था। इसका सिद्धान्त ईसाई धर्म के सिद्धान्त से बिलकुल मिलता जुलता है।

पीतल का लैम्प, नक्काशी की हुई लकड़ी की बनी हुई सुन्दर मेज पर लगा हुआ था। उसमें बहुत-सी दराज़ें थीं। इसके अलावा कागज़, स्याही और कलम रखने के लिये भी उसमें बहुत-सी दराज़ें थीं। लैम्प सम ज्योति मे जल रहा था। लेम्प का आकार ट्रिटन की समुद्र की लहरों के समान था। प्रतिदिन के व्यवहारिक जीवन सम्बन्धी सभी विषयों में फ्रान्सेस्को प्राचीन रीति-रिवाज के अनुकरण करने का पक्षपाती था। बहुमूल्य चमड़े के कानून की पुस्तक में जो रेशम के समान चिकना और हाथी-दाँत के समान सफ़ेद था, कामदेव अथवा देव-दूतों की सोने की मूर्त्तियाँ बनी हुई थीं। उनके गलों के आस-पास स्वर्गीय कुसुमों की मालायें फहरा रही थीं।

फ्रान्सेस्को पुनर्जन्म के सिद्धान्त को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रतिपादित करने का आरम्भ करने वाला था। वह पाइथागोरस निवासियों की खिल्ली उड़ा रहा था, जो मेस इसलिये न खाते थे कि उनमें उनके पूर्वजों की आत्मा का अस्तित्व रहता है। सहसा उसने अपने दरवाज़े पर धीरे-धीरे खट-खट की आवाज़ सुनी। उसकी भौंहे चढ़ गईं, क्योंकि

करते समय उसे किसी भी प्रकार का शोरगुल असहनीय जान पड़ता था। इतना होने पर भी वह अटारी की खिड़की के पास गया। उसने उसे खोल कर नीचे सड़क की ओर देखा। उसको चन्द्रमा के पीले प्रकाश में मृत जिनेवरा अपने कफन को ओढ़े हुए दिखलाई दी।

फ्रान्सेस्को, प्लेटो और अरिस्टाटल को भूल गया। उसने इतने जल्द दरवाज़ा बन्द कर लिया कि जिनेवरा को एक भी शब्द कहने का अवसर न मिला। इसके बाद वह ईश्वर की प्रार्थना धीरे-धीरे गुनगुनाने लगा। वह ननशिया के समान भयभीत होकर ईशू मसीह के चिन्ह-क्रास को बनाने लगा।

परन्तु उसने शीघ्र ही अपने को सम्हाल लिया। उसको अपनी कमज़ोरी पर शर्म मालूम हुई। इसी समय उसे प्राक्लस और पारफिरी के मृतकों के सम्बन्ध के विचारों का स्मरण आया। उसे हिम्मत आ गई। उसका डर बिलकुल जाता रहा। उसने दोबारा दरवाज़ा खोल कर तेज़ स्वर में कहा—"तुम कोई भी क्यों न हो, स्वर्ग अथवा पृथ्वी कहीं की भी आत्मा हो, तुम उसी स्थान को लौट जाओ, जहाँ से आई हो। इसका कारण यह है कि तुम्हारा ऐसे मनुष्य को भयभीत करने का प्रयास निरर्थक है, जिसका मन सच्चे दार्शनिक सिद्धान्तों के लैम्प से प्रकाशित हो रहा है। तुम मेरे चर्म-चक्षुओं को धोखा दे सकती हो, परन्तु मेरी आध्यात्मिक आँखों को कभी भी धोखे में नहीं डाल सकतीं। शान्ति के साथ जाओ। मृतक मृतक के पास जाओ।

उसने खिड़की को बन्द कर दिया। इस समय चाहे शैतानों की फौज ही आकर उसके दरवाज़ों को क्यों न खड़खड़ाये, उन्हें हरगिज़ न खोलेगा।

जिनेवरा वहाँ से चल दी। वह पुराने बाज़ार के पास ही थी। इसलिये उसे शीघ्र ही अपनी माँ के घर को तलाश करने में कठिनाई नहीं हुई।

माना अरसुला ईसाइयों के धर्म चिह्न—क्रास के सामने घुटना टेक कर खड़ी हुई थी। उसके पास ही कठोर हृदय वाला सन्यासी फ्रा[illegible] जियाकोमो खड़ा हुआ था। उसके चेहरा उपवास करने के कारण पील[illegible] पड़ गया था। उसने अपनी भयभीत आँखों द्वारा उसको देखा।

"मैं क्या करूँ, पिता? मेरी रक्षा करो। मुझ में नम्रता नहीं है[illegible]

मेरे हृदय में प्रार्थना के भाव भी नही हैं। ईश्वर ने मुझे त्याग दिया है। मेरी आत्मा के लिये नरकवास निश्चित है।"

"सभी बातों में अन्त तक ईश्वर की आज्ञा का पालन करो। इसमें किसी तरह का पसोपेश न करो। विद्रोही शरीर के आग्रह को शान्त कर दो। तुम्हारा अपनी लडकी के सम्बन्ध मे अत्यन्त अधिक प्रेम शरीर सम्बन्धी प्रेम है। उससे आत्मा का कोई भी सम्बन्ध नही है। उसके शरीर की मृत्यु हो जाने का दु.ख मत करो। परन्तु इस बात का दु:ख करो कि वह ससार के सर्वोच्च न्यायाधीश के फैसले के मुताबिक बडी पापिन करार दी गई। इसके लिये तुम्हें पश्चात्ताप करना चाहिये।"

इसी समय दरवाज़े के खटखटाने की आवाज़ सुनाई पडी—"माँ, माँ, मैं हूँ—मुझे जल्द घर के अन्दर आने दो।"

"जिनेवरा!" मोना अरसुला ने चौंककर कहा। वह अपनी पुत्री के पास दौड़ कर जाना चाहती थी कि इसी समय उसे सन्यासी ने रोक लिया।

"तुम कहाँ जा रही हो? तुम्हारी पुत्री कब्र के अन्दर मरी पड़ी हुई है। वह अन्तिम फैसले के दिन तक वहाँ से कदापि नहीं उठ सकती। यह एक शैतान है, जो तुम्हारी पुत्री की आवाज़ द्वारा तुमको प्रलोभन दे रहा है। वह अपनी आवाज़ सुना कर तुम्हें कुमार्ग गामी बनाना चाहता है। इसलिये प्रायश्चित करो, प्रार्थना करो—अधिक विलम्ब हो जाने के पूर्व ही प्रार्थना करो। अपने लिये और जिनेवरा की पापी आत्मा के लिये प्रार्थना करो। ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम दोनों को कभी नरक में न डाले।"

"माँ, क्या तुम मेरी आवाज़ नहीं सुन रही हो? क्या तुम मेरी आवाज़ नहीं पहिचानती? यह मैं हूँ—मैं जीवित हूँ, मरी नहीं हूँ।"

"मुझे उसके पास जाने दो पिता, मुझे—"

इसके बाद फ्रा० जियाकोमो ने अपना हाथ उठा कर धीरे से कहा—"जाओ और इस बात का ध्यान रखो कि तुम अपने को और जिनेवरा की आत्मा को नरक में ढकेल रही हो। ईश्वर इस ससार में और दूसरे संसार में दोनों जगह तुम्हें कष्ट देगा।"

सन्यासी का चेहरा घृणा से इतना अधिक भर उठा और उसकी आँखों में इतनी अधिक आश्चर्यजनक अग्नि की ज्वाला चमकने लगी कि मोना अरसुला रुक गई। वह भय से व्याकुल हो गई। वह अपने हाथ मल कर प्रार्थना करने लगी और उसके पैरों पर गिर पड़ी।

फ्रा० जियाकोमो दरवाज़े की तरफ मुड़ा। उसने ईसाई धर्म के चिन्ह—क्रास—को बनाया और कहने लगा—"पिता और पुत्र के नाम पर और पवित्र शैतान के नाम पर! मैं तुमको उस प्रभु ईशू मसीह की शपथ दिलाकर कहता हूँ जो फाँसी पर चढ़ा दिया गया था कि तुम यहाँ से चली जाओ, अदृश हो जाओ, कारण कि तुम पापात्मा हो!"

"माँ, माँ, मुझ पर दया करो—मैं मर रही हूँ।"

माँ, एक बार और हाथ फैला कर अपनी पुत्री की ओर चली, परन्तु मृत्यु के समान कठोर सन्यासी उन दोनों के बीच में खड़ा हो गया।

इसके बाद जिनेवरा ज़मीन पर गिर पड़ी। उसे ऐसा जान पड़ने लगा, मानो वह ठंड के मारे मरी जा रही हो। उसने अपने हाथ घुटनों के अन्दर छिपा लिये। उसने अपना सिर नीचे झुका लिया और यह निश्चय कर लिया कि उसे अब दोबारा न उठायेगी। वह वहाँ से मृत्यु पर्यन्त हटना भी नहीं चाहती थी।

"मृतकों को जीवित पुरुषों के पास लौट कर न आना चाहिये" वह मन ही मन सोचने लगी। इसी समय उसे एण्टोनियो का स्मरण हो आया—"क्या यह सम्भव है कि वह भी मुझे निकाल बाहर करेगा?" उसे उसका पहले भी ख्याल आया था, परन्तु शर्म के कारण उसके क़दम उस ओर न बढ़ सके। इसका कारण यह था कि वह उसके पास रात के समय अकेली न जाना चाहती थी। उसका विवाह दूसरे के साथ हो चुका था। ऐसी परिस्थिति में उसका वहाँ जाना उसे अनुचित जान पड़ता था। परन्तु इस समय उसे मालूम हुआ कि वह जीवित लोगों के लिये मर चुकी है।

चन्द्रमा अस्त हो चुका था। हिमाच्छादित पर्वत प्रात कालीन आकाश के सामने पीले से दिखाई पड़ रहे थे! जिनेवरा अपनी माँ

की ड्योढ़ी पर से उठ खड़ी हुई। अपनों के यहाँ कोई आश्रय न पाकर वह एक अपरिचित के मकान की ओर चली।

एण्टोनियो रात भर जिनेवरा की मोम की मूर्त्ति बनाने में लगा रहा। उसको समय बीतने का पता ही न चला। उसे इस बात का भी पता न था कि शरद् ऋतु का प्रातःकालीन प्रकाश शीतल वायु के साथ किस प्रकार खिड़की के द्वारा उसके कमरे के अन्दर चला जा रहा था। चित्रकार का दुलारा शिष्य बारटोलिनो, जिसकी सत्रह वर्ष की उम्र थी, जिसके सुन्दर बाल थे और जो स्त्री के समान सुन्दर था, उसकी मदद कर रहा था।

एण्टोनियो का चेहरा शान्त था। उसे ऐसा जान पड़ता था कि वह मुर्दे में जान डाल रहा है और उसे नवीन अमरत्त्व प्रदान कर रहा है। ऐसा जान पड़ता था कि नीचे को झुकी हुई पलकें कम्पन करने और खुलने को तैयार हैं। उसका वक्षःस्थल नीचे और ऊपर आता-जाता-सा दिखलाई पड़ने लगा। उसकी कनपटी की धमनियों में रक्त प्रवाहित होता-सा जान पड़ने लगा।

उसने अपना काम खतम कर दिया। वह जिनेवरा के अधरों में निर्दोष मुसकराहट भरने की चेष्टा कर रहा था। इसी समय उसके दरवाज़ों पर खडखडाहट की आवाज़ सुनाई पड़ी।

"बरटोलिनो," अपना काम करते हुए एण्टोनियो ने कहा—"जाओ दरवाजा खोल दो।"

शिष्य ने दरवाज़े के पास जाकर पूछा—"कौन है ?"

"मैं—जिनेवरा एलमेरी हूँ," एक बिलकुल अस्पष्ट स्वर ने उत्तर दिया—वे शब्द सायंकालीन हवा के झोंकों के शब्द के समान जान पड़ते थे।

बरटोलिनो कमरे के सबसे दूर के कोने में कूद कर खड़ा हो गया। वह पीला पड़ गया और काँपने लगा। "मुर्दा !"—वह आगे बढ़ कर धीरे से कहने लगा।

परन्तु एण्टोनियो ने अपनी प्रेयसी के स्वर को पहिचान लिया। वह कूद कर बरटोलिनो को धक्का देकर आगे बढ़ा। उसने उसके हाथ से चाबी छीन ली।

"एन्टोनियो, अच्छी तरह सोच लो—तुम क्या कर रहे हो ?" शिष्य ने धीरे से कहा। उसके दाँत भयाकुल होकर कटकटा रहे थे।

एन्टोनियो दौड कर दरवाज़े के पास गया। उसने दरवाज़ा खोल दिया और उसने जिनेवरो को ड्योढ़ी पर गिरा हुआ पाया। वह बिलकुल निर्जीव-सी पड़ी हुई थी। उसके बिखरे हुए बालों में धूल लग गई थी।

परन्तु वह भयभीत न हुआ। इसका कारण यह था कि उसका हृदय दया से द्रवित हो गया था। वह प्रेमपूर्ण शब्द कहते हुए उसकी ओर झुका। उसे उठा कर वह अपने घर के अन्दर ले गया।

उसने उसे तकिया के सहारे बिस्तर पर लिटा दिया। उसने उसे अपना सर्वोत्तम कम्बल उढ़ा दिया। उसने बारटोलिनो के द्वारा उस वृद्ध स्त्री को बुलवाया, जिससे उसने इस कारखाने के कमरे को किराये पर लिया था। उसने चूल्हे में आग जलाई। उसमें थोड़ी शराब गरम करके उसे पीने को दी। वह अब अधिक सुविधा के साथ साँस लेने लगी। यद्यपि वह अभी भी बोलने में असमर्थ थी, तथापि उसने अपनी आँखें खोल दीं। उसकी इस अवस्था को देखकर एण्टोनियो का हृदय आनन्द से भर गया।

"वह स्त्री यहाँ शीघ्र आती है," वह कमरे के अन्दर टहलता हुआ कहने लगा "इस अव्यवस्था के लिये मुझे क्षमा करना श्रीमती जिनेवरा !"

घबराये और शरमाते हुए एण्टोनियो ने छत पर से टोकरी निकाली और उससे कुछ रुपये निकाले। उसको बरटोलिनो को देते हुए उसने फौरन बाजार जाकर सुबह के नाश्ते के लिये गोश्त, रोटी और तरकारियाँ खरीद कर लाने के लिये कहा। जिस समय वह वृद्ध स्त्री वहाँ पर आ गई, उस समय उसने उससे मुर्गी का गरम-गरम शोरबा तैयार करने के लिये कहा।

शिष्य यथासम्भव शीघ्र दौडकर चीज़ें खरीदने के लिये बाज़ार गया। वृद्धा स्त्री मुर्गी का बच्चा मारने के लिए बाहर गई। एण्टोनियो जिनेवरा के पास अकेला रह गया।

उसने उसे अपने पास बुलाया और ज्योंही वह घुटने टेक कर उसके पास बैठा, त्योंही उसने जो कुछ हुआ था, वह सब कह कर सुना दिया।

"ओफ्, मेरे प्यारे, जिनेवरा ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा, "जिस समय मै मरकर तुम्हारे पास आई, उस समय केवल तुम नहीं डरे—केवल तुम्हीं मुझे प्यार करते हो।"

"क्या मै तुम्हारे रिश्तेदारो को बुलवाऊँ—तुम्हारे चाचा, तुम्हारी माँ अथवा तुम्हारे पति, जिसको तुम कहो, मै अभी बुलवाये देता हूँ?" एण्टोनियो ने पूछा।

"मेरे कोई रिश्तेदार नहीं है। मेरे पति, चाचा अथवा माँ कोई भी नहीं है। तुमको छोड़ कर वे सब के सब अपरिचित है। उनके लिये मै मर चुकी हूँ। केवल तुम्हारे लिये मैं जीवित हूँ—और मै तुम्हारी हूँ।"

सूर्य की प्रथम किरणें कमरे के अन्दर आने लगीं। जिनेवरा उसको देखकर मुस्कुराई। सूर्य की किरणें ज्यों ज्यों अधिक तेज़ होने लगीं, त्यों-त्यों जीवन का रंग उसके कपोलों पर दिखलाई देने लगा। उसकी कनपटियों की धमनियों में उष्ण रक्त प्लावित होने लगा। जिस समय एण्टोनियो ने झुक कर उसका आलिंगन किया और उसके अधरों का चुम्बन लिया, उस समय उसे ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे सूर्य से नीरोग कर रहा हो और उसमें एक नूतन और अमर जीवन का संचार हो रहा हो।

"एण्टोनियो," जिनेवरा ने धीरे से कहा, "इस मृत्यु को धन्य है जिसने हमको प्रेम करने की शिक्षा दी, और उस प्रेम को भी धन्य है जो मृत्यु की अपेक्षा कहीं अधिक प्रबल है।"

स्वार्थ-त्यागी खरगोश

लेखक—निकोलाई शेड्रीन

एक दिन किसी खरगोश ने एक भेड़िये को कुपित कर दिया। बात ऐसी हुई कि वह भेड़िये के निवास-स्थान के निकट से ही दौड़ कर जा रहा था। भेड़िये ने उसे देख कर बुलाया—"मेरे छोटे से दोस्त! ज़रा एक मिनट ठहर जाओ प्यारे।" परन्तु खरगोश रुकने के बजाय यथाशक्ति तेज़ी के साथ भागने लगा। भेड़िये ने केवल तीन छलाँगों में उसे पकड़ लिया और वह उससे कहने लगा—"मैंने तुमको जिस समय पहले-पहल बुलाया, उस समय तुम नहीं रुके, इसलिये मैं तुमको यह सज़ा देता हूँ कि तुम्हारा बध कर दिया जाये। परन्तु आज मैं भोजन कर चुका हूँ और मेरी स्त्री भी भोजन से निवृत्त हो चुकी है। इसके अलावा हम लोगों ने पाँच दिन तक के लिये अपना आहार एकत्रित कर लिया है। इसलिये तुम इस झाड़ी के अन्दर बैठ कर अपनी पारी की प्रतीक्षा करो। ऐसा करने पर सम्भवत.—हा! हा! हा!—मैं तुम्हें क्षमा प्रदान भी कर दूँ।"

खरगोश झाड़ी के अन्दर पुट्ठों के बल बैठ गया। वह वहाँ से ज़रा भी न हटा। उसे केवल एक ही बात की चिन्ता थी। वह अपनी मृत्यु के दिन और घण्टे गिनने लगा। वह भेड़िये के निवास-स्थान की ओर देखने लगा। उसको भेड़िये की चमकीली आँखें उसकी निगरानी करती हुई दिखलाई पड़ीं। कभी-कभी तो इससे भी भयकर दृश्य दिखलाई पड़ता था। भेड़िया और उसकी स्त्री मैदान में बाहर आ जाते और उसके पास ही घूमा करते थे। वे उसकी ओर निहारते। भेड़िया अपनी स्त्री से भेड़िया की ज़बान में कुछ कहता। इसके बाद वे दोनों कहकहा मार कर हँस पड़ते, "हा! हा! हा! . ." उनके साथ भेड़ियों के सभी बच्चे वहाँ आते और वे उसके साथ खेलने लगते। वे अपने सिर उसके शरीर से सहलाते और दाँत पीसने लगते. ग़रीब खरगोश का हृदय तड़पने और उछलने लगता था।

उसने कभी भी अपने जीवन को आज के समान प्यार नहीं किया था। वह उच्च कुलोत्पन्न खरगोश था और उसने अपना विवाह एक विधवा खरगोश की पुत्री से निश्चित किया था। जिस समय गर्दन पकड कर भेडिये ने उसे पकड लिया था, उस समय वह अपनी प्रेमिका के पास जा रहा था।

इस समय उसकी प्रेमिका उसकी प्रतीक्षा करती हुई विचार कर रही थी—'कनखियों से देखनेवाले मेरे प्यारे ने मुझे विस्मरण कर दिया है!' अथवा सम्भवत.—सम्भवत. वह उसकी राह देख रही थी—प्रतीक्षा कर रही थी ..और दूसरे के साथ प्यार कर रही थी,.. और... अथवा ऐसा हो सकता है ..वह भी ..खेल कर रही हो। गरीब बच्चे को कहीं झाडी के अन्दर किसी भेडिये ने कहीं पकड़ न लिया हो!...

इस विचार के आते ही उसकी आँखों मे आँसू भर आये और गला भर आया—'हाय! मेरे जीवन का इस प्रकार अन्त हुआ! मेरे सारे हवाई किले नष्ट हो गये। मेरी शादी होने वाली थी। मैंने चाय बनाने के सारे बरतन खरीद लिये थे और मै उस समय की प्रतीक्षा कर रहा था, जब कि मै अपनी स्त्री के साथ कप और तश्तरी मे चाय पिऊँगा,—इसके बदले में आज मेरे साथ क्या हो गया! .अब मेरी मृत्यु के लिये कितने घंटे बकाया रह गये?'...

एक रात को वह जिस स्थान पर बैठा था, वहीं उसे गहरी नींद आ गई। उसने स्वप्न मे देखा कि भेडिये ने उसे अपना खास कमिश्नर नियुक्त किया है। जिस समय वह अपने काम पर कहीं बाहर गया हुआ था, उस समय भेड़िया उसकी प्रेमिका से मिलने के लिये गया था। सहसा उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई उसे स्पर्श कर रहा है। वह जाग गया। उसने अपनी प्रेमिका के भाई को अपने पास पाया।

"तुम्हारी प्रेमिका मर रही है।" उसने कहा—"उसने तुम्हारी आपत्ति का हाल सुन लिया है। वह इस आघात से विह्वल होकर बीमार हो गई है। इस समय उसका केवल यही एक विचार है—'क्या मेरी इसी प्रकार मृत्यु हो जायगी और मै अपने प्रेमी से अन्तिम मुलाकात कर सकूँगी?'"

इन शब्दों को सुनकर वध किया जानेवाला खरगोश बहुत क्षुब्ध हुआ। उसका हृदय फटने-सा लगा। ओफ्! क्यों? उसने अपने इस

दु.खान्त के योग्य तो कोई काम नही किया था। वह बडी ईमानदारी के साथ जीवन व्यतीत किया करता था। उसने कभी विद्रोह नही किया। वह शस्त्र लेकर कभी इधर-उधर नही घूमा। वह सदा अपना काम किया करता था।—क्या इस प्रकार जीवन व्यतीत करने पर भी वह मार डाला जायगा ? मृत्यु ? ओफ् ! विचारो तो सही कि इस शब्द का क्या अर्थ होता है ? इस प्रकार न केवल उसका मृत्यु होगी, परन्तु उसकी भूरे रंग की प्यारी की भी जान चली जायगी। उस बेचारी का तो केवल यही अपराध था कि उसने उससे प्रेम किया था। वह मुझे कनखियों से देखने वाला अपना प्यारा समझती थी। वह मुझे हृदय से प्यार करती थी ! ओफ् ! अगर उसका वश चलता, तो वह उड़ कर उसके पास पहुँच जाता। वह उसकी छोटी-सी भूरी प्यारी है। वह उसके सामने के पंजों को पकड़ कर उसका आलिंगन करता, उसका प्यार करता और उसके नन्हे सिर पर थपकियाँ देता।

"चलो यहाँ से हम दोनों भाग चलें," दूत ने कहा।

इन शब्दों को सुन कर वध किया जानेवाला खरगोश क्षण भर के लिये बदल-सा गया। वह एकदम काँप-सा उठा। उसने अपने कान अपनी पीठ की ओर लटका दिये। वह छलाँगें मारने के लिये तैयार हो या और यहाँ अपना एक निशान भी नहीं छोड़ जाना चाहता था। परन्तु इसी समय उसने भेड़िये के निवास-स्थान को ओर देखा। खरगोश का हृदय दु.ख से काँपने लगा।

"मै ऐसा नही कर सकता।" उसने कहा—"भेड़िये ने मुझे इजाज़त नहीं दी है।"

भेड़िया इस समय उनकी ओर देख रहा था और उनकी बातें सुन रहा था। वह भेड़िये की भाषा में अपनी स्त्री से कुछ धीरे-धीरे बातचीत भी करता जाता था। इसमे सन्देह नहीं कि ये खरगोश की दयालुता की प्रशंसा कर रहे थे।

"चलो, हम लोग यहाँ से भाग चलें," दूत ने दोबारा कहा।

"मै नही भाग सकता।" वध किये जानेवाले खरगोश ने दोबारा कहा।

"तुम लोग यहाँ राज विद्रोह की बातें कैसे कर रहे हो ?" सहसा भेड़िये ने गुर्रा कर कहा।

तो जीभ हो कर सकती और न लेखनी ही। नन्ही भूरी युवती ख
गोश अपने प्रेमी को देख कर अपनी बीमारी बिलकुल भूल गई
वह अपने पिछले पजो के बल खडी हो गई। उसने अपने सिर प
एक नगाड़ा रख लिया और वह अपने अगले पजो से 'घुडसवारो
कूच' का गीत गाने बजाने लगी। उसने अपने प्रेमी से छिप कर यह
बजाना सीखा था। वह अपनी वाक् चातुरी से अपने प्रेमी को आश्च
र्यान्वित कर देना चाहती थी। विधवा खरगोश आनन्द के कारण
अपने होश-हवाश मे न रही। उसे अपने भावी दामाद के बिठालने
के योग्य कोई भी अच्छा स्थान न दिखलाई पडता था। उसके योग्य
उसे कही भोजन भी न दिखलाई पड़ता था। इसके आगमन का
समाचार सुन कर चाची, बहिनें और पडोसी सभी ओर से दौड़ कर
वहाँ आये। वे लोग दूल्हा को देख कर परम प्रसन्न हुए। वे सब
उसका अभिनदन और स्वागत करने लगे।

दूल्हा भी इस समय आपे न में था। वह अपनी प्रेमिका का आलि-
गन किये हुए जोर से कहने लगा—"मुझे शीघ्र स्नान करके अपना
विवाह कर लेना चाहिये।"

"तुम इतनी उजलत क्यो कर रहे हो?" खरगोश की माँ ने
मुस्करा कर कहा।

"मुझे शीघ्र लौट कर जाना है। भेड़िये ने मुझे केवल एक दिन
की छुट्टी दी है।"

इसके बाद उसने अपनी पूरी कहानी सब से कह सुनाई। वह
जिस समय यह हाल बतला रहा था, उस समय उसकी आँखो से
आँसुओ की धारा बह रही थी। यहाँ से जाना भी कठिन था और
वह यहाँ रुक भी नहीं सकता था। वह वचन देकर आया था और
खरगोश का वचन उसके लिये कानून के बन्धन के समान माना जाता
है। सब चाची और बहिनों ने एक स्वर मे कहा—"तू सत्य भाषण
कर रहा है। ऐ कनखियो से देखनेवाले प्यारे, जबान से निकले हुए
शब्द को परम पावन समझना चाहिये। हमारी जाति मे कभी यह
देखने या सुनने में नहीं आया कि किसी भी खरगोश ने अपने वचन
से मुकुर कर कभी भी कलक का टीका अपने मस्तक पर लगाया
हो।"

कहानी जल्द कही जा सकती है ? परन्तु खरगोश का जीवन उससे भी अधिक तेज़ी से भाग सकता है। सुबह सब लोगों ने खरगोश का अभिनन्दन किया और शाम होने के पूर्व ही वह अपनी युवा स्त्री से विदा हो गया।

"इसमें ज़रा भी शक नहीं कि भेड़िया मुझे खा लेगा।" उसने कहा—"इसलिये तू मेरे साथ विश्वासघात न करना। अगर तुझे बच्चे पैदा हो जावे, तो उन्हें बड़ी सावधानी के साथ शिक्षा देना। सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि उन्हें किसी सरकस में भरती करा देना। वहाँ उन्हें न केवल बाजा बजाने ही की शिक्षा दी जायगी, वरन् उन्हें छोटी सी बन्दूक से मटर की गोली का निशाना मारना भी सिखाया जायगा।

इसके बाद सहसा, मानो किसी विचार में डूबा हुआ, उसने भेड़िये का स्मरण करते हुये कहा—"ऐसा भी सम्भव है कि भेड़िया मुझे—हा ! हा ! क्षमा भी प्रदान कर दे।"

इसके बाद वह इन लोगों की आँखों से ओझल हो गया।

×　　　　×　　　　×

जिस समय कनखियों से देखनेवाला खरगोश शादी करके आनन्द में मग्न हो रहा था, उस समय उस देश में बड़ी आपत्ति आयी हुई थी, जो उसके और भेड़िये के निवास स्थान के मध्य में उपस्थित थी। एक जगह अतिशय वृष्टि हुई थी। इसके परिणाम स्वरूप जिस नदी को खरगोश ने इतनी आसानी से तैर कर पार कर लिया था, उसमें इतना अधिक पूर आ गया था कि उसमें ज़मीन से दस पुरुष ऊँचा पानी बह रहा था। दूसरे स्थान में राजा जारान ने राजा निकिल के विरुद्ध युद्ध हो रहा था। तीसरे स्थान में हैजे की बीमारी फैल गई थी। इसलिये आसपास लोगों के रहने के लिये बहुत दूर तक झोप-

डियाँ बनवा दी गई थीं। इसके अतिरिक्त रास्ते पर हर जगह
लोमडी और उल्लू शिकार की टोह में बैठे हुए नजर आ रहे थे।

कनखियों से देखनेवाला खरगोश बहुत होशियार था।
निश्चित समय से तीन घंटा पूर्व वहाँ से रवाना हो चुका था।
जिस समय एक आपत्ति के बाद दूसरी आपत्ति उसके सामने
उपस्थित हुई, तब वह घबरा-सा गया। वह पूर्ण सायकाल और
रात तक बिना कहीं रुके हुए भागता ही चला गया। उसके पैर प
के आघात से फट गये। उसके अगल-बगल के बाल झाडियों में
कर टूट गये। कँटीली डालियों से रगड खाकर उसका शरीर छिल ग
उसकी आँखों के सामने कोहरा-सा छा गया। उसके मुँह से खून
फेन गिरने लगा। इतना होने पर भी उसे एक बड़ी लम्बी मञ्जिल
करनी थी! उसका बँधुआ मित्र सदा उसकी आँखों के सामने दिख
पड़ता था। कभी वह भेड़िये के निवास स्थान के सामने सन्तरी के
यह सोचता हुआ खडा दिखलाई पड़ता था—"इतने घंटे के
प्यारा बहिनोई लौट कर आ जायगा और मुझे इस बन्धन
देगा।" जिस समय खरगोश को यह विचार आता, उस
और अधिक तेज़ी से भागने लगता था। पर्वत, तराई, जंग
दल—उसके लिये सभी समान थे। कभी-क
कि उसका हृदय फट जावेगा। तब वह
इच्छा के वेग से दबा देता था। उसके
भावनायें उसे कभी भी पथ-भ्रष्ट न
तथा आँसू बहाने के लिये ज़रा भी
भी विचार न कर सकता था। उस
था और वह यह कि वह अपने मि
जाकर छुडाये।

अब सूर्योदय होना प्रारम्भ हो

अपनी छिपने की जगह मे चल दिये । वायु शीतल हो गई । सहसा चारों ओर मृत्यु के समान शान्ति स्थापित हो गई । इतना होने पर भी कनखियों से देखनेवाला खरगोश आगे भागा चला जा रहा था । उसके हृदय में केवल एक विचार था—"क्या अपने मित्र की रक्षा के लिये मैं समय पर न पहुँच पाऊँगा ?"

पूर्व दिशा में लाली आ गई । पहले दूर क्षितिज पर अवस्थित बादलों में अग्नि के समान लालिमा दिखलाई पड़ी । इसके बाद वह धीरे-धीरे बढ़ने लगी—एक ज्योति । घास पर ओस के कण चमक रहे थे । पक्षी जाग गये थे । चिँउटियाँ, कीड़े और भौंरे इधर-उधर घूम रहे थे । कहीं से थोड़ा-सा धुआँ निकलता हुआ दिखलाई पड़ा । राई और जई के पौधों से कुछ आवाज़ सुनाई देने लगी—साफ, . अधिक साफ । परन्तु कनखियों से देखनेवाले को न तो कुछ दिखलाई देता था और न कुछ सुनाई पड़ता था । वह आप ही आप बारम्बार यह गुनगुनाता था—"मैंने अपने मित्र का सर्वनाश कर डाला—अपने मित्र का सर्वनाश कर डाला ।"

निदान् एक पहाड़ी दिखलाई दी । इसके आगे एक दलदल था । उसी दलदल में भेड़िये का निवास-स्थान था . । बहुत देर कर दी तुमने, ऐ कनखियों से देखने वाले, तुमने बहुत अधिक देर कर दी । ..

उसने अपनी पूरी शक्ति लगाकर एक अन्तिम प्रयत्न किया । वह छलाँग मारकर पहाड़ी के शिखर पर चढ़ गया, परन्तु वह इसके आगे न जा सका । वह थकावट से मरा जा रहा था । क्या उसका सारा प्रयत्न निष्फल जायगा ?"..

नकशे के समान भेड़िये का निवासस्थान उसकी आँखों के सामने नाच-सा रहा था । कहीं दूर पर किसी गिरजाघर की घड़ी से छ बजने की आवाज़ सुनाई दी । इस दुखित प्राणी के हृदय पर घड़ी बजने का प्रत्येक आघात हथौड़े के समान चोट पहुँचा रहा था । आखिरी घंटे के

ड़ियाँ बनवा दी गई थी। इसके अतिरिक्त रास्ते पर हर जगह भेड़िये, लोमड़ी और उल्लू शिकार की टोह में बैठे हुए नज़र आ रहे थे।

कनखियों से देखनेवाला खरगोश बहुत होशियार था। वह निश्चित समय से तीन घंटा पूर्व वहाँ से रवाना हो चुका था। परन्तु जिस समय एक आपत्ति के बाद दूसरी आपत्ति उसके सामने आकर उपस्थित हुई, तब वह घबरा-सा गया। वह पूरी सायंकाल और आधी रात तक बिना कहीं रुके हुए भागता ही चला गया। उसके पैर पत्थरों के आघात से फट गये। उसके अगल-बगल के बाल झाड़ियों में अटक कर टूट गये। कँटीली डालियों से रगड़ खाकर उसका शरीर छिल गया। उसकी आँखों के सामने कोहरा-सा छा गया। उसके मुँह से खून और फेन गिरने लगा। इतना होने पर भी उसे एक बड़ी लम्बी मंजिल तय करनी थी! उसका बँधुआ मित्र सदा उसकी आँखों के सामने दिखलाई पड़ता था। कभी वह भेड़िये के निवास स्थान के सामने सन्तरी के समान यह सोचता हुआ खड़ा दिखलाई पड़ता था—"इतने घंटे के अन्दर मेरा प्यारा बहिनोई लौट कर आ जायगा और मुझे इस बन्धन से छुड़ा देगा।" जिस समय खरगोश को यह विचार आता, उस समय वह और अधिक तेज़ी से भागने लगता था। पर्वत, तराई, जंगल और दल-दल—उसके लिये सभी समान थे। कभी-कभी तो उसे ऐसा जान पड़ता कि उसका हृदय फट जावेगा। तब वह इस भावना को अपनी प्रबल इच्छा के वेग से दबा देता था। उसके महान् उद्देश्य से इस प्रकार की भावनायें उसे कभी भी पथ-भ्रष्ट न कर सकती थीं। उसका दुःखी होने तथा आँसू बहाने के लिये ज़रा भी समय न था। वह उस समय कुछ भी विचार न कर सकता था। उसके मन में केवल एक ही प्रबल विचार था और वह यह कि वह अपने मित्र को भेड़िये के पंजे से किस प्रकार जाकर छुड़ाये।

अब सूर्योदय होना आरम्भ हो गया। उल्लू और चमगादड़ अपनी

अपनी छिपने की जगह में चल दिये । वायु शीतल हो गई । सहसा चारों ओर मृत्यु के समान शान्ति स्थापित हो गई । इतना होने पर भी कनखियों से देखनेवाला खरगोश आगे भागा चला जा रहा था । उसके हृदय में केवल एक विचार था—"क्या अपने मित्र की रक्षा के लिये मैं समय पर न पहुँच पाऊँगा ?"

पूर्व दिशा में लाली आ गई । पहले दूर क्षितिज पर अवस्थित बादलों में अग्नि के समान लालिमा दिखलाई पड़ी । इसके बाद वह धीरे-धीरे बढ़ने लगी—एक ज्योति । घास पर ओस के कण चमक रहे थे । पक्षी जाग गये थे । चिँउटियाँ, कीड़े और भौंरे इधर-उधर घूम रहे थे । कहीं से थोड़ा-सा धुआँ निकलता हुआ दिखलाई पड़ा । राई और जई के पौधों से कुछ आवाज़ सुनाई देने लगी—साफ,.. अधिक साफ । परन्तु कनखियों से देखनेवाले को न तो कुछ दिखलाई देता था और न कुछ सुनाई पड़ता था । वह आप ही आप बारम्बार यह गुनगुनाता था—"मैंने अपने मित्र का सर्वनाश कर डाला—अपने मित्र का सर्वनाश कर डाला !"

निदान् एक पहाड़ी दिखलाई दी । इसके आगे एक दलदल था । उसी दलदल में भेड़िये का निवास-स्थान था । बहुत देर कर दी तुमने, ऐ कनखियों से देखने वाले, तुमने बहुत अधिक देर कर दी । .

उसने अपनी पूरी शक्ति लगाकर एक अन्तिम प्रयत्न किया । वह छलाँग मारकर पहाड़ी के शिखर पर चढ़ गया; परन्तु वह इसके आगे न जा सका । वह थकावट से मरा जा रहा था । क्या उसका सारा प्रयत्न निष्फल जायगा ?"...

नकशे के समान भेड़िये का निवासस्थान उसकी आँखों के सामने नाच-सा रहा था । कहीं दूर पर किसी गिरजाघर की घड़ी से छ बजने की आवाज़ सुनाई दी । इस दुखित प्राणी के हृदय पर घड़ी बजने का प्रत्येक आघात हथौड़े के समान चोट पहुँचा रहा था । आखिरी घंटे के

बजते ही भेड़िया अपने निवास-स्थान से उठा। उसने जमुहाई ली और आनन्द के साथ अपनी पूँछ हिलाने लगा। इसके बाद वह बँधुआ खरगोश के पास गया। उसने उसके सामने के पंजों को पकड़ लिया और उसके शरीर के अन्दर अपना पंजा घुसेड दिया। वह चीर कर उसके दो टुकड़े करना चाहता था। एक हिस्सा वह अपने लिये और दूसरा हिस्सा अपनी स्त्री के लिये बनाना चाहता था। भेड़िये के बच्चे अपने माता और पिता को घेर कर खड़े हुए थे। वे लोग दाँत पीसते हुए सामने देख रहे थे। ..

"मैं आ गया! आ गया।" कनखियों से देखनेवाले खरगोश ने कहा। उस समय ऐसा प्रतीत होता था, मानो एक ही साथ हज़ार खरगोश बोल रहे हों। इस प्रकार कहता हुआ वह पहाड़ी से कूद कर दलदल में आ गया।

भेड़िया उसकी प्रशंसा करने लगा।

"मुझे आज जान पड़ा," उसने कहा—"कि खरगोश के वचन पर विश्वास किया जा सकता है। अब मेरे नन्हे प्यारो, मेरी यह आज्ञा है कि तुम दोनों इस झाड़ी के अन्दर बैठ जाओ। जब तक मैं तैयार न हो जाऊँ, तब तक मेरी प्रतीक्षा करो। इसके बाद मैं तुम्हें...हा! हा!... क्षमा कर दूँगा।"

सुन्दरी चोर

लेखक—माइकेल वाई० लरमोनटफ

समुद्र के तट पर स्थित शहरों में टामान सबसे अधिक दरिद्र शहर है। मैं वहाँ भूख के मारे अधमरा हो गया। एक रोज़ तो डूबते-डूबते बचा।

मैं बहुत रात गये एक पुरानी गाड़ी पर सवार होकर वहाँ पहुँचा—गाड़ीवान ने अपने थके हुए घोड़ों को एक पत्थर के मकान के पास खड़ा कर दिया। वह मकान शहर के प्रवेश द्वार के निकट अकेला स्थित था। एक घुड़सवार वहाँ पहरा दे रहा था। उसने हमारी गाड़ी की घंटी की आवाज़ सुनी। वह सहसा जागे हुए आदमी के से तीक्ष्ण स्वर में बोला—"उधर कौन जा रहा है ?"

सारजेण्ट और एक अफसर बाहर निकल आये। मैंने उन्हें बतलाया कि मैं एक अफसर हूँ और राजाज्ञानुसार यात्रा कर रहा हूँ। हमको यहाँ ठहरने के लिये एक स्थान की आवश्यकता है।

अफसर हम लोगों को शहर के अन्दर ले गया। जिन मकानों की कोशिश की गई, उन सब मकानों में लोग रहते थे। शीतकाल का समय था। मुझे लगातार तीन रात तक ज़रा भी सोने को न मिला था। मैं बहुत थका हुआ था। निरर्थक पूछ-ताछ से मुझको क्रोध चढ़ आया।

"मेरे मित्र," मैंने अफसर से कहा—"मुझे ऐसी जगह पहुँचा दो, जहाँ कम से कम मैं लेट सकूँ। इसकी चिन्ता मत करो कि वह स्थान कहाँ पर है।"

"इसी मुहल्ले में एक झोपड़ी है," अफसर ने उत्तर दिया—"जहाँ आप सो सकते हैं, परन्तु भय है कि वह आपके रहने लायक़ नहीं है।"

"चलो!" उसकी उक्ति पर बिना ध्यान दिये हुये मैंने कहा।

गन्दी सकरी गलियों पर बहुत देर तक घूमने के बाद, हम लोग समुद्र के किनारे एक मकान के पास पहुँचे।

मेरे प्रस्तावित निवास स्थान के फूस के छप्पर तथा सफेद दीवारों पर पूर्ण चन्द्रमा का प्रकाश पड रहा था। आँगन के चारो ओर नोकदार लकड़ियाँ लगी हुई थीं। असली मकान के पास मुझे एक बहुत पुरानी और टूटी-सी झोपडी दिखलाई पड़ी। इस झोपडी से आँगन से होती हुई समुद्र तक ज़मीन ढालू हो गई थी। मुझे अपने पैर के पास समुद्र के पानी का फेन दिखलाई पड़ा। चन्द्रमा के प्रकाश में समुद्र की अशान्ति स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी। रात्रि के शासक की ज्योत्स्ना में मुझे तट से बहुत दूरी पर दो जहाज़ दिखलाई पड रहे थे। उनके काले मस्तूल आकाश में फैले हुये दो मकड़ी के जालों के समान जान पड़ते थे। 'यहाँ काम चल जायगा,' मैंने मन ही मन कहा—'कल सुबह मैं घेलेन्दचिक की ओर रवाना हो जाऊँगा।'

एक घुड़सवार मेरे यहाँ नौकर का काम कर रहा था। मैंने उसे अपना सन्दूक निकालने के लिये कहा। सवार को भी मैंने जाने के लिये कह दिया। इसके बाद मैंने मकान-मालिक को बुलाया। मुझे कोई उत्तर न मिला। मैंने कुण्डी खटखटाई, परन्तु फिर भी मुझे कोई जवाब न मिला। इसका क्या अर्थ हो सकता था? मैंने दोबारा कुण्डी खटखटाई। बमुश्किल आख़िर एक चौदह वर्ष का लड़का मेरे पास आया।

"मकान-मालिक कहाँ है?"

"मकान का कोई मालिक नहीं है।" रूसी ज़बान में बालक ने जवाब दिया।

"कोई मालिक नहीं है। तो मकान की मालकिन कहाँ है?"

"गाँव गई है।"

"तब इन दरवाज़ों को कौन खोलेगा?" मैंने दरवाज़ों पर लात जमाते हुये कहा।

दरवाज़ा आप ही आप खुल गया और वहाँ सरदीली बदबू की एक लहर ही आई।

मैंने एक दियासलाई जलाई। उसके प्रकाश में मुझे, निश्चेष्ट नाक से मेरे सामने खड़ा हुआ एक अन्धा लड़का दिखलाई पड़ा।

मैं यहाँ इस बात को बतला देना आवश्यक समझता हूँ कि मैं अंधे, बहरे, लँगड़े और कुबड़ों के बहुत ज़्यादा खिलाफ़ हूँ। साराय में

जिन लोगो का अंग-भग हो गया है, उन्हे देख कर मुझे घृणा उत्पन्न होती है। मै इस बात को बतला चुका हूँ कि शारीरिक सगठन के अनुसार मनुष्य का नैतिक स्वभाव भी बनता है। मनुष्य के किसी भी अग के भग हो जाने से उसकी आत्मा की उन्नति मे बाधा पहुँचती है।

मैने बालक के चेहरे को बारीकी से देखा। परन्तु आँख के अभाव मे मनुष्य केवल चेहरे को देख कर क्या बतला सकता है? मै उसकी ओर कुछ समय तक देखता रहा। उसको देखते समय मेरे मन में दया के भाव जागृत हो आये। इसी समय मैने उसके ओठो पर एक चपल मुस्कराहट देखी। यह देख कर इस सम्बन्ध मे मुझ पर बहुत ख़राब प्रभाव पड़ा।

'क्या यह अन्धा लड़का उतना ही अन्धा है, जितना कि वह दिखलाई दे रहा है?' मैने मन ही मन कहा। मै अपने प्रश्न का उत्तर देते हुए मन ही मन कहने लगा कि लड़के को मोतियाबिन्द हो गया है। कोई भी नकली मोतियाबिन्द नही बना सकता। इतना तर्क-वितर्क करने के बाद भी मेरे मन में कुछ शक बकाया रहा।

"क्या इस मकान की स्वामिनी तुम्हारी माता है?" मैने लड़के से पूछा।

"नही।"

"तब तुम कौन हो?"

"एक ग़रीब मातृ-पितृ-हीन-बालक।" उसने जवाब दिया।

"मकान की स्वामिनी के कोई बाल बच्चे हैं?"

"उनकी एक कन्या है, जो एक तारतारी के साथ समुद्र की ओर चली गई है।"

"कौन तारतारी?"

"मै क्या जानूँ? वह क्रीमिया का तारतारी है। उसे कर्च का मल्लाह भी कहते है।"

मै झोपड़ी के अन्दर गया। वहाँ दो बेञ्चें, एक टेबिल और एक विशाल वस्त्रागार था। पास ही एक स्टोव रखा हुआ था। यही उस कमरे का सारा सामान था। दीवार पर किसी धार्मिक आत्मा की तस्वीर न थी। यह एक खराब चिह्न था।

खिड़की के टूटे हुए काँच के द्वारा समुद्र की ठंडी हवा कमरे के

अन्दर आ रही थी मैंने अपने चमड़े के सन्दूक से एक मोमबत्ती निकाली। उसको जला कर मैं वहाँ अपना प्रबन्ध करने लगा। मैंने एक ओर अपनी तलवार और बन्दूक रख दी। अपनी पिस्तौलों को मैंने टेबिल पर रख दिया। मैं एक बेंच पर लेट गया। अपने ऊनी कोट को पहिन कर लेटने में मुझे काफी आराम मालूम पड़ा।

मेरा नौकर दूसरी बेंच पर लेट गया। दस मिनट के बाद उसे गहरी नींद लग गई। मैं अभी भी जाग रहा था। लड़के का प्रभाव जो मेरे मन पर पड़ चुका था, उसे मैं किसी भी प्रकार से हटा न सकता था। उसकी दो सफेद आँखें अभी भी मेरे सामने नाचती-सी दिखाई पड़ रही थीं।

एक घंटा बीत गया। खिड़की के द्वारा फर्श पर चन्द्रमा का सुखद प्रकाश फैल रहा था।

सहसा वहाँ एक परछाईं दिखलाई पड़ी। जिस स्थान पर पहले चन्द्रमा का प्रकाश फैला हुआ था, वहाँ परछाईं का अँधेरा देख कर मुझे आश्चर्य हुआ। मैं उठ खड़ा हुआ और खिड़की के पास गया। एक मनुष्य का आकार वहाँ से दोबारा निकल कर अदृश्य हो गया। ईश्वर जाने वह कहाँ चला गया। मुझे इस बात का विश्वास ही न होता था कि ढाल की ओर से वह समुद्र के तट पर चला गया होगा। इसके अतिरिक्त दूसरे विचार के आने की गुंजाइश भी तो न थी।

अपने ओवरकोट को फेंक कर और तलवार को हाथ में लेकर मैं घर से बाहर निकला। मैंने अपने सामने अंधे लड़के को खड़ा पाया। मैं दीवार के पीछे छिप गया। वह दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ा। वह चलते समय बहुत सतर्क-सा दिखलाई पड़ता था। वह अपने बगल के अन्दर कोई चीज़ दबाये हुए था। वह मोड़ से धीरे-धीरे समुद्र की ओर बढ़ा। 'यही मौक़ा है'—मैंने आत्मगत कहा, 'जिस समय गूँगे को बोलने और अंधे को देखने की शक्ति मिल जाया करती है।'

मैं कुछ फासले पर रह कर उसका पीछा करने लगा। मुझे चिन्ता केवल इस बात की थी कि वह मेरी आँख से ओझल न हो जाय।

इसी समय चन्द्रमा बादलों से घिर गया। समुद्र पर काला कोहरा छा गया। इस समय भी अन्धकार में जहाज़ के मस्तूल पर,

समुद्र के किनारे एक लालटेन रखी हुई दिखाई दे रही थी। समुद्र की लहरें विकराल रूप धारण कर रही थीं। वे उसे चेतावनी-सी दे रही थीं कि यदि वह इस ओर बढ़ कर आयगा, तो उसका भक्षण कर लिया जायगा। वह इस समय समुद्र के इतने पास आ गया था कि एक कदम आगे बढ़ते ही उसके डूब जाने की आशंका जान पड़ती थी। परन्तु रात के समय इधर-उधर घूमने का यह उसका पहला मौक़ा न जान पड़ता था। वह एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर इस सावधानी और फुर्ती के साथ कूद रहा था कि मैं मजबूर होकर अपना उपर्युक्त निष्कर्ष निकाल सका था। समुद्र उसके पैरों के पास ही था, परन्तु उसे ज़रा भी भय न जान पड़ता था। सहसा वह रुका। ऐसा जान पड़ा, मानो उसे कोई आवाज़ सुनाई पड़ी हो। वह एक चट्टान पर बैठ गया। उसने अपनी गठरी अपने बगल में रख ली। इसी समय उसके पास सफेद पोशाक-धारी कोई एक शक्ल दिखलाई दी। मैं एक चट्टान के पीछे छिप गया। उनकी निम्नलिखित बातचीत को मैं भली प्रकार सुन सका

"हवा," एक स्त्री के स्वर ने कहा—"बहुत तेज़ है। जन्को न आवेगा।"

"जन्को!" अन्धे लड़के ने उत्तर दिया—"जन्को को हवा का डर नहीं है।"

"परन्तु बादल गहरे और काले होते जा रहे हैं!"

"अन्धकार में तट-रक्षक की निगाह बचाना सरल है।"

"अगर वह डूब जाय, तो क्या होगा?"

"तब तो तुम्हें रविवार के दिन रेशमी फीते पहिनने को न मिलेंगे।"

इस बातचीत को मैं ध्यानपूर्वक सुनता रहा। मैंने मन ही मन कहा कि जिस अन्धे लड़के ने मुझसे अशुद्ध रूसी भाषा में बातचीत की थी, वह बिलकुल शुद्ध और स्पष्ट रूसी भाषा भी बोल सकता है।

"देखो," वह अपने हाथ की ताली बजाते हुए बोला—"मैं बिलकुल ठीक कहता था। जन्को न तो समुद्र को, न हवा को, न कोहरे को और न तट-रक्षक को ही डरता है। सुनो, मुझे समुद्र की

लहरों की आवाज़ नहीं सुनाई पड रही है। यह तो उसकी पतवार का-सा शब्द है।"

स्त्री खडी हो गई। वह चिन्तित सी होकर अन्धकार में देखने का प्रयत्न करने लगी। "तुम गलत कह रहे हो," उसने कहा—"मुझे कुछ भी सुनाई नहीं पडता।"

मैंने भी इस बात के देखने की कोशिश की कि दूरी पर कोई नाव दिखलाई पड़ती है अथवा नहीं। एक क्षण के बाद ही समुद्र की लहरों पर एक काला चिह्न सा दिखलाई पडने लगा। कभी वह उठ जाता और कभी वह नीचे गिरता हुआ दिखाई पड़ रहा था। आखिर मुझे एक नाव पानी पर नाचती हुई और वेग से किनारे पर आती हुई स्पष्ट दिखलाई पडने लगी।

जो आदमी इस नाव को चला रहा था, वह अवश्य ही कोई साहसी मल्लाह होगा। ऐसे कुपित समुद्र पर रात के समय चौदह मील तक नाव को चलाना खतरे से खाली नहीं था। इस आपत्ति का मुकाबिला करने का कोई विशेप कारण अवश्य होना चाहिये। मैं इस छोटी-सी नाव को बदक के समान जल पर तैरते और डूबते हुए देखता रहा। ऐसा प्रतीत होता था कि शीघ्र ही किनारे पर पहुँचने के पूर्व लहरों से टकरा कर चूर-चूर हो जायगी। इसी समय मल्लाह ने अचानक बड़ी होशियारी के साथ नाव को एक शान्त स्थान पर लगा दिया। वह उतर कर किनारे पर खडा हो गया।

मनुष्य मझोल कद का था। वह अपने सिर पर भेड़ के चमड़े की एक टोपी पहिने हुए था। उसने अपने हाथों के द्वारा सकेत किया। इसी समय दो रहस्यपूर्ण मनुष्य जो आपस में बातचीत कर रहे, उसके पास पहुँच गये। इसके बाद वे तीनो मिल कर नाव से एक बोझ को खींचने लगे। वह बोझ इतना अधिक वज़नी जान पड़ता था कि मुझे इस बात का ताज्जुब होने लगा कि इस छोटी-सी नाव में इतना भारी बोझा किस प्रकार रखा जा सका होगा। आखिर उन लोगों ने बोझ को निकाल कर अपने कंधों पर रखा। वे लोग वहाँ से चल दिये और शीघ्र ही अदृश्य हो गये।

मेरे लिये इस समय सब से उत्तम बात अपने निवास-स्थान को लौट जाने की थी। परन्तु जिस आश्चर्यजनक दृश्य को मैंने देखा था,

उसका मुझ पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि मैं बेचैनी के साथ सूर्योदय होने की प्रतीक्षा करने लगा।

मेरा नौकर जिस समय सोकर उठा, उस समय उसने मुझे पूरी पोशाक पहिने हुए देखा। वह चकरा गया। मैंने उसे अपनी रात्रि की घटना नहीं बतलाई। मैं कुछ देर तक खिड़की के द्वारा नीलाकाश की ओर देख कर मन ही मन उसकी प्रशंसा करने लगा। आकाश पर बादल छाये हुए थे। क्रीमिया का दूरस्थ तट बहुत दूर तक फैला हुआ था। वह आकाश पर फूले हुये बनफशा के समान जान पड़ता था। उसके अन्त में एक चट्टान थी। उसके ऊपर प्रकाश गृह की मीनार दिखलाई पड़ती थी। इसके बाद मैं बाहर गया। मैं चानागोरा के क़िले पर पहुँचा। वहाँ जाकर मैंने सेनापति से पूछा कि मैं घेलेन्दचिक के लिये कब रवाना हो सकूँगा?

दुर्भाग्यवश सेना-नायक मुझे कोई भी निश्चयात्मक उत्तर न दे सका। बन्दरगाह पर जितने भी जहाज़ थे, वे सब व्यवसायी जहाज़ थे, जिनकी भरती अभी तक पूरी नहीं हुई थी। "सम्भवतः" उसने कहा—"तीन या चार दिन के अन्दर डाकवाला जहाज़ आयगा। तभी कुछ प्रबन्ध किया जा सकेगा।"

मैं बहुत निराश होकर अपने निवास-स्थान को लौट गया। दरवाजे पर नौकर खड़ा हुआ था। वह मेरे पास बड़े विनती भाव से आकर आग्रहपूर्वक पूछने लगा—"क्या कोई कुसमाचार है?"

"हाँ," मैंने उत्तर दिया—"ईश्वर जाने, हम लोग यहाँ से कब रवाना हो सकेंगे।"

इन शब्दों को सुन कर नौकर की चिन्ता बढ़ गई। वह मेरे निकट आया और धीरे-धीरे कहने लगा—"यह स्थान ठहरने के योग्य नहीं है। एक परिचित घुड़सवार से मेरी मुलाक़ात हुई थी। हम लोग पिछले साल एक ही सेना में काम करते थे। जिस समय मैंने उसे अपने ठहरने का स्थान बतलाया उस समय उसने कहा, 'बहुत ख़राब स्थान है, और वहाँ के निवासी भी अच्छे नहीं हैं।' आप उस अन्धे लड़के के सम्बन्ध में क्या विचार करते हैं? क्या कभी भी किसी आदमी ने अन्धे आदमी को एक स्थान से दूसरे स्थान को दौड़ते हुए, बाज़ार जाते हुए

ओर रोटी तथा पानी लाते हुए देखा है ? यहाँ लोग इस बात पर कुछ
विचार ही नहीं करते।"

"क्या इस मकान की स्वामिनी आ गई ?"

"आज सुबह जब आप बाहर गये हुए थे, तब एक वृद्धा स्त्री अपनी
पुत्री के साथ यहाँ आई थी।"

"कौन लड़की ? उसकी लड़की तो बाहर चली गई है।"

"मैं नहीं बतला सकता कि वह कौन है। परन्तु देखिये, वृद्धा स्त्री
उस ओर मकान के अन्दर बैठी हुई है।"

मैं अन्दर गया। स्टोव के अन्दर खूब आग सुलग रही थी। नाश्ता
पक रहा था। ऐसे गरीब आदमियों के लिये इतना कीमती नाश्ता बनना
सचमुच आश्चर्य की बात थी। जिस समय मैं स्त्री से बोला, उस समय
उसने मुझसे कहा कि वह बड़ी बहरी है।

ऐसी परिस्थिति में उससे बातचीत करना असम्भव था। मैं अन्धे
लड़के की तरफ मुड़ा और उसके कान के पास मुँह ले जाकर कहने
लगा—"मैं तुम से पूछता हूँ, मेरे छोटे से जादूगर, कि कल रात को
बगल में एक पोटली दबाये हुए तुम कहाँ गये थे ?"

वह एकदम रोने और चिल्लाने लगा। इसके बाद वह सिसकियाँ
भरते हुए कहने लगा—"मैं कल रात को कहाँ जा रहा था ? मैं कहीं
नहीं गया। और एक पोटली लेकर ! कैसी पोटली ?"

वृद्धा स्त्री ने यह सिद्ध करके बतला दिया कि वह जिस समय
चाहे, उसके कान सब कुछ सुन सकते थे ?

"यह बात गलत है," उसने ज़ोर से कहा—"आप एक अभागे
लड़के को क्यों तंग करते हैं ? आप उसे क्या समझते हैं ? आपका
उसने क्या नुकसान किया है ?"

मैं इस शोर-गुल को अधिक बरदाश्त न कर सका। इसलिये मैं
यह संकल्प करके बाहर चला गया कि इस पहेली को किसी न किसी
तरह सुलझाना चाहिये।

अपना ओवर-कोट पहिन कर मैं दरवाज़े के सामने एक बेंच पर
बैठ गया। मेरे सामने समुद्र की लहरें क्रीड़ा कर रही थीं। अभी तक
रात के तूफान का उन पर असर बकाया था। उनकी आवाज़ शहर-
निवासियों की अस्तव्यस्त आवाज़ सी जान पड़ती थी। इसको सुन कर

मुझे पुराने जमाने की याद आ गई। मुझे वह समय स्मरण हो आया जब कि मैं उत्तर दिशा की ओर गया था, वहीं हमारी उज्ज्वल राजधानी अवस्थित है। धीरे-धीरे मुझे वहाँ की एक घटना की याद आने लगी।

सम्भवतः एक घंटा और व्यतीत हो गया। सहसा मेरे कानों में गाने की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैं सुनने लगा। एक आश्चर्यपूर्ण और दुःखद गाना था। कभी वह धीमा और दुःखद जान पड़ता था और कभी तेज़ और आनन्दप्रद प्रतीत होता था। गाने की आवाज आकाश से आती हुई सुनाई पड़ती थी। मैंने ऊपर देखा। मुझे मकान की छत पर एक युवती लड़की दिखलाई पड़ी। वह सादी पोशाक पहिने थी। उसके बाल बिखरे हुए थे। वह जलदेवी-सी दिखलाई पड़ती थी। वह सूर्य की किरणों से रक्षा करने के लिये अपने एक हाथ को आँखों के सामने फैलाये थी। वह बहुत दूर क्षितिज की ओर देखती हुई अपना गाना गाने में तल्लीन थी!

मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह वही औरत है, जिसकी आवाज़ मैंने समुद्र-तट पर कल रात को सुनी थी। मैंने गानेवाली की ओर दोबारा देखा, परन्तु वह अदृश्य हो गई थी। एक क्षण के बाद वह बहुत तेज़ी से मेरे सामने से निकली। वह दूसरा गाना गा रही थी और चुटकियाँ बजा रही थी। वह वृद्धा स्त्री के पास गई और उसने उससे कुछ कहा। वृद्धा स्त्री कुछ कुपित-सी हुई। युवती लड़की ठहाका मार कर हँसी। इसके बाद छलाँग मार कर वह मेरे पास आई। मेरे पास आकर वह सहसा रुक गई और मेरी ओर टकटकी लगा कर देखने लगी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह मुझे देख कर चकित हो रही है। इसके बाद वह उदासीन भाव से वहाँ से मुड़कर शान्तिपूर्वक समुद्र-तट की ओर चला गई।

परन्तु उसके कौशलों का अभी तक अन्त नहीं हुआ था। शेष सारे दिन मैंने थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसको देखा। वह गाता और नाचता हुई दिखलाई पड़ी। अजीब जीव है। उसकी मुखाकृति में पागलपन के ज़रा भी लक्षण न दिखलाई पड़ते थे। इसके विपरीत उसकी आँखों से बुद्धिमानी झलकती थी। उन लोगों ने मुझ पर चुम्बक के समान आकर्षणशील कोई एक प्रयोग किया। वे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

परन्तु जिस समय मैं बोलने के लिये तैयार होता था, वह अपने अधरों में हलकी मुस्कान लेकर तुरन्त भाग जाती थी।

मैंने ऐसी स्त्री पहले कभी नहीं देखी थी। वह सुन्दरी नहीं कही जा सकती थी। परन्तु सुन्दरता के सम्बन्ध में मेरे अपने स्वतंत्र विचार थे। वह देखने में खराब भी न लगती थी। घोड़ों और स्त्रियों पर नसल का बहुत ज़बरदस्त प्रभाव पड़ता है। चलने से तथा हाथ और पैरों के आकार से ये दोनों पहिचाने जा सकते हैं। नाक भी इनके समझने मे बहुत कुछ काम देती है। रूस में छोटे पैर की अपेक्षा सुन्दर नाक बहुत कम दिखलाई पड़ती है। मेरी इस गाने वाली समुद्री परी की आयु लगभग अठारह वर्ष की थी।

मुझको उस सुन्दरी के स्वरूप में असाधारण लचीलापन आकृष्ट कर रहा था। अपने सिर को विलक्षण तरीके से हिलाना, उसके लम्बे लम्बे सुन्दर केशों का सुनहरी तरंगों के समान लहराना और उसकी नाक की सुघरता मे आकर्षण और मादकता भरी हुई थी।

जिस प्रकार उसकी चिन्ताकर्षक नाक में मादकता थी, उसी प्रकार उसकी कनखियों मे—चितवन मे—कुछ कालापन और जंगलीपन था। चंचल स्वभाव की गानेवाली गोयेकी मिगनन से मिलती-जुलती थी। वह जर्मन दिमाग की एक निराली सृष्टि थी। इन दोनों व्यक्तियों के बीच में एक विचित्र समानता थी। बेचैनी कर देने वाली अशान्ति से पूर्ण शान्ति में सहसा परिवर्त्तित हो जाना, एक ही प्रकार के गूढ़ शब्दों का प्रयोग करना और एक ही समान गीत गाना इन दोनों की अपनी विशेषतायें थीं।

सन्ध्या समय मैंने अपनी जलपरी को झोपड़ी के दरवाज़े पर रोक कर उससे कहा—"मेरी सुन्दरी, मुझे यह बतलाओ कि तुम आज छत पर बैठ कर क्या कर रही थी?"

"मैं देख रही थी कि हवा किस दिशा की ओर बह रही है।"

"तुमसे इस बात से क्या सरोकार?"

"जिस ओर से हवा आती है, उसी ओर से सुख सम्पत्ति ...."

गाने से भी शायद सुख सम्पत्ति आयगी?"

"जहाँ गाना सुनाई पड़ता है, वहाँ आनन्द रहता है।"

"यदि तुम्हारे गाने से दु:ख प्राप्त हो, तब उसका क्या कारण समझा
ना चाहिये ?"

"यदि दु:ख आ जावे, तो उसे सहन करना चाहिये। दु:ख से आनन्द
अन्तर बहुत अधिक नहीं है।"

"तुम्हें ये सब बातें किसने सिखलाई हैं ?"

"किसी ने भी नहीं। मैं स्वप्न में देखती हूँ और गाती हूँ। जो
मेरे गाने को समझते हैं, वे उसे सुनते हैं और जो लोग मेरे गाने को
नहीं सुनते, वे मेरी भावनाओं को समझ ही नहीं सकते।

"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"जिन लोगों ने मुझे बप्तिस्मा दिया है, उनसे पूछिये।"

"तुमको बप्तिस्मा किसने दिया है ?"

"मैं नहीं जानती।"

"ओफ्! तुम बहुत रहस्यमयी हो। परन्तु मैं तुम्हारे सम्बन्ध में
कुछ जानता हूँ।"

उसके चेहरे पर किसी भी प्रकार के भाव का चिह्न दिखलाई
नहीं पड़ा। उसके अधर ज़रा भी न हिले-डुले।

"कल रात को," मैंने कहा,—"तुम समुद्र के तट पर थीं। इसके
बाद मैंने उस दृश्य का वर्णन किया, जिसे मैंने देखा था। मेरा ख़याल
था कि मेरी बातों को सुन कर वह ज़रूर चिन्ताग्रस्त सी होगी। परन्तु
इसका उस पर कोई प्रभाव न पड़ा।

"आपने एक अनोखी मुलाकात में सहायता की," वह हँसते हुए
मुझसे बोली—"परन्तु आपको अधिक कुछ भी नहीं मालूम। जिस
बात को आप जानते हैं, उसे आपको गुप्त रखना चाहिये। आप उसे
बहुमूल्य निधि के समान रख सकें, तो बहुत अच्छा हो।"

"परन्तु अगर", मैंने गम्भीरता-पूर्वक और अवहेलना की दृष्टि से
कहा—"मैं अपनी आँखों देखी बात सेनापति को बतला दूँ तो—"

इन शब्दों को सुन कर वह गाना गाती हुई वहाँ से शीघ्र चम्पत
हो गई। वह एक भयभीत पक्षी के समान अदृश्य हो गई। उसे यह
धमकी देकर मैंने ग़लती की। उस समय मैंने उसकी गम्भीरता पर
ज़रा भी विचार नहीं किया।

रात्रि का आगमन हुआ। मैंने अपने नौकर से चाय तैयार करने के लिये कहा। मैंने एक मोमबत्ती जलाई, और टेबिल के पास अपनी कुरसी पर बैठ कर अपना लम्बा हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। जिस समय मैं चाय पी रहा था, उस समय दरवाज़ा खुला था। मुझे कपड़ों की खड़खड़ाहट की आवाज़ सुनाई पड़ी। मै जल्द उठा। मै अपनी समुद्र-परी को पहिचान गया।

वह मेरे सामने चुपचाप बैठ गई। वह आँख गड़ा कर मेरी ओर देखने लगा। मै काँप उठा। वह एक ऐसी जादूभरी चितवन थी, जिसके द्वारा मुझे पहले भी कष्ट मिल चुका था। वह आशा कर रही थी कि मै उससे बातचीत करूँ। परन्तु किसी अवर्णनातीत भाव के कारण मेरी वक्तृत्व शक्ति का लोप-सा हो गया। उसका चेहरा मौत के समान पीला था। मुझे ऐसा ख़याल हुआ कि उसके इस पीलेपन में मै उसके हृदय की क्षुब्धता को पढ़ सकता था। उसकी अँगुलियाँ मशीन के समान टेबिल पर पड़ रही थीं। उसका शरीर काँपता हुआ सा जान पड़ रहा था। उसका वक्षःस्थल तेज़ी के साथ ऊपर नीचे उठ और गिर रहा था।

सुखान्त नाटक के समान इन दृश्यों को देख कर मैं अन्त में तग हो गया। मै इसको बिलकुल सामान्य तरीके से अन्त करना चाहता था। मैंने इस सुन्दरी को एक प्याला चाय देना चाहा। इसी समय वह सहसा उठ खड़ी हुई। मेरे सिर पर अपने दोनों हाथ रख कर वह उत्कृष्ट प्रेम भाव से मेरी ओर निहारने लगी।

मेरी आँखों के सामने अन्धकार छा गया। इसके बदले में मेरी इच्छा उसका चुम्बन लेने की हुई; परन्तु वह एक साँपिन के समान बड़बड़ाती हुई वहाँ से भाग गई—"आज रात के समय जब सर्वत्र शान्ति स्थापित हो जावे, तब मुझसे समुद्र के तट पर मिलियेगा।" इसके बाद वह मेरे चाय के बरतनों और लालटेन को अस्तव्यस्त करके वहाँ से अदृश्य हो गई।

"यह बड़ी शैतान है!" मेरे नौकर ने कहा। वह अपने चाय के डिब्बे की तालाश कर रहा था।

इसके बाद वह अपनी बेंच पर लेट गया। धीरे-धीरे मेरी घबराहट भी शान्त हो गई।

"सुनो," मैंने उससे कहा,—"जिस समय तुम्हें पिस्तौल की आवाज़ सुनाई पड़े, उस समय तुमसे जितनी जल्द हो सके, तुम समुद्र-तट पर आ जाना।"

उसने अपनी आँखें मलीं और मशीन के समान जवाब दिया—"बहुत अच्छा, महाशय।"

मैं पिस्तौल को अपने कमरबन्द में रख कर बाहर चल पड़ा। समुद्र-परी सड़क के निकट एक ऊँचे स्थान पर खड़ी हो कर मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। वह एक हलका कपड़ा पहिने थी, जो उसकी कमर के आसपास रूमाल के समान बँधा हुआ था।

"मेरे पीछे चले आओ।" उसने मेरा हाथ पकड़ कर मुझसे कहा।

हम लोग पथरीले रास्ते से इस तरीके से निकल आये कि मुझे यह बात ज़रा भी समझ में न आई कि हमारा सिर फूटने से किस प्रकार बच गया। इसके बाद हम लोग तेज़ी के साथ दायीं ओर को मुड़े। ठीक इसी रास्ते पर कल रात को अन्धा लड़का भी गया था। चन्द्रमा अभी तक उदय नहीं हुआ। दो छोटे-छोटे तारे प्रकाशगृह की अग्नि के समान अन्धकार को दूर कर रहे थे। क्षुब्ध जल की तरंगें लगातार ऊपर उठकर नीचे बैठ जाती थीं। वे तट के समीप की एकान्त नाव को स्पर्श करती हुई उसके साथ खेलवाड़ कर रही थीं।

"इस पर बैठ जाओ," उसने कहा। मैं हिचकिचाया। मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि मुझे समुद्र पर भावपूर्ण भ्रमण करना ज़रा भी अच्छा न जान पड़ता था। परन्तु इस समय उसकी प्रार्थना अस्वीकार करना असम्भव था। वह तीन मस्तूल की नौका पर कूद पड़ी। मैं भी उसके पीछे-पीछे कूदा। हम लोग आगे बढ़े।

"इस समस्त व्यवहार का क्या अर्थ है?" मैंने कुपित होकर कहा।

"इसका अर्थ यह है" उसने मुझे एक बेंच पर बैठा कर और अपने दोनों हाथ मेरी कमर में डाल कर जवाब दिया—"इसका अर्थ यह है कि मैं आपको प्यार करती हूँ।" उसके गरम-गरम कपोल मेरे कपोलों के समीप थे। मुझे अपने चेहरे पर उसकी गरम साँस का अनुभव हुआ। सहसा मैंने किसी चीज़ को पानी के अन्दर गिरते हुए सुना।

स्वाभाविक तरीके से मेरा हाथ मेरे कमरबन्द पर गया। पिस्तौल व
से गायब था।

मुझे एक जबरदस्त शक ने जकड़ लिया। मेरा खून खौल उठा
दिमाग गरमा गया। मैं उसकी ओर देखने लगा। हम लोग तट
बहुत दूर लग चुके थे और मुझे तैरना नहीं आता था। मैंने उसके आलि
गन से निकलने का प्रयत्न किया, परन्तु उसने मुझे बिल्ली के समा
पकड़ लिया था। नाव एक ओर झुक गई। उसने सहसा एक ज़ोर व
धक्का देकर मुझे नाव के बाहर फेंक ही दिया। मैंने नाव के वजन व
बराबर करने का भरसक प्रयत्न किया। इसके बाद मेरे इस विश्वास
घाती भार्या और मेरे साथ भयकर तुमुल युद्ध होने लगा। इस युद्ध
मैंने अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग किया। मुझको इस बात का भ
पता चल रहा था कि यह घृणित प्राणी अपनी चपलता के बल प
मुझ पर अपना आधिपत्य जमा रही है।

"तुम्हारा क्या मतलब है?" मैंने उससे उसके दोनों छोटे हा
बहुत मज़बूती के साथ पकड़ कर कहा। मुझे उसकी अँगुलियों क
की आवाज़ भी सुनाई दी। परन्तु मेरे द्वारा इतनी व्यथ
भी वह एक शब्द भी न बोली। इस प्रकार रेंगनेवा
। के समान उस पर विजय प्राप्त न की जा सकी।

हमको देखा था," अन्त में वह चिल्लाकर बोली—
हमको बदनाम करना चाहते हैं।" इसके बाद उसने शीघ्र ही
महान् और भीषण प्रयत्न द्वारा मुझे नीचे पटक दिया। उसके
और मेरे—दोनों के शरीर कमज़ोर नाव की एक ओर झुके हुए थे
उसके बाल तो पानी के अन्दर ही पहुँच गये थे। बड़ा नाजु
समय था। मैं घुटनों के बल खड़ा हो गया। मैंने एक हाथ से उसके बाल
पकड़ लिये और दूसरे हाथ से उसका गला दबा दिया। इस प्रकार
उसको बेदम बना कर मैंने उसे अपने कपड़े छोड़ने को मजबूर किया।
इस प्रकार उसके हाथ छुड़ाकर मैंने उसे समुद्र के ऊपर फेंक
दिया।

उसका [illegible] [illegible] ऊपर दिखलाई
पड़ा। इसके बाद वह [illegible]
नाव पर मुझे एक [illegible] [illegible]

श्रम करने के बाद नाव को खेकर मैं किनारे पर लगा सका। जिस समय मैं अपनी झोपड़ी की ओर लौट रहा था, उस समय मैंने उस स्थान की ओर देखा, जहाँ पिछली रात को अन्धा लड़का मल्लाह के आगमन की प्रतीक्षा में खड़ा हुआ था। इस समय आकाश पर चन्द्रमा का प्रकाश फैल गया था। मुझे समुद्र के तट पर सफेद वस्त्र-धारी कोई आकार दिखलाई पड़ा। कौतूहलवश मैं अन्तरीप के समान निर्मित एक स्थान के पीछे छिप गया। उस स्थान से मैं अपने चारों ओर क्या हो रहा है, वह सब देख सकता था। जिस समय मैंने वहाँ सफेद पोशाक पहिने हुए अपनी जलपरी को देखा, उस समय मेरे आश्चर्य और आनन्द का ठिकाना न रहा। वह अपने लम्बे खूबसूरत बाल और भीगे हुए वस्त्र से पानी निचोड़ रही थी। एक नाव बहुत फासले से हमारी तरफ आती हुई दिखलाई पड़ रही थी। उस नाव से वही मल्लाह निकल कर बाहर आया, जिसे मैंने कल रात को देखा था। उसके सिर पर वही तारतारी टोपी लगी हुई थी। मैंने इस समय देखा कि उसके बाल रूसी ढंग से कटे हुए थे। उसके कमरबन्द में एक लम्बा छुरा लटक रहा था।

"जन्को," युवा लड़की ने ज़ोर से कहा—"सर्वनाश हो गया!"

इसके बाद वे लोग बातचीत करने लगे। परन्तु वे इतनी धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे कि मैं कुछ भी न सुन सका।

"अन्धा लड़का कहाँ है?" जन्को ने अन्त में अपनी आवाज़ तेज़ करते हुए कहा।

"वह यहाँ बहुत जल्द आ जावेगा," उत्तर मिला।

उसी समय वहाँ अन्धा लड़का आया। वह अपनी पीठ पर एक पोटली लादे हुये था। उसने पोटली को नाव पर रख दिया।

"सुनो," जन्को ने कहा "यहाँ अच्छी तरह से निगरानी रखना। जिन मालों को तुम जानते हो, वे बेशकीमती हैं।"—को (यहाँ एक नाम उच्चारण किया गया, जिसे मैं समझ न सका) बतला दो कि अब मैं उसकी नौकरी में नहीं हूँ। परिस्थिति ने [illegible] खतरा लाया है। वह अब मुझे कभी न देख पायगा। परि[illegible] अधिक सम्भव है कि मुझे कहीं अन्यत्र जाकर [illegible] पड़ेगा। उसको मेरे सदृश दूसरा आदमी [illegible] न [illegible]

स्वाभाविक तरीके से मेरा हाथ मेरे कमरबन्द पर गया। पिस्तौल वहाँ से गायब था।

मुझे एक जबरदस्त शक ने जकड लिया। मेरा खून खौल उठा। दिमाग गरमा गया। मै उसकी ओर देखने लगा। हम लोग तट से बहुत दूर लग चुके थे और मुझे तैरना नहीं आता था। मैंने उसके आलिंगन से निकलने का प्रयत्न किया, परन्तु उसने मुझे बिल्ली के समान पकड लिया था। नाव एक ओर झुक गई। उसने सहसा एक ज़ोर का धक्का देकर मुझे नाव के बाहर फेंक ही दिया। मैंने नाव के वजन को बराबर करने का भरसक प्रयत्न किया। इसके बाद मेरे इस विश्वासघाती साथी और मेरे साथ भयकर तुमुल युद्ध होने लगा। इस युद्ध में मैने अपनी समस्त शक्ति का प्रयोग किया। मुझको इस बात का भी पता चल रहा था कि यह घृणित प्राणी अपनी चपलता के बल पर मुझ पर अपना आधिपत्य जमा रही है।

"तुम्हारा क्या मतलब है?" मैंने उसके उसके दोनों छोटे हाथ बहुत मज़बूती के साथ पकड कर कहा। मुझे उसकी अँगुलियों की कड़कड़ाहट की आवाज़ भी सुनाई दी। परन्तु मेरे द्वारा इतनी व्यथा पहुँचने पर भी वह एक शब्द भी न बोली। इस प्रकार रेंगनेवाले जन्तुओं के स्वभाव के समान उस पर विजय प्राप्त न की जा सकी।

"आपने हमको देखा था," अन्त में वह चिल्लाकर बोली—"आप हमको बदनाम करना चाहते हैं।" इसके बाद उसने शीघ्र ही एक महान् और भीषण प्रयत्न द्वारा मुझे नीचे पटक दिया। उसके और मेरे—दोनों के शरीर कमज़ोर नाव की एक ओर झुके हुए थे। उसके बाल तो पानी के अन्दर ही पहुँच गये थे। बड़ा नाज़ुक समय था। मै घुटनों के बल खड़ा हो गया। मैने एक हाथ से उसके बाल पकड लिये और दूसरे हाथ से उसका गला दबा दिया। इस प्रकार उसको बेबस बना कर मैने उसे अपने कपड़े छोड़ने को मजबूर किया। इस प्रकार उससे अपना पिंड छुड़ाकर मैंने उसे समुद्र के ऊपर फेंक दिया।

उसका सिर दो बार फेन उगलती हुई लहरों के ऊपर दिखलाई पड़ा। इसके बाद वह मुझे बिलकुल न दीख पड़ी।

नाव पर मुझे एक पुरानी पतवार मिली। उसके द्वारा बहुत परि-

श्रम करने के बाद नाव को खेकर मैं किनारे पर लगा सका। जिस समय मैं अपनी झोपड़ी की ओर लौट रहा था, उस समय मैंने उस स्थान की ओर देखा, जहाँ पिछली रात को अन्धा लड़का मल्लाह के आगमन की प्रतीक्षा मे खड़ा हुआ था। इस समय आकाश पर चन्द्रमा का प्रकाश फैल गया था। मुझे समुद्र के तट पर सफेद वस्त्र-धारी कोई आकार दिखलाई पड़ा। कौतूहलवश मैं अन्तरीप के समान निर्मित एक स्थान के पीछे छिप गया। उस स्थान से मै अपने चारों ओर क्या हो रहा है, वह सब देख सकता था। जिस समय मैंने वहाँ सफेद पोशाक पहिने हुए अपनी जलपरी को देखा, उस समय मेरे आश्चर्य और आनन्द का ठिकाना न रहा। वह अपने लम्बे खूबसूरत बाल और भीगे हुए वस्त्रों से पानी निचोड़ रही थी। एक नाव बहुत फासले से हमारी तरफ आती हुई दिखलाई पड़ रही थी। उस नाव से वही मल्लाह निकल कर बाहर आया, जिसे मैंने कल रात को देखा था। उसके सिर पर वही तारतारी टोपी लगी हुई थी। मैंने इस समय देखा कि उसके बाल रूसी ढंग से कटे हुए थे। उसके कमरबन्द में एक लम्बा छुरा लटक रहा था।

"जन्को," युवा लड़की ने ज़ोर से कहा—"सर्वनाश हो गया।"

इसके बाद वे लोग बातचीत करने लगे। परन्तु वे इतनी धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे कि मैं कुछ भी न सुन सका।

"अन्धा लड़का कहाँ है?" जन्को ने अन्त मे अपनी आवाज़ तेज़ करते हुए कहा।

"वह यहाँ बहुत जल्द आ जावेगा," उत्तर मिला।

उसी समय वहाँ अन्धा लड़का आया। वह अपनी पीठ पर एक पोटली लादे हुये था। उसने पोटली को नाव पर रख दिया।

"सुनो," जन्को ने कहा, "यहाँ अच्छी तरह से निगरानी रखना। जिन बालों को तुम जानते हो, वे बेशकीमती हैं।"—को (यहाँ एक नाम उच्चारण किया गया, जिसे मैं समझ न सका) बतला दो कि अब मैं उसकी नौकरी में नहीं हूँ। परिस्थिति ने खराब पलटा खाया है। वह अब मुझे कभी न देख पायगा। परिस्थिति इतनी अधिक भयावह है कि मुझे कहीं अन्यत्र जाकर कुछ न कुछ काम करना पड़ेगा। उसको मेरे सदृश दूसरा आदमी आसानी से कभी न मिलेगा। तुम इस बात को

भी बतला सकते हो कि मेरे द्वारा की गई भयावह सेवाओं के उपलक्ष्य में यदि उसने उदार हृदय से मुझे पारितोषक देकर सन्तुष्ट किया होता, तो मैं उसे इस संकटपूर्ण परिस्थिति में छोड़ कर कभी न जाता। यदि वह मुझको ढूँढ़ना चाहे, मेरा पता जानना चाहे, तो उसे तुम यह बतला देना कि जहाँ वायु गर्जन करती हो, और जहाँ समुद्र से फेन निकलता हो, उसी स्थान को वह मेरा मकान समझ ले।"

एक क्षण की शान्ति के बाद जेन्को फिर कहने लगा—"उससे कह देना कि वह मेरे साथ गई है। वह यहाँ नहीं रह सकती। वृद्धा स्त्री से कह देना कि उसने अपनी अच्छी तरह से निवाह डाली। अब उसे सन्तुष्ट रहना चाहिये। हम लोग उससे दोबारा न मिल सकेंगे।"

"और मैं?" अन्धे लड़के ने धीरे से पूछा।

"मैं तुम्हारे सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं उठाना चाहता।"

युवा लड़की नाव पर कूद गई और वह अपने हाथ के द्वारा अपने साथी को इशारा करने लगी।

"यहाँ आओ," उसने अन्धे लड़के से कहा—"यह लो। इसके द्वारा तुम अदरख की रोटी खरीद लेना।"

"क्या इसमें अधिक और कुछ नहीं?" अन्धे लड़के ने कहा।

"हाँ, इसे ले लो," और पैसे का एक सिक्का रेत पर गिर पड़ा।

अन्धे लड़के ने उसे न उठाया।

जेन्को नाव पर बैठ गया। अन्धा लड़का समुद्र के तट पर बैठा रहा। वह रोता हुआ सा जान पड़ा। बेचारा बालक! वह बहुत दुखी हुआ। तकदीर ने मुझे इन शान्त चोरों के बीच में क्यों डाल दिया? जिस प्रकार पत्थर पड़ने से जल गन्दा हो उठता है, उसी प्रकार मैंने इन लोगों को चुब्ध किया। उसके अलावा पत्थर के समान मैं डूबने-डूबने बचा।

जिस समय मैं घर से वापस आया, उस समय मेरा नौकर इतनी गहरी नींद में सो रहा था कि उसे जगाना निरी निर्दयता थी। मैंने बत्ती जलाई। प्रकाश में मैंने देखा कि मेरी छोटी-सी पोटली जिसमें मेरी बेशकीमती चीज़ें थीं, तलवार की मूँठ वाली मेरी तलवार मेरी सरकेशिया की कटार (जिसे मेरे एक मित्र ने मुझे दी थी) सब वहाँ से गायब कर दिये गये थे। इस समय मेरी समझ में आया कि अन्धे लड़के ने जिस पोटली को नाव पर रखा था, उसमें क्या-क्या सामान था।

मैंने धक्का देकर नौकर को जगाया, उसे उसकी असावधानी के लिये बहुत डाँटा और अपने आपे से बाहर हो गया। परन्तु मेरे क्रोध से मेरी चोरी गई हुई चीज़ें वापस न मिलीं।

मैं अधिकारियों के पास किस प्रकार शिकायत कर सकता था ? यदि मैं उनके पास जाकर यह बतलाता कि एक अन्धे लड़के ने मेरा सामान चुरा लिया है और एक युवा लड़की ने मुझे पानी के अन्दर डुबो दिया था, तो मेरी बात सुन कर सब लोग मेरा मखौल उड़ाने के अतिरिक्त और करते ही क्या!

गीति-नाट्य

लेखक—एलेक्सी रेमिसव

शीतल धूल-धूसरित प्रात काल था।

काम पर तैनात सिपाही ने जम्हाई लेते हुए रजिस्टर के वर्क़ उलटाये—उसको नींद-सी मालूम हो रही थी। उसका चित्त घवरा रहा था।

टेलीफोन लगातार जोर से बजने लगा। एक सारजैण्ट जो पास ही खड़ा था, वहाँ बैठ गया और कहने लगा —"आग के ताल्लुक़ के काग़-ज़ात कहाँ है? तमगों का इनाम? हाँ, तमगे...ईह? "

एक भारी बोझ से लदा हुआ डाकिया अन्दर आया। एक भूरे पुराने बाबू ने डाक का मुलाहिज़ा दिया।

"यह पारसल हमारी नहीं है," वह नाक के बल मिनमिनाया, "हमारी नहीं है..."

"क्या आप सिनेजरोव हैं?" सारजैण्ट ने इस प्रकार पूछा, मानो वह टेलीफोन पर बात कर रहा हो। "सभा-भवन में जाकर ठहरो, वहाँ कुछ देर ठहरने में आपका कोई नुकसान न होगा।"

पीछे मैदान में कहीं बाँसुरी बज रही थी।

गाड़ी के घोड़ों की घर-घराहट और पैरों के शब्द सुनाई पड़ रहे थे।

भूरे-भूरे बादल धीरे-धीरे सूर्य के ऊपर चले जा रहे थे। उनका कुछ देर के लिये सुनहरा रंग हो जाता था। ज़रा देर के बाद ही वे वहाँ से हट जाते थे। उनका रंग पूर्ववत् फिर भूरा हो जाता था।

एक कलम चरमरायी।

"ज़रा देर ठहरो; वह यहाँ बहुत जल्द आवेगा।" इन्सपेक्टर के दफ्तर में एक दरख्वास्त देनेवाले की ओर से इशारा करते हुए, सिपाही ने कहा।

प्रार्थना के लिये गिरजाघर के घंटे बजने लगे। उनकी एक ही समान आवाज़ खराब-सी जान पड़ती थी।

'यह किसी का जनाज़ा होना चाहिये,' स्लेकिन ने सोचा—'यदि ऐसा न होता, तो दो घंटों का बजना कब का बन्द हो जाता।' अपने 'शानदार निवास-स्थान' की दरिद्र खिड़कियों से नज़र हटाते हुए वह दीवार की ओर देखने लगा। उसको सब जगह घूम कर उस जगह आने दो जहाँ पर 'कुस्कव जादूगर' लिखा हुआ है। उसने एक बार और बादामी रंग के उस इश्तहार को पढ़ा, जिसमें चलती-फिरती नाटक कम्पनी के खेल का ऐलान किया गया था।

घबराहट के साथ हाथ पैर फैलाते हुए वह किंकर्त्तव्य विमूढ़-सा हो गया। वह कुत्ते के समान जम्हाई लेने लगा।

टूटा फूटा पुराना स्टूल इधर-उधर हिल कर चरमराने लगा।

× × ×

स्लेकिन को प्रारम्भ ही से सब बातों का स्मरण हो आया। उसको न केवल कल की अभागी शाम का स्मरण हो आया, जिसका भयकर और शोचनीय अन्त हुआ था, बल्कि उसे अपने समस्त जीवन का खयाल आ गया। वह अपने जीवन के प्रारम्भ काल में सेंटपीटर्सबर्ग के शहर में इस दुःखदाई छिद्र में किस प्रकार रहता था, जहाँ उसे किसी शैतान ने लाकर पटक दिया था, उसके नेत्रों के समक्ष दिखाई पड़ने लगा। इस प्रकार उसने प्रतीक्षा के अनन्त समय को व्यतीत किया। वह इन्सपेक्टर के आने की राह देख रहा था। वह उसके साथ इस बात का निर्णय करनेवाला था कि वह जेल में इसी प्रकार दरिद्र स्टूल पर बैठ कर समय बितावेगा अथवा उसे शहर की दुःखों सड़कों पर स्वतन्त्रता-पूर्वक घूमने का अवसर मिल सकेगा।

स्लेकिन को सब लोग जानते थे। वह अच्छा ख्यातनामा शिक्षक था। उसको सभी मातायें आदर की दृष्टि से देखती थीं। जिन विद्यार्थियों को वह पढ़ाता था, वे बिना समय बरबाद किये, अगली कक्षा में चढ़ा दिये जाते थे। कुछ ऐसे भी लोग थे, जो उसके पूर्व जीवन से अपरिचित थे। परन्तु सभी लोग उसके दुर्भाग्य पर दुःख प्रकट करते थे। उन लोगों को उसकी दुर्दशा देख कर उसी प्रकार का दुःख होता था, जैसा उन्हें अपने अकेले ओवरकोट के खो

को देख कर हो सकता था। ऐसा जान पड़ता था कि वह सदा बिना
ओवरकोट लिये ही बाहर जाता था। उसके पायजामे पानी से भीगा
करते थे। कभी-कभी अच्छे मौसम में भी निश्चयात्मक रूप से पानी
उस पर बरस जाता था।

वह निरुपद्रवी था—वह किसी को भी व्यथा न पहुँचाता था। इस
समय यह नाटक मानो आसमान से आकर इस शहर के अन्दर टूट
पड़ा। ऐसे शहर में रह कर जहाँ एक बैंड बाजा भी न हो, नाटक देखने
न जाना, उन मधु-मक्खियों के पालने के समान था, जिनका मधु कभी
चखने को भी न मिलता था। कुछ नाटक के शौकीन मित्रों की तलाश
कर—और ऐसे बहुत मित्र थे—स्लेंकिन ने एक बॉक्स रिजर्व कराने का
प्रबन्ध कर लिया। उन्होंने ठीक समय पर बॉक्स रिज़र्व करा लिया।
वे लोग सज्जनोचित व्यवहार करने के लिये रज़ामन्द हो गये। उन लोगों
ने स्वयं गाने न गाने का निश्चय कर लिया। उन लोगों ने बातचीत
न करने का भी निश्चय किया। तय की हुई सभी बातों में सबसे आव-
श्यक बात यह थी कि वे लोग वहाँ समय पर पहुँच जावेंगे। कोई भी
देर से न जावेगा। नाटक देखने का दोबारा मौका न जाने कब मिलेगा।
परन्तु प्रत्यक्ष रूप से इस मामले में किसी शैतान ने विघ्न उपस्थित कर
दिया, अन्यथा ऐसी दुर्घटना से निकल जाना सिवाय सौभाग्य के और
क्या माना जा सकता था। स्लेंकिन के साथ एक शोचनीय दुर्घटना
घटी—वह नाटक में देरी से पहुँचा—इसका कारण यह था कि वह
इन्सपेक्टर की प्रतीक्षा में बहुत देर तक बैठा रहा। इसी के फलस्वरूप
उसे इतना अधिक विलम्ब हुआ।

वह परदा खुलने के पहले नाटकघर पहुँच गया। परन्तु उसी समय
उसने अपना ओवरकोट उतारा और बॉक्स की तलाश करने लगा। खेल
शुरू हो चुका था। उसने बॉक्स का दरवाज़ा बन्द पाया। बाहर खड़ा
रहना असम्भव था। इसमें उसका कोई अपराध न था। एक विद्यार्थी

ने उसे रोक लिया था। उसकी घड़ी भी कुछ सुस्त थी। स्लेकिन दर-वाज़े को खटखटाने लगा, परन्तु उसे कोई उत्तर न मिला। जवाब इस-लिये नहीं मिला कि उसने इसी प्रकार की सूचना पहले से दे दी थी।

नाटकघर दर्शकों से ठसाठस भरा हुआ था। परमात्मा! वे लोग कैसा गा रहे थे! इस प्रकार तो विदेशी नाटक वाले भी नहीं गाते। गाने के अलाप में इतना आकर्षण और सुन्दर स्वर-कम्पन था कि सलकार में यह सर्वोत्कृष्ट गाना जान पड़ता था। ऐसी इच्छा होती थी कि इस गाने को सदा के लिये सुनता ही रहे।

गाने के स्वर-कम्पन को कुछ सुन कर स्लेकिन उद्वेलित हो उठा। समस्त धैर्य का परित्याग कर और अपने निश्चय को भूलकर वह अपनी पूरी शक्ति द्वारा दरवाज़े को खटखटाने लगा। वह तुरन्त नाटकघर के अन्दर जाने के लिये व्याकुल होने लगा।

यह उसका अपराध न था—वह समय पर आ गया था—नौकर उसका ओवरकोट और दूसरी सामग्रियाँ यदि अधिक समय तक लेता रहा, तो उसका अपराध कैसे माना जा सकता था। उसकी आँख कम-ज़ोर होने के कारण बोक्स के ढूँढ़ने में उसे अधिक समय लग गया। चौदह वर्ष से लगातार वह चश्मे का इस्तेमाल कर रहा था। पाँच वर्ष के बाद आज वह नाटक देखने के लिये आया था। इस शहर में अनि-च्छापूर्वक आने को भी उसे इतना समय व्यतीत हो चुका होगा। वह इस थिएटर में काफी अधिक समय तक रह चुका है—वह उनसे बार-बार दरवाज़ा खोलने का तक़ाज़ा करने लगा—उसको इस प्रकार का तक़ाज़ा करने का अधिकार भी प्राप्त था।

"मुझे अन्दर जाने दो। क्या तुम मेरी बात को सुन रहे हो? दरवाज़ा खोलो! यह बड़ी कमीनी हरकत है! क्या तुम इस बात को नहीं समझते?" वह मुँह, हाथ और पैर द्वारा दरवाज़ा खुलाने का आग्रह करता रहा। वह इतने ज़ोर से आवाज़ लगा रहा था कि उसकी

निरन्तर ज़िद्दी और बढती हुई आवाज़ की प्रतिध्वनि थियेटर के दूस
ओर से सुनाई पडने लगी।

इसी दरमियान पुलिस इस्पेक्टर वहाँ आ गया। उसके साथ
सशस्त्र सिपाही भी थे। उनके हाथ में तलवारें थीं, जिन्हे वे हवा
घुमा रहे थे। वे लोग किसी भी गोलमाल के प्रबन्ध करने का तैयार
कर रहे थे। उन लोगों को एक कारण भी मिल गया। एक ही स्व
और एक से ही शब्दों में दोनों ने स्लैंकिन को शोर-गुल न मचाने के लिये
प्रार्थना की। उन लोगों ने शान्तिपूर्वक तथा बडी दृढ़ता के साथ य
प्रार्थना की।

"सुनो पुलिस का प्रधान इस घृणित तरीके से व्यवहार नह
करते।"

स्लैंकिन ने कुछ भी न सुना। वह अधिक रुष्ट होकर दरवाजे को खट
खटाने लगा। अचानक पैरों के चलने का शब्द और चिल्लाने की आवाज़
सुनाई पडने लगी। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि पहला दृश्य समाप्त
हो चुका था। इसके बाद उसकी छाती पर किसी चीज़ का ज़बरदस्त
धक्का लगा। उसे ऐसा जान पड़ा कि उसके शरीर के किसी स्थान पर
किसी ने कोई चीज़ भोंक दी। वह आसमान में उड़ता हुआ सा जान
पडने लगा। इसी समय किसी आदमी ने उसके पैर पकड़ लिये। उसका
उड़ना बन्द हो गया। दरवाज़ा खुला और लोग उसे ज़बरदस्ती घसीट
कर बाहर ले गये। वह कल देखेगा—सशस्त्र पुलिस के सिपाही ने उसे
पकड़ लिया—पुलिस का प्रधान.. अशान्ति

इसके बाद उसी हाथ ने मज़ाकिया तौर पर उस प्रकार पकड़ लिया
जिस प्रकार काँटे को मछली पकड़ लेती है। उसने पकड़ कर उसे ऊपर
उछाला, दृढ़ता के साथ कुछ बात धीरे-धीरे कही और स्वप्न के समान
गाड़ी आगे बढ़ गई।

स्लेंकिन को पुलिस के थाने पर ले जाकर 'सभ्य पुरुषों के कमरे' के अन्दर बन्द कर दिया गया।

वह एक पुरानी कुरसी पर बैठ गया। वह सुपरिण्टेण्डेण्ट के आने के समय की प्रतीक्षा करने लगा। परन्तु समय इतने धीरे-धीरे व्यतीत हो रहा था कि मानो उसे आगे बढ़ने की हिम्मत ही न होती थी। "सम्भवत. वह यहाँ बिलकुल ही न आवेगा! और मान लो कि वह यहाँ बिलकुल ही नहीं आता, तब?"

स्लेंकिन ने अपने घुटने मोड लिये, अपनी आँखें बन्द कर लीं और जाने भर का एक प्रयास करने लगा। उसको उस ओर घमण्ड के साथ अपने घूमने के समय का स्मरण होने लगा। वहाँ लोग उसकी बातों को सुना करते थे। उसने वहाँ कई नाटक भी देखे थे—वे ऐसे नाटक थे, जिनमें चलिपापिन भाग लिया करते थे उसकी भी अच्छी आवाज़ थी। वह भी गा सकता था...

सहसा दरवाज़े के उस ओर और बाहर सब जगह शान्ति छा गई। गिरजाघर के घंटों का बजना बन्द हो गया। बादल कहीं भी घूमते हुए नहीं दिखलाई पड़ रहे थे। केवल वहाँ एक गाड़ी के आने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी ..

स्लेंकिन शीघ्र उठा और अपने लसलसे हाथों को पाजामे से पोंछ कर कुछ रुखाई के साथ गुनगुनाने लगा—"महाशय, श्रीयुत सुपरिण्टेण्डेण्ट . "

"कुस्थाव बाजीगर," सुखी बाजीगर दीवार से निकल आया और गुलाबी खेल का इश्तहार खिड़की के ज़रिये बाहर सड़क पर उड़ कर चला गया।

दरवाज़े खुल गये और स्लेंकिन छोड़ दिया गया।

आपके लिये ही यह नाटक खेला गया था।

कला की एक चीज़

लेखक—एण्टन चेख़व

सशा स्मिरनव, अपनी माँ का इकलौता बेटा, डाक्टर कोशेलकव के दफ्तर में, नम्बर २२३ के बोर्स गज़ट के अन्दर कोई चीज़ लपेट कर दबाये हुए, प्रविष्ट हुआ।

"आह, मेरे प्यारे बच्चे!" कहते हुए डाक्टर ने अभिवादन किया—"कहो, सब आनन्द-मंगल तो है? कोई नया समाचार?"

"आइवन कोशेलकव, मेरी माँ ने आपको आदरपूर्वक धन्यवाद देने की आज्ञा देकर मुझे यहाँ भेजा है।" सशा ने बहुत अधिक उत्तेजित स्वर में कहा। इस प्रकार कहते हुए उसने अपना हाथ अपने वक्षःस्थल पर रखा। "मैं अपनी माँ का इकलौता बेटा हूँ और आपने मेरे प्राण बचाये हैं—मुझे एक भयंकर बीमारी से अच्छा किया है, और हम दोनों इस बात को समझ नहीं पाते कि आपको इस कृपा के लिये किस प्रकार धन्यवाद दें।"

"बस, इतना काफी है, जवान आदमी!" डाक्टर ने उसकी बात काट कर और प्रसन्न होकर कहा—"मैंने वही काम किया, जो मेरे स्थान पर रह कर कोई भी आदमी करता।"

"मैं अपनी माँ का इकलौता बेटा हूँ!" सशा फिर कहने लगा—"हम लोग गरीब आदमी हैं, इसलिये आप की सेवाओं के उपलक्ष्य में सचमुच हम कुछ भी नहीं दे सकते। इस बात का हमको दुःख है। इसी कारण हमारी आत्मा को शान्ति नहीं मिल रही है, डाक्टर! हम लोग, अर्थात् मैं और मेरी माँ—जिसका कि मैं इकलौता बेटा हूँ, आप से विनम्र प्रार्थना करते हैं कि आपके प्रति हमारे आदर और कृतज्ञता के रूप में आप हमारे इस प्रेमोपहार को स्वीकार कर लीजिये। यह उपहार बहुत क़ीमती है। यह प्राचीन कांसे का बना हुआ है। यह शिल्प का एक अनोखा काम है।"

"इसकी तो वास्तव मे कोई आवश्यकता नहीं है!" डाक्टर ने कुछ कुपित होकर कहा—"अब इसकी क्या ज़रूरत है?"

"नहीं, परन्तु आप इसे कृपा कर अस्वीकार न कीजिये।" सशा ने पुलिन्दे को खोलते हुए कहा—"यदि आप इसे अस्वीकार कर देंगे, तो मुझे और मेरी माँ को बहुत दुःख होगा। इसे मेरे स्वर्गीय पिता छोड़ गये है। हम लोगों ने इसे उनकी पवित्र स्मृति-स्वरूप अभी तक सुरक्षित रखा है। मेरे पिता पुरानी कस्कुट की मूर्त्तियों का व्यापार करते थे। जिस समय किफायत से कोई मूर्ति मिल जाती थी, उस समय वे उसे खरीद लेते थे और किसी शिल्प के प्रेमी को यथोचित लाभ लेकर बेच दिया करते थे। मेरी माँ और मै—दोनों आजकल यही व्यवसाय करते है।"

सशा ने कागज़ के अन्दर लिपटी हुई उस चीज़ को निकाला और उसे बड़ी गम्भीरता के साथ उसने टेबिल पर रख दिया। वह पुराने काँसे का एक बहुत छोटा चिरागदान था। उसमे बहुत ऊँचे दर्जे की कारीगरी की गई थी। उसमें कुछ चित्रों का दिग्दर्शन कराया गया था। मूर्त्ति-तल पर दो स्त्रियों के चित्र बने हुए थे, जो माता इव की पोशाक पहिने हुए थीं। मूर्त्तियाँ चित्ताकर्षक तरीके से मुस्करा रही थीं। उनको देख कर यही विचार उत्पन्न होता था कि यदि उन्हें मोमबत्तियों को सम्हाल कर रखने के लिये मजबूर न होना पड़ता, तो वे एकदम मूर्त्ति-तल पर से कूद कर कमरे के अन्दर आमोद-प्रमोद का ऐसा दृश्य उत्पन्न कर देतीं, जिसे देख कर आप लज्जा से अपना सिर झुका लेते।

अपने उपहार का निरीक्षण करने के बाद डाक्टर ने अपने कान को खुजलाया और नाक को दबा कर उसे अस्पष्ट स्वर से बजाया।

"हाँ, इसमें तो सन्देह नहीं कि यह बहुत सुन्दर है।" उसने कहा, "परन्तु इसके सम्बन्ध मे मै अपने उद्‌गार किस प्रकार प्रकट करूँ? वह यह है—तुम शायद मेरे मतलब को समझ गये होंगे—अनुचित है—इसे आधी पोशाक तक नहीं पहिनाई गई है। इस बात को शैतान ही जानता है कि इसका—"

"मेरी समझ में नहीं आता कि आप इस प्रकार क्यों विचार कर रहे है?"

"क्यों, कोई भी कलाकार इससे अधिक अश्लीलता का निदर्शन नहीं

कर सकता था ! इस प्रकार की चीज़ को टेबिल पर रखना, मानो समूचे मकान को अपवित्र करना है !"

"आप का शिल्प के प्रति कैसा अनोखा विचार है, डाक्टर !" सशा ने कुपित स्वर में कहा—"ज़रा इसकी ओर बारीकी से देखिये। इसमें इतनी आकृष्ट सुन्दरता है कि इसे देखकर हृदय के अन्दर भक्ति के भाव उमड पड़ते है, आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। जिस समय आप इस प्रकार की सुन्दरता को देखेंगे, उस समय आप सभी सांसारिक वस्तुओं को भूल जावेंगे ! इसमें कितनी सुन्दरता है; कितना आकर्षण है !"

"मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह समझता हूँ, मेरे प्यारे बच्चे !" डाक्टर ने बात काट कर कहा—"परन्तु मै गृहस्थ आदमी हूँ, लड़के सदा मकान के अन्दर दौड़ा करते हैं, और स्त्रियाँ भी बहुधा मुझसे मिलने के यहाँ आया करती है—"

"इसमें तो कोई शक नहीं कि यदि समुदाय के दृष्टिकोण से इसे देखा जाय," सशा ने कहा, "तब तो निस्सन्देह रूप से कारीगरी का यह उत्कृष्ट नमूना बिलकुल निराला ही दिखलाई पड़ेगा। परन्तु डाक्टर, आपको सार्वजनिक दृष्टिकोण से ऊपर उठ जाना चाहिये। इसका सबसे ज़बरदस्त कारण यह है कि यदि आप इसे लेना अस्वीकार कर देंगे, तो आप मुझे और मेरी माँ को बहुत अधिक दुखी करेंगे। आप जानते ही हैं कि मैं अपनी माँ का इकलौता बेटा हूँ। आपने मेरे जीवन की रक्षा की है। हम लोगों के पास इस समय, जो सबसे अधिक बेश-कीमती चीज़ है, उसे हम आपको उपहार-स्वरूप अर्पण कर रहे हैं— मुझको इस बात का दुःख है कि मेरे पास इस चिरागदान का जोड़ा नहीं है।"

"धन्यवाद है तुम्हें, मेरे प्यारे बच्चे ! मैं तुम्हारा बहुत शुक्रगुज़ार हूँ—तुम मेरी ओर से अपनी माँ का अभिनंदन करना। परन्तु सचमुच

मैं तुम्हें अपने दिल की बात बतलाता हूँ। मेरे छोटे छोटे बच्चे इन कमरों में सदा दौड़ा करते हैं और स्त्रियाँ भी हमेशा मेरे पास इलाज कराने आती हैं। परन्तु खैर, इसे रहने दो। तुमको मेरी बात का विश्वास नहीं होता!"

"इसमें किसी तरह के विश्वास करने की मुझे आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।" सशा ने प्रसन्न होकर कहा—"चिरागदान को ठीक इस गुलदस्ते के पास रख दीजिये। इसका जोड़ा यदि होता, तो इसकी शोभा और अधिक बढ़ जाती। बड़े अफ़सोस की बात है। अच्छा, वन्दे, डाक्टर!"

सशा के चले जाने के बाद डाक्टर चिरागदान के सम्बन्ध में बहुत देर तक विचार करता रहा। वह अपने कान कुरेदकर विचारने लगा।

चिरागदान कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है, इसमें तो ज़रा भी शक नहीं है। इसको फेंक देना तो बहुत अनुचित होगा, परन्तु इसको यहाँ रखना भी तो असम्भव है! इस उलझन को सुलझाने का एक उपाय तो निकल आया है। इसे किसी मनुष्य को उपहार-स्वरूप दे देना बहुत ठीक होगा। विचारणीय बात यह है कि इसे देना किसको चाहिये?

इस प्रश्न पर बहुत अधिक समय तक विचार करने के बाद सहसा उसे अपने एक घनिष्ठ मित्र का स्मरण हो आया! वह वकील था और उसका नाम ऊखव था। वकील साहब ने उसका एक दीवानी मुक़द्दमे का काम किया था। इसी कारण वह उसका अत्यन्त ऋणी था।

'क्यों यह तो बहुत अच्छा विचार है,' डाक्टर ने निश्चय करते हुए मन ही मन कहा—'हम लोगों के घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध के कारण उसे मुझसे पैसा लेना अटपटा सा प्रतीत होता है। इसलिये मुझे उसको यह उपहार प्रदान करना बहुत ठीक होगा। मैं इस शैतानी के

उत्कृष्ट नमूने को स्वयं उसके पास ले जाऊँगा। उसकी अभी शादी भी नहीं हुई है और उसका स्वभाव भी बहुत चंचल है।'

एक क्षण का भी समय नष्ट किये बिना, डाक्टर ने अपनी पोशाक पहिनी, चिरागदान को उठाया और ऊखव से मिलने के लिये चल दिया।

"कहो, क्या हाल है दोस्त?" उसने वकील का अभिवादन करते हुए कहा। उसको कमरे के अन्दर पाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। "भाई, तुमने मेरी जो कुछ भी सेवाय की है, उस कृपा के लिये मैं आज तुम्हें धन्यवाद देने के लिये आया हूँ। तुम मुझसे रुपया लेना पसन्द नहीं करते, तो तुम्हें कम से कम मेरा एक उपहार अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा। भाई, यह शिल्प का एक उत्कृष्ट नमूना है। यह वास्तव में बहुमूल्य मणि है!"

चिरागदान को देखते ही वकील बहुत प्रसन्न हुआ।

"ओफ्, कितना सुन्दर है यह!" कह कर वह हँसने लगा। शैतान भी इससे अधिक अच्छी कारीगरी करने में सफलता प्राप्त न कर सकता। मनुष्य भी न जाने कैसे आविष्कार किया करता है! यह बहुत आश्चर्यजनक वस्तु है। इसे देख कर हृदय प्रफुल्लित हो उठता है। तुमको यह सुन्दर वस्तु कहाँ से मिली?"

चिरागदान की दिल भर कर प्रशंसा कर लेने के बाद वह दरवाज़े की ओर भयभीत-सा होकर कहने लगा—"मेरे भाई, दया कर के अपनी चीज़ को तुम वापस लेते जाओ। मैं उसे स्वीकार न करूँगा!"

"क्यों स्वीकार न करोगे?" डाक्टर ने घबरा कर पूछा।

"क्योंकि कभी-कभी मेरी माँ मुझसे मिलने के लिये यहाँ आया करती है और मवक्किल भी यहाँ सदा आया-जाया करते हैं। इसके अलावा मैं नहीं चाहता कि नौकर लोग—"

"नहीं, नहीं, तुम्हें मेरे उपहार को अस्वीकार न करना चाहिये।"

डाक्टर ने अपने हाथ हिलाये। "मैं इस सम्बन्ध में तुम्हारी कोई बात न सुनूँगा। क्योंकि यह शिल्प का एक कार्य है। ज़रा इसे देखो। कितनी भावुकता और आकर्षण इसमें भरा हुआ है।" ऐसा कह कर डाक्टर ऊखव के मकान से भाग गया। उसे इस अरुचिकर उपहार से छुड़ाने में बड़ी प्रसन्नता हुई। वह अपने घर लौट गया।

डाक्टर के चले जाने के बाद वकील ने चिरागदान को सब तरफ से ध्यानपूर्वक देखा। उसने अँगुलियों द्वारा उसका स्पर्श भी किया। इसके बाद वह इस बात का विचार करने लगा कि इस उपहार का क्या किया जाय?

'चीज़ तो वास्तव में बहुत सुन्दर है,' उसने सोचा—'इसको फेंक देना तो बहुत ही खराब होगा। परन्तु यह मकान के अन्दर रखने के योग्य चीज़ तो कदापि नहीं है। ऐसे मामलों में सबसे अधिक अच्छी बात तो यह हो सकती है कि इसे किसी को उपहार स्वरूप दे दिया जाय। मैं इसे आज शाम के वक्त हास्य के प्रसिद्ध लेखक शिशकन के पास ले जाऊँगा। वह धूर्त इस प्रकार की चीज़ों को बहुत पसन्द करता है। आज सौभाग्यवश उसका लिखा हुआ एक नाटक खेला जाने वाला है।'

ऊखव बात का धनी था। उसी दिन शाम के समय उसने चिरागदान को बड़ी सावधानी के साथ कागज़ में लपेट लिया। इसके अतिरिक्त उसने अपने साथ में बहुत से फूल भी ले लिये। वह चिरागदान और फूलों को हास्य के प्रसिद्ध लेखक को भेंट-स्वरूप प्रदान कर आया। शाम को बहुत देर तक लेखक के वस्त्रागार में मनुष्यों की भीड़ जमा रही। सभी लोग इस उपहार की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे।

नाटक समाप्त हो जाने के बाद लेखक ने अपने कन्धे हिलाये। अनेक प्रकार की नाराज़गी करने के पश्चात् वह कहने लगा—"अब मैं इस चीज़ का क्या करूँ? मैं एक गृहस्थ सज्जन के साथ रहता हूँ!

नाटक की महिला पात्रियाँ मुझसे मिलने के लिये आया करती है। यह तस्वीर तो है ही नहीं—इसे टेबिल के ड्राअर के अन्दर छिपा कर भी नहीं रखा जा सकता !"

"इसके सम्बन्ध में आपको क्या करना चाहिये ? क्या मै आपको अपनी सलाह दूं ?" बाल सँवारने वाले ने उससे पूछा। इस समय वह इसके नकली बालों की टोपी को उतार रहा था—"सिमरनव नामक एक वृद्धा स्त्री है। उसको सब लोग जानते हैं। वह प्राचीन प्रतिमाओं का व्यवसाय करती है। मै उसके पास जाकर इसे बेच आऊँगा।"

दो दिन के बाद डाक्टर कोशेलकव अपने अध्ययनागार में बैठा हुआ था। वह अपने मस्तक पर अँगुली को रख कर गम्भीरतापूर्वक चित्र के रंग के सम्बन्ध में विचार कर रहा था। सहसा दरवाज़ा खुला और सशा सिमरनव अन्दर आया। वह मुस्कराया। उसके चेहरे पर आनन्द के भाव स्पष्ट झलक रहे थे। वह अपने हाथ में किसी चीज़ को एक अख़बार में लपेट कर लिये हुए खड़ा था।

"डाक्टर !" वह हाँफता हुआ बोला—"ज़रा आप मेरे आनन्द का अन्दाज़ लगाइये ! आपके सौभाग्य से हमको आपके चिरागदान का जोड़ा मिल गया ! इसको पाकर माँ बहुत प्रसन्न हुई। मैं अपनी माँ का इकलौता बेटा हूँ और आपने मेरा जीवन बचाया है।"

सशा ने उपकार की भावना से काँप कर डाक्टर की टेबिल पर वह चिरागदान रख दिया। कुछ कहने की गरज़ से डाक्टर ने अपना मुँह खोला। परन्तु वह एक शब्द भी न बोल सका, क्योंकि उसकी जीभ बिलकुल शिथिल पड़ गई थी।

❊ समाप्त ❊